:: श्री ::

ज्योतिर्विद् काशिनाथविरचित

शीघ्रबोध

भाषा टीका सहित

टीकाकार

पं० खूबचन्द शर्मा गौड़

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक

तेज कुमार बुक डिपो (प्रा०) लि०

उत्तराधिकारी -

नवल किशोर बुक डिपो, लखनऊ

श्रीमती स्मिता पटवर्धन
प्रबन्ध संचालक
द्वारा राजा राम कुमार प्रेस, लखनऊ में मुद्रित।
सन् 2004 ई०

पंचम बार 1000] [मूल्य 22/-

॥ श्रीः ॥

विषयानुक्रमणिका

[वि]षय	पृष्ठ
प्रथम प्रकरण	
ालाचरण ...	१
ाहिक नक्षत्र ...	१
ाहिक मास ...	२
वाह में त्याज्य दोष ...	२
थियों की नन्दादि संज्ञा ...	३
रवेला ...	३
वाह में त्याज्य भद्रा आदि दोष ...	४
ा ...	४
ा का निवास ...	५
ा का फल ...	५
ा के मुख का फल ...	५
ा का परिहार ...	६
ा तिथि ...	६
ान्तादि में वर्जित काल	७
ान्तादि का फल ...	७

विषय	पृष्ठ
कुलिक योग ...	७
वर्ग ...	८
वर्गविचार ...	९
गणों का फल ...	१०
भकूटविचार ...	११
वर्णविचार ...	११
वर्णों का फल ...	१२
नक्षत्रों की पूर्वभागादि संज्ञा	१२
पूर्वभागादिकों का फल ...	१२
वश्यों का फल ...	१३
राशियों की चतुष्पदादि संज्ञा	१३
योनिज्ञान ...	१३
वैरयोनि ...	१४
भकूट फल ...	१५
विवाह में ग्रहों के बल का विचार ...	१६

विषय	पृष्ठ
बर के सूर्य का विचार ...	१६
कन्या के बृहस्पति का विचार ...	१७
रवि-गुरु विचार चक्र ...	१७
चन्द्रविचार ...	१८
कन्या की गौरी इत्यादि संज्ञा ...	१९
गौरी आदि के दान में ग्रहों के बल का विचार ...	१९
अन्य मत ...	२०
ग्रहों का बलाबल फल ...	२०
दस वर्ष से अधिक आयु की कन्या का विवाह न करने पर दोष ...	२०
रजस्वला के देखने का दोष	२१
नाडीविचार ...	२१
विप्रादि वर्णों को नाडी आदि का दोष ...	२२
नाडी दोष का फल ...	२३
नाडी दोष का परिहार ...	२३
विवाह के दश दोष	२४
लत्तादोष का विचार ...	२४
लत्त का फल ...	२५
पात का विचार ...	२५

विषय	पृष्ठ
पातों के नाम ...	२६
पात का फल ...	२६
देशभेद से पात का निषिद्धत्व ...	२६
युतिदोष का विचार ...	२७
युतिदोष का फल ...	२७
युतिदोष का परिहार ...	२७
विवाह में पंचशलाका चक्र	२७
वेध फल ...	२९
वेध के नक्षत्र ...	२९
वेध-फल ...	३०
युतिदोष का विचार ...	३०
जामित्रदोष का विचार ...	३१
बुधपंचक (बाण) विचार	३२
वारसंबन्ध से बाण का विचार ...	३२
दिन-रात में त्यागने योग्य बाणदोष ...	३३
विद्युदादि दोष (उपग्रह)	३३
उपग्रह का फल ...	३३
एकार्गल योग ...	३४
क्रान्तिसाम्य विचार ...	३६
क्रान्तिसाम्य का फल ...	३७
कण्टकादि दोषों का विचार	३७
कण्टक आदि का फल ...	३८

विषय	पृष्ठ
जन्ममास, जन्मनक्षत्र, जन्मदिन और ज्येष्ठ मास का विचार ...	३८
सिंहस्थ गुरु का विचार ...	३९
ग्रहों का विश्वाबल ...	३९
लग्नशुद्धि ...	४०
विवाह में शुभ लग्न ...	४१
देशभेद से दस दोषों का परिहार ...	४१
नवमांशविचार ...	४१
लग्न नवांश विचार ...	४३
होलाष्टक विचार ...	४३
दिवान्धादि लग्न ...	४३
दिवान्धादि लग्नों का फल	४४
गोधूलि का विचार ...	४४
त्याज्य गोधूलि ...	४५
गोधूलि का समय ...	४५
गोधूलिनाशक योग ...	४५
लग्नशुद्धि विचार ...	४६
दिन में इष्टकाल का विचार	४६
रात्रि में इष्टकाल का विचार	४७
लग्नशुद्धि का परिहार ...	४८
विनाडी चक्र	४८
सर्पाकार विनाडी चक्र ...	४९

विषय	पृष्ठ
योगों की वर्ज्य घटी ...	४९
वर्ज्य योगों का फल ...	५०
पट्टचक्रविचार ...	५०

द्वितीय प्रकरण

विषय	पृष्ठ
द्विरागमनमुहूर्त ...	५३
पुसवन तथा सीमन्तोन्नयन-मुहूर्त ...	५४
गर्भाधानमुहूर्त ...	५५
नामकरणमुहूर्त ...	५५
बहिर्निस्कासनमुहूर्त ...	५३
सूतिकास्नानमुहूर्त ...	५६
स्त्रीनवाम्बरधारमुहूर्त ...	५७
प्रसूतिकास्नान और जल-पूजनमुहूर्त ...	५७
नवान्नभक्षणमुहूर्त ...	५८
अन्नप्राशनमुहूर्त ...	५८
चूडाकर्ममुहूर्त ...	५९
विद्यारम्भमुहूर्त ...	५९
यज्ञोपवीतमुहूर्त ...	६०
ग्रहों की शुभाशुभ संज्ञा ...	६१
कर्णभेदमुहूर्त ...	६१
वास्तुकर्ममुहूर्त ...	६२
सुरप्रतिष्ठामुहूर्त ...	६३

विषय	पृष्ठ
गृहप्रवेशमुहूर्त ...	६४
हलप्रवाहमुहूर्त ...	६४
यात्रामुहूर्त ...	६५
दिशाशूल ज्ञान ...	६६
सर्वदिग्गमन के नक्षत्र ...	६६
योगिनीविचार ...	६७
योगिनीवासफल ...	६७
यात्रा में तिथिफल ...	६८
चतुर्घटिकाराहुविचार ...	६९
चन्द्रवासज्ञान ...	७०
चन्द्रफल ...	७०
रविवास ...	७१
कुलिकमुहूर्त ...	७१
कालहोरा ...	७१
अंकमुहूर्त ...	७२
चन्द्र-रविस्वर का फल ...	७३
सम्मुखादि शुक्र का फल ...	७३
क्रय-विक्रयमुहूर्त ...	७४
पंचकों में त्याज्य कर्म ...	७४
तैलाभ्यंग ...	७४
तैलाभ्यंग का परिहार ...	७५
वधूप्रवेशमुहूर्त ...	७५
रोगीस्नानमुहूर्त ...	७६
आनन्दादियोग ...	७६

विषय	पृष्ठ
अमृतसिद्धियोग ...	७९
यमघण्टयोग ...	७९
मृत्युयोग ...	८०
क्रकचयोग ...	८१
अन्धाक्षादिसंज्ञा ...	८१
दक्षिणादिचारी नक्षत्र ...	८२
वत्सचक्र ...	८४
नक्षत्रों की ताराओं की संख्या	८४
प्रश्नलग्न से दोषज्ञान ...	८७
नक्षत्र, तिथि और वार से उत्पन्न शुभाशुभ योग ...	८९
नक्षत्रों की चर-चलादि संज्ञा	९४
शनिचक्र ...	९५
देश-विशेष में शनिफल ...	९७
महीने में पाँच रविवार आदि फा फल ...	९८
अभिजिमुहूर्त का ज्ञान ...	१००
फाल्गुन आदि महीनों में शुक्रउदय होने का फल	१०१
होलिका वायु-परीक्षा ...	१०१
वृष्टि के गर्भ का लक्षण ...	१०२
आपाढ़पूर्णिमा के नक्षत्रों का शुभाशुभ फल ...	१०३

विषय	पृष्ठ
ज्येष्ठकृष्ण की परेवा के वारों का फल ...	१०३
पौषसंक्रान्ति का फल ...	१०४
मीन संक्रान्ति का फल ...	१०५
संक्रान्ति समय में जन्म-नक्षत्र का विचार ...	१०६
रोहिणीचक्र ...	१०७
नरचक्र ...	१०९
ग्रामचक्र ...	११०
मूलवृक्षचक्र ...	१११
शुक्रान्ध में सम्मुख दक्षिण का परिहार ...	११२
शुक्र की बाल्य और वृद्धावस्था ...	११३
चन्द्रमा का शुभाशुभत्व ...	११३
ताराओं का शुभाशुभत्व और परिहार ...	११३
ताराविचार ...	११४
अन्य ग्रहों का शुभाशुभत्व ...	११४
क्षौरमुहूर्त ...	११५
राज्याभिषेक ...	११६
तिर्यङ्मुखसंज्ञक नक्षत्र और उनमें कृत्यकर्म ...	११७

विषय	पृष्ठ
अधोमुखसंज्ञक नक्षत्र और उनमें कृत्यकर्म ...	११७
ऊर्ध्वमुखसंज्ञक नक्षत्र और उनमें कृत्यकर्म ...	११८
भैषज्यमुहूर्त ...	११८
गौ आदि पशुओं के बेचने का मुहूर्त ...	११९
पशुग्रहणमुहूर्त ...	११९
पशु-क्रय-विक्रय ...	१२०
तिथिगण्डान्त ...	१२०
नक्षत्रगण्डान्त ...	१२१
लग्न गण्डान्त ...	१२१
गण्डान्त का फल ...	१२१
संवर्तयोग ...	१२२
सिद्धियोग ...	१२२
विष्कुम्भादि २७ योग ...	१२३
बवादि ११ करण ...	१२३
नक्षत्रदेवता ...	१२५

तृतीय प्रकरण

विषय	पृष्ठ
प्रश्नफल ...	१२८
लग्नमान ...	१३०
ग्रहों के दान ...	१३०
गुरुचार ...	१३२

विषय	पृष्ठ
संक्रान्ति में वर्षा का फल ...	१३३
वायु से वृष्टि का ज्ञान ...	१३४
वायुपरीक्षा ...	१३५
ग्रहविचार ...	१३९
चतुर्थ प्रकरण	
होडाचक्र ...	१४८
लघ्वङ्कराशियाँ ...	१४९
द्वादश भाव ...	१४९
द्वादश राशियाँ ...	१५०
ग्रहों की दृष्टि ...	१५०
दिनमान का आनयन ...	१५२
तेरह दिन के पक्ष का फल ...	१५२
आहुति का विचार ...	१५२
अग्निवास का ज्ञान ...	१५३
साठ संवत्सरों के नाम ...	१५४
राशियों के स्वामी ...	१५६
नक्षत्रानयन ...	१५७
अग्रिमवर्ष की संक्रान्ति के वारादि निकालना ...	१५७

विषय	पृष्ठ
शुक्र उदय की दिन संख्या ...	१५७
नक्षत्रप्रवेश से वर्षाज्ञान ...	१५८
अन्य वृष्टियोग ...	१५९
गृहद्वार का ज्ञान ...	१६०
ग्रहणद्वय फल ...	१६१
राशिपरत्व से देशविशेष में फल ...	१६१
परिवेश का फल ...	१६४
दिग्दाह-फल ...	१६५
ग्रहयुद्ध फल ...	१६५
नक्षत्रगत केतु के उदय का फल ...	१६५
राशियों की निशाबलादि संज्ञा ...	१६८
प्रश्नाङ्कफल ...	१६९
अतिचार और वक्र ग्रह का फल ...	१६९
दीक्षाग्रहण का समय ...	१६९
ग्रहों के राशिभोग की अवधि ...	१७०
चूल्हीचक्र का विचार ...	१७१

—:(०):—

* श्रीगणेशाय नमः *

शीघ्रबोध

भाषाटीकासहित

पहला प्रकरण

मंगलाचरण

भासयन्तं जगद्भासा नत्वा भास्वन्तमव्ययम् ।
क्रियते काशिनाथेन शीघ्रबोधाय संग्रहः ॥ १ ॥

अपने तेज से संसार को प्रकाशित करनेवाले अविनाशी सूर्य भगवान् को नमस्कार करके मैं काशीनाथ शीघ्रबोध (जल्दी ज्ञान) होने के लिए (शीघ्रबोध नामक ग्रन्थ) संग्रह करता हूँ ।

वैवाहिक नक्षत्र

रोहिण्युत्तररेवत्यो मूलं स्वाती मृगो मघा ।
अनुराधा च हस्तश्च विवाहे मङ्गलप्रदाः ॥ १ ॥

रोहिणी, तीनों उत्तरा, रेवती, मूल, स्वाती, मृगशिरा, मघा, अनुराधा और हस्त ये ११ नक्षत्र विवाह में शुभ हैं ।

वैवाहिक मास

माघे धनवती कन्या फाल्गुने सुभगा भवेत् ।
वैशाखे च तथा ज्येष्ठे पत्युरत्यन्तवल्लभा ॥ ३ ॥
आषाढे कुलवृद्धिः स्यादन्ये मासाश्च वर्जिताः ।
मार्गशीषमपीच्छन्ति विवाहे केऽपि कोविदाः ॥४॥

माघ में विवाह करने से कन्या धनवती, फाल्गुन में विवाह करने से सौभाग्यवती, वैशाख और ज्येष्ठ में विवाह करने से पति को अत्यन्त प्यारी होती है। आषाढ़ में विवाह करने से कुल की वृद्धि होती है। अन्य शेष महीने विवाह में वर्जित हैं। कुछ विद्वानों के मत से मार्गशीर्ष में भी विवाह करना शुभ है।

विवाह में त्याज्य दोष

अमावस्या च रिक्ता च वारवेला च जन्मभम् ।
गण्डान्तं क्रूरवाराश्च वर्जनीयाः प्रयत्नतः ॥ ५ ॥

अमावस्या और रिक्ता (४।९।१४) तिथि तथा वारवेला (आगे कहेंगे), जन्म-नक्षत्र, गण्डान्त[1], और क्रूरवार[2], इनको विवाह में यत्नपूर्वक त्याग देना चाहिए।

१–लग्नगण्डान्त, तिथिगण्डान्त और नक्षत्रगण्डान्त ।
२–रवि, मंगल और शनि ।

तिथियों की नन्दादि संज्ञा

नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णाश्च तिथयः क्रमात् ।
वारत्रयं समावर्त्य तिथयः प्रतिपन्मुखाः ॥ ६ ॥

प्रतिपदा आदि तिथियों की तीन आवृत्ति से, क्रम से नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता और पूर्णा संज्ञा है। अर्थात १।६।११ की नन्दा, २।७।१२ की भद्रा, ३।८।१३ की जया, ४।९।१४ की रिक्ता और ५।१०।१५।३० की पूर्णा संज्ञा है।

वारवेला

तुर्योऽर्के सप्तमश्चन्द्रे द्वितीयो भूमिनन्दने ।
चन्द्रपुत्रे पञ्चमश्च देवाचार्ये तथाष्टमः ॥ ७ ॥
दैत्यपूज्ये तृतीयश्च शनौ षष्ठश्च निन्दितः ।
प्रहरार्धः शुभे कार्ये वारवेला च कथ्यते ॥ ८ ॥

रविवार को चौथा, सोमवार को सातवाँ, मंगलवार को दूसरा, बुधवार को पाँचवाँ, गुरुवार को आठवाँ, शुक्रवार को तीसरा और शनिवार को छठा प्रहरार्ध[1] वारवेला कहाता है। यह शुभ कार्य में वर्जित है।

वारवेला चक्र

र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वार
४	७	२	५	८	३	६	प्रहरार्द्ध

१–दिन के आठ भाग में से एक भाग ।

विवाह में त्याज्य भद्रा आदि दोष

भद्रा क्रकचयोगं च तिथ्यन्तं यमघण्टकम् ।
दग्धातिथिं च भान्तं च कुलिकं च विवर्जयेत् ॥९॥

भद्रा, क्रकच योग, प्रत्येक तिथि की अन्त की २ घड़ियाँ, यमघण्ट योग, दग्धा तिथि, नक्षत्रों के अन्त की तीन-तीन घड़ियाँ, और कुलिक योग, इन सबको विवाह में त्याग दे।

भद्रा

दशम्यां च तृतीयायां कृष्णपक्षे परे दले ।
सप्तम्यां च चतुर्दश्यां विष्टिः पूर्वदले स्मृता ॥ १० ॥
एकादश्यां चतुर्थ्यां च शुक्लपक्षे परे दले ।
अष्टम्यां पूर्णिमायां च विष्टिः पूर्वदले स्मृता ॥११॥

कृष्णपक्ष में, दशमी और तृतीया का परार्ध तथा सप्तमी और चतुर्दशी का पूर्वार्ध भद्रा होती है। शुक्लपक्ष में, एकादशी और चतुर्थी का परार्ध तथा अष्टमी और पूर्णमासी का पूर्वार्ध भद्रा होती है।

भद्रा चक्र

पक्ष	तिथि	समय
कृष्णपक्ष	तृतीया और दशमी	परार्ध में
	सप्तमी और चतुर्दशी	पूर्वार्ध में
शुक्लपक्ष	चतुर्थी और एकादशी	परार्ध में
	अष्टमी और पूर्णमासी	पूर्वार्ध में

भद्रा का निवास

मेषमकरवृषकर्कटस्वर्गे
कन्यामिथुनतुलाधनुनागे ।
कुम्भमीनअलिकेसरिमृत्यौ
विचरति भद्रा त्रिभुवनमध्ये ॥ १२ ॥

मेष, मकर, वृष और कर्क के चन्द्रमा में भद्रा स्वर्गलोक में; कन्या, मिथुन, तुला और धनु के चन्द्रमा में नागलोक (पाताल) में तथा कुंभ, मीन, वृश्चिक और सिंह के चन्द्रमा में भद्रा मृत्युलोक में वास करती है।

भद्रा का फल

स्वर्गे भद्रा शुभं कार्यं पाताले च धनागमम् ।
मृत्युलोके यदा विष्टिः सर्वकार्यविनाशिनी ॥ १३ ॥

स्वर्ग में भद्रा हो तो सब कार्य शुभ होते हैं, पाताल में हो तो धन का लाभ होता है और मृत्युलोक में भद्रा हो तो सब कार्य नष्ट हो जाते हैं।

भद्रा के मुख का फल

सम्मुखे मृत्युलोकस्था पाताले च अधोमुखी ।
ऊर्ध्वस्था स्वर्गगा भद्रा सम्मुखे मरणप्रदा ॥ १४ ॥

मृत्युलोक में भद्रा हो तो सम्मुख, पाताल में हो तो अधोमुख और स्वर्ग में हो तो ऊर्ध्वमुख होती हैं। सम्मुख भद्रा मृत्यु देनेवाली होती है, इसलिए मृत्युलोक में भद्रा हो तो शुभ काम न करे।

भद्रा का परिहार

दिवा भद्रा यदा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिने ।
तदा विष्टिकृतो दोषो न भवेत्सर्वसौख्यदा ॥ १५ ॥

पूर्वार्ध की भद्रा दिनसंज्ञक और परार्ध की भद्रा रात्रि-संज्ञक है। जब दिनसंज्ञक भद्रा रात्रि में और रात्रिसंज्ञक भद्रा दिन में होती है तब भद्रा का दोष नहीं होता। वह भद्रा सब सुख देनेवाली होती है। जैसे कृष्णपक्ष की सप्तमी और चतुर्दशी में भद्रा पूर्वार्ध में होती है वह रात्रि में हो तो शुभ है। और तृतीया तथा दशमी में परार्ध में होती है वह दिन में हो तो शुभ है।

दग्धा तिथि

मीने चापे द्वितीया च चतुर्थी वृषकुम्भयोः ।
मेषकर्कटयोः षष्ठी कन्यायुग्मेषु चाष्टमी ॥ १६ ॥
दशमी वृश्चिके सिंहे द्वादशी मकरे तुले ।
एतास्तु तिथयो दग्धाः शुभे कर्मणि वर्जिताः ॥१७॥

मीन और धनु के सूर्य में द्वितीया, वृष और कुम्भ के सूर्य में चतुर्थी, मेष और कर्क के सूर्य में षष्ठी, कन्या और मिथुन के सूर्य में अष्टमी, वृश्चिक और सिंह के सूर्य में दशमी, तथा मकर और तुला के सूर्य में द्वादशी ये तिथियाँ दग्धा-संज्ञक हैं। ये शुभ कर्म में त्याज्य हैं।

मासान्तादि में वर्जित काल

मासान्ते दिनमेकं तु तिथ्यन्ते घटिकाद्वयम् ।
घटिकानां त्रयं भान्ते विवाहे परिवर्जयेत् ॥ १८ ॥

मास (सौरमास) के अन्त में एक दिन, तिथि के अन्त में दो घड़ी और नक्षत्र के अन्त में तीन घड़ी विवाह में वर्जित हैं।

मासान्तादि का फल

मासान्ते म्रियते कन्या तिथ्यन्ते स्यादपुत्रिणी ।
नक्षत्रान्ते च वैधव्यं विष्टौ मृत्युर्द्वयोर्भवेत् ॥ १९ ॥

मासान्त में विवाह करने से कन्या की मृत्यु होती है। तिथ्यन्त में विवाह करने से कन्या पुत्ररहित रहती है। नक्षत्रान्त में विवाह करने से कन्या विधवा होती है तथा भद्रा में विवाह होने से वर और कन्या दोनों की मृत्यु होती है।

कुलिकयोग

सूर्ये च सप्तमी सोमे षष्ठी भौमे च पञ्चमी ।
बुधे चतुर्थी देवेज्ये तृतीया भृगुनन्दने ॥ २० ॥
द्वितीया वर्जनीया च प्रतिपच्च शनैश्चरे ।
कुलिकाख्योहियोगोऽयंविवाहादौनशस्यते ॥ २१ ॥

रविवार को सप्तमी, सोमवार को षष्ठी, मङ्गलबार को पंचमी, बुधवार को चतुर्थी, बृहस्पतिवार को तृतीया, शुक्रवार को द्वितीया और शनिवार को प्रतिपदा हो तो कुलिक योग होता है। यह योग विवाह आदि शुभ कार्यों में शुभ नहीं है।

कुलिकयोग चक्र

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वार
७	६	५	४	३	२	१	तिथि

वर्ग

अवर्गो गरुडो ज्ञेयो बिडालः स्यात्कवर्गकः।
चवर्गः सिंहनामा स्याट्टवर्गः कुक्कुरःस्मृतः ॥२२॥
सर्पाख्यः स्यात्तवर्गोऽपि पवर्गो मूषकः स्मृतः।
यवर्गो मृगनामा स्यात्तथा मेषः शवर्गकः ॥ २३ ॥

अवर्ग की गरुड़ संज्ञा, कवर्ग की मार्जार (बिलार) संज्ञा, चवर्ग की सिंह संज्ञा, टवर्ग की कुत्ता संज्ञा, तवर्ग की साँप संज्ञा, पवर्ग की मूषक संज्ञा, यवर्ग की मृग और शवर्ग की मेष (मेढ़ा) संज्ञा है।

वर्ग चक्र

अकारादि वर्ण	वर्ग
अ, इ, उ, ए	गरुड़
क, ख, ग, घ, ङ	मार्जार
च, छ, ज, झ ञ	सिंह
ट, ठ, ड, ढ, ण	कुत्ता
त, थ, द, ध, न	सर्प
प, फ, ब, भ, म	मूषक
य, र, ल, व	मृग
श, ष, स, ह	मेढ़ा

वर्गविचार

स्ववर्गात् पञ्चमः शत्रुश्चतुर्थो मित्रसंज्ञकः।
उदासीनस्तृतीयश्च वर्गभेदस्त्रिधोच्यते ॥ २४ ॥

अपने वर्ग से पाँचवाँ वर्ग शत्रु, चौथा वर्ग मित्र और तीसरा वर्ग उदासीन होता है। इस प्रकार वर्ग के तीन भेद हैं।

अश्विनीमृगरेवत्यो हस्तः पुष्यः पुनर्वसुः ।
अनुराधा श्रुतिः स्वाती कथ्यते देवतागणः ॥२५॥
तिस्रःपूर्वाश्चोत्तराश्च तिस्रोऽप्यार्द्रा च रोहिणी ।
भरणी च मनुष्याख्यो गणश्च कथितो बुधैः ॥२६॥
कृत्तिका च मघाऽश्लेषा विशाखा शततारकाः ।
चित्रा ज्येष्ठा धनिष्ठा च मूलं रक्षोगणः स्मृतः ॥२७॥

अश्विनी, मृगशिरा, रेवती, हस्त, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, श्रवण और स्वाती नक्षत्र देवतागण हैं। तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, आर्द्रा, रोहिणी और भरणी मनुष्यगण हैं। कृत्तिका, मघा, अश्लेषा, विशाखा, शतभिषा, चित्रा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा और मूल राक्षसगण हैं।

गणों का फल

स्वगणे परमा प्रीतिर्मध्यमा देवमर्त्ययोः ।
मर्त्यराक्षसयोर्मृत्युः कलहो देवरक्षसोः ॥ २८ ॥

वर-कन्या एक ही गण के हों तो परस्पर बहुत प्रीति होती है। एक का देवता और दूसरे का मनुष्यगण हो तो साधारण प्रीति होती है। एक का मनुष्यगण और दूसरे का राक्षसगण हो तो मृत्यु होती है। एक देवगण और दूसरा राक्षसगण हो तो कलह होती है।

भकूट विचार

षष्ठाष्टके मृतिर्नन्दनवमे त्वनपत्यता ।
नैःस्वं द्विर्द्वादशेऽन्येषु दम्पत्योः प्रीतिरुत्तमा ॥२९॥

वर-कन्या की जन्मराशि एक-दूसरे की जन्मराशि से छठी और आठवीं हो तो दोनों की मृत्यु होती है। पाँचवीं और नवीं हो तो सन्तान की हानि, दूसरी और बारहवीं हो तो निर्धनता, इनसे अन्यत्र दोनों में परस्पर प्रेम होता है।

वर्ण विचार

मीनालिकर्कटा विप्राः क्षत्री मेषो हरिर्धनुः ।
शूद्रोयुग्मं तुलाकुम्भौ वैश्यः कन्या वृषो मृगः ॥३०॥

मीन, वृश्चिक और कर्क ब्राह्मण वर्ण; मेष, सिंह और धनु क्षत्रिय वर्ण; मिथुन, तुला और कुम्भ शूद्र वर्ण; तथा कन्या, वृष और मकर वैश्य वर्ण हैं।

वर्णों का फल

नोत्तमामुद्वहेत्कन्यां ब्राह्मणीं च विशेषतः ।
म्रियते हीनवर्णश्च ब्रह्मणा रक्षितो यदि ॥ ३१ ॥

उत्तमवर्ण की कन्या के साथ विवाह न करे, विशेषतया ब्राह्मण वर्ण की कन्या के साथ अन्य वर्ण का वर विवाह न करे। यदि ऐसा विवाह करता है तो हीन वर्ण वर की मृत्यु होती है। चाहे ब्रह्मा से भी रक्षित क्यों न हो।

विप्रवर्णा च या नारी शूद्रवर्णश्च यः पतिः ।
ध्रुवं भवति वैधव्यं शुक्रस्य दुहिता यदि ॥ ३२ ॥

ब्राह्मण वर्ण की कन्या और शूद्र वर्ण का पति हो तो वह निश्चय विधवा होती है । चाहे शुक्राचार्य की ही कन्या क्यों न हो ।

नक्षत्रों की पूर्वभागादि-संज्ञा

पौष्णादिकं षट्कमुशन्तिपूर्व-
मार्द्रादिकं द्वादश मध्यभागम् ।
पौरन्दराद्यं नवकं च चक्रः
परं च भागं गणका विदग्धाः ॥ ३३ ॥

विद्वान् ज्योतिषियों ने रेवती से मृगशिरा तक ६ नक्षत्र पूर्वभाग, आर्द्रा से अनुराधा तक १२ नक्षत्र मध्यभाग, और ज्येष्ठा से उत्तराभाद्र तक ९ नक्षत्र परभाग कहे हैं ।

पूर्वभागादिकों का फल

पूर्वभागे पतिः श्रेष्ठो मध्यभागे च कन्यका ।
परभागे च नक्षत्रे द्वयोः प्रीतिर्महीयसी ॥ ३४ ॥

वर का जन्म नक्षत्र पूर्व भाग के नक्षत्रों में हो तो वर श्रेष्ठ होता है और कन्या का जन्म नक्षत्र मध्य भाग के नक्षत्रों में हो तो कन्या श्रेष्ठ होती है तथा परभाग के नक्षत्रों में दोनों के जन्म नक्षत्र हों तो दोनों में बहुत अधिक प्रीति होती है ।

वश्यों का फल

सिंहं विना वशाः सर्वे द्विपदानां चतुष्पदाः ।
भक्ष्या जलचरास्तेषां भयस्थाने सरीसृपाः ॥ ३५ ॥

सिंह को छोड़कर सब चतुष्पद राशियाँ द्विपद (मनुष्य) राशि के वश में हैं । जलचर तो उनके भक्ष्य ही हैं । किन्तु सर्पसंज्ञक (वृश्चिक) राशि भयकारक है ।

राशियों की चतुष्पदादि संज्ञा

मकरस्य पूर्वभागो मेषसिंहधनुर्वृषाः ।
चतुष्पदा कीटसंज्ञाः कर्कः सर्पश्च वृश्चिकः ॥ ३६ ॥
तुला च मिथुनं कन्या पूर्वार्द्धं धनुषश्च यत् ।
द्विपदास्तुमृगार्द्धस्यात्कुम्भमीनौ जलाश्रितौ ॥३७॥

मकर राशि के पूर्वार्ध तथा मेष, सिंह, धनु और वृष राशि की चतुष्पद संज्ञा है । कर्क की कीट संज्ञा, वृश्चिक की सर्प संज्ञा और धनु के पूर्वार्ध तथा तुला, मिथुन और कन्या की द्विपद संज्ञा है । मकर के उत्तरार्ध, तथा कुम्भ और मीन की जलचर संज्ञा है ।

योनिज्ञान

अश्विनी वारुणश्चाश्वो रेवती भरणी गजः ।
पुष्यश्च कृत्तिका छागो नागश्च रोहिणी मृगः ॥३८॥

आर्द्रा मूलमपि श्वा च मूषकः फाल्गुनी मघा ।
मार्जारोऽदितिरश्लेषा गोजातिरुत्तराद्वयम् ॥ ३६ ॥
महिषौ स्वातिहस्तौ च मृगो ज्येष्ठानुराधिका ।
व्याघ्रश्चित्रा विशाखा च श्रुत्याषाढौ च मर्कटौ ॥४०॥
वसुभाद्रपदौ सिंहो नकुलोऽभिजिद्द्विश्वयोः ।
एतेषां कथितं भानां वैरमत्र विचार्यताम् ॥ ४१ ॥

अश्विनी और शतभिष अश्वयोनि, रेवती और भरणी गजयोनि, पुष्य और कृत्तिका छागयोनि, रोहिणी और मृगशिरा नागयोनि, आर्द्रा और मूल श्वानयोनि, पूर्वाफाल्गुनी और मघा मूषकयोनि, पुनर्वसु और अश्लेषा मार्जारयोनि, उत्तराफाल्गुनी और उत्तराभाद्रपद गौयोनि, स्वाती और हस्त महिषयोनि, ज्येष्ठा और अनुराधा मृगयोनि, चित्रा और विशाखा व्याघ्रयोनि, श्रवण और पूर्वाषाढ़ मर्कट (वानर) योनि, धनिष्ठा और पूर्वाभाद्रपद सिंहयोनि तथा अभिजित् और उत्तराषाढ़ नकुलयोनि हैं। इनमें परस्पर वैर का विचार कर लेना चाहिए ।

वैरयोनि

गोव्याघ्रं गजसिंहमश्वमहिषं श्वैणं च बभ्रूरगं
वैरं वानरमेषकं च सुमहत्तद्द्विडालोन्दुरम् ।
लोकानां व्यवहारतो निगदितं ज्ञात्वा प्रयत्नादिदं
दम्पत्योर्नृपभृत्ययोरपि सदा वर्ज्यं शुभस्यार्थिभिः

गौ और व्याघ्र का वैर, हाथी-सिंह का वैर, अश्व-महिष का वैर, कुत्ता-हिरण का वैर, नकुल-सर्प का वैर, बन्दर-मेढ़ा का वैर तथा बिलार और मूषक का वैर होता है। इनको शुभार्थी मनुष्य वर-कन्या के विवाह में, स्वामी-सेवक के संबन्ध में, तथा अन्य लौकिक व्यवहार में यत्न से त्याग दें ।

योनि चक्र

अश्व	गज	छाग	नाग	श्वान	मूषक	मार्जार	योनि
महिप	सिंह	वानर	नकुल	मृग	मार्जार	मूपक	वैरयोनि
अश्वि. श.	रे. भ.	पुष्य कृ.	रो. मृ.	मू. आ.	पू. फा. मघा	पुन. अश्ले.	नक्षत्र
गौ.	महिष	हिरण	व्याघ्र	वानर	सिंह	नकुल	योनि
व्याघ्र	अश्व	श्वान	गौ	छाग	गज	सर्प	वैरयोनि
उ. भा. ह. फा.	स्वा. ह.	ज्ये. अनु.	चि. वि.	पू. षा. श्र,	ध. पू. षा.	अभि. उ. षा.	नक्षत्र

भकूट फल

मरणं पितृमात्रोश्च संग्राह्यं नवपंचकम् ।
वरस्य पंचमे कन्या कन्याया नवमे वरः ॥ ४३ ॥
एतत्त्रिकोणकं ग्राह्यं पुत्रपौत्रसुखावहम् ।
षडष्टके भवेन्मृत्युर्यत्नं तस्य विचारयेत् ॥ ४४ ॥

पुरुष की राशि से कन्या की राशि नवीं हो तो पिता की

और कन्या की राशि से पुरुष की राशि पाँचवीं हो तो माता की मृत्यु होती है। यदि वर से पाँचवीं कन्या की और कन्या से नवीं वर की राशि हो तो यह त्रिकोण पुत्र-पौत्र का देनेवाला तथा सुखदायक होता है। यदि छठे-आठवें हो तो मृत्यु होती है। इसका यत्नपूर्वक विचार करना चाहिए।

विवाह में ग्रहों के बल का विचार

वरस्य भास्करबलं कन्यायाश्च गुरोर्बलम्।
द्वयोश्चन्द्रबलं ग्राह्यं विवाहो नान्यथा भवेत् ॥ ४५ ॥

वर को सूर्य का बल, कन्या को बृहस्पति का बल और वर-कन्या दोनों को चन्द्रमा का बल लेना चाहिए। अन्यथा विवाह शुभ नहीं होता।

वर के सूर्य का विचार

अष्टमे च चतुर्थे च द्वादशे च दिवाकरे।
विवाहितो वरो मृत्युं प्राप्नोत्यत्र न संशयः ॥ ४६ ॥
जन्मन्यथ द्वितीये वा पंचमे सप्तमेऽपि वा।
नवमे च दिवानाथे पूजया पाणिपीडनम् ॥ ४७ ॥
एकादशे तृतीये वा षष्ठे वा दशमेऽपि वा।
वरस्य शुभदो नित्यं विवाहे दिननायकः ॥ ४८ ॥

वर की जन्म-राशि से आठवें, चौथे वा बारहवें सूर्य में विवाह करने से निःसन्देह वर की मृत्यु होती है। पहला, दूसरा, पाँचवाँ, सातवाँ अथवा नवाँ सूर्य हो तो दान-पूजा

करके विवाह करना चाहिए। ग्यारहवें, तीसरे, छठे अथवा दशवें सूर्य हो तो नित्य शुभ देनेवाला होता है।

कन्या के बृहस्पति का विचार

अष्टमे द्वादशे वापि चतुर्थे वा बृहस्पतौ।
पूजा तत्र न कर्तव्या विवाहे प्राणनाशकः ॥ ४९ ॥
षष्ठे जन्मनि देवेज्ये तृतीये दशमेऽपि वा।
भूरिपूजाप्रपूजितः स्यात्कन्यायाः शुभकारकः ॥५०॥
एकादशे द्वितीये वा पंचमे सप्तमेऽपि वा।
नवमे च सुराचार्यः कन्यायाः शुभकारकः ॥ ५१ ॥

कन्या की जन्म-राशि से आठवें, बारहवें या चौथे बृहस्पति प्राणघातक होता है, वह पूजा करने से भी शुभ नहीं होता। छठा जन्म का, तीसरा वा दसवाँ बृहस्पति बहुत पूजा-दान करने से कन्या को शुभदायक होता है। ग्यारहवाँ, दूसरा, पाँचवाँ, सातवाँ अथवा नवाँ बृहस्पति कन्या को शुभकारक होता है।

रवि गुरुविचार चक्र

रवि विचार		गुरु विचार	
३ । ६ । १० । ११	शुभ	२ । ५ । ७ । ९ । ११	शुभ
१ । २ । ५ । ७ । ९	पूज्य	१ । ३ । १० । ६	पूज्य
४ । ८ । १२	वर्जित	४ । ८ । १२	वर्जित

चन्द्रविचार

आद्यश्चन्द्रः श्रियं कुर्यान्मनस्तोषं द्वितीयके ।
तृतीये धनसम्पत्तिश्चतुर्थे कलहागमः ॥ ५२ ॥
पंचमे ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे संपत्तिरुत्तमा ।
सप्तमे राजसम्मानं मरणं चाष्टमे तथा ॥ ५३ ॥
नवमे धर्मलाभश्च दशमे मानसेप्सितम् ।
एकादशे सर्वलाभो द्वादशे हानिरेव च ॥ ५४ ॥

जन्म का चन्द्रमा लक्ष्मी का लाभ कराता है, दूसरा मन को संतोष देता है, तीसरा धन और संपत्ति देता है, चौथा कलह कराता है, पाँचवाँ ज्ञान की वृद्धि कराता है, छठा उत्तम संपत्ति देता है, सातवाँ राजा से सम्मान कराता है, आठवाँ मृत्यु देता है, नवाँ धर्म का लाभ कराता है, दशवाँ मनचाही सिद्धि देता है, ग्यारहवाँ सब प्रकार का लाभ कराता है तथा बारहवाँ हानिकारक है ।

१	लक्ष्मीप्राप्ति.
२	मनसन्तोष.
३	धनसम्पत्ति.
४	कलहागम.
५	ज्ञानवृद्धि .
६	सम्पत्ति.
७	राजसम्मान.
८	मृत्युभय.
९	धर्मलाभ
१०	मनोवाञ्छा.
११	सर्वलाभ.
१२	हानिः

कन्या की गौरी इत्यादि संज्ञा

गौरी अष्टाब्दका वापि नववर्षा च रोहिणी ।
दशवर्षा भवेत्कन्या अत ऊर्ध्वं रजस्वला ॥ ५५ ॥

आठ वर्ष की कन्या की गौरी, नव वर्ष की कन्या की रोहिणी, और दस वर्ष की कन्या की कन्या संज्ञा है । इससे अधिक वर्ष की हो तो रजस्वला संज्ञा होती है ।

गौरी ददन्नागलोके वैकुण्ठे रोहिणीं ददत् ।
कन्यां ददन्मृत्युलोके रौरवंतु रजस्वलाम् ॥ ५६ ॥

गौरी का दान करने से नाग (पाताल) लोक में, रोहिणी का दान करने से वैकुंठ में और कन्या का दान देने से मृत्युलोक में सुख मिलता है । तथा रजस्वला का दान करने से रौरव नरक में जाना पड़ता है ।

गौरी आदि के दान में ग्रहों के बल का विचार

गौरी गुरोर्बले देया रोहिणी भास्करस्य च ।
कन्या चन्द्रबले देया सर्वदोषविवर्जिता ॥ ५७ ॥

गौरी का दान गुरु का बल देखकर, रोहिणी का दान सूर्य का बल देखकर और कन्या का दान चन्द्रमा का बल देखकर करे । इन ग्रहों के बलवान् होने से सब दोष दूर हो जाते हैं ।

अन्य मत

गुर्विन्द्वर्कबला गौरी गुर्विन्दुबलरोहिणी ।
रवीन्दुबलजा कन्या प्रौढा लग्नबला स्मृता ॥५८॥

गौरी के विवाह में बृहस्पति, चन्द्रमा और सूर्य का बल देखे । रोहिणी के विवाह में बृहस्पति और चन्द्रमा का बल देखे । कन्या के विवाह में सूर्य और चन्द्रमा का बल देखे तथा प्रौढ़ा के विवाह में लग्न का ही बल देखना चाहिए ।

ग्रहों के बलाबल का फल

जीवो जीवप्रदाता च द्रव्यदाता च चन्द्रमाः ।
तेजोदाता भवेत्सूर्यो भूमिदाता महीसुतः ॥ ५९ ॥
जीवहीना मृता कन्या सूर्यहीनो मृतो वरः ।
चन्द्रहीनागतालक्ष्मीः स्थानहानिः कुजंविना ॥६०॥

बृहस्पति बलवान् होता है तो आयु की वृद्धि करता है । बलवान् चन्द्रमा धन का, बलवान् सूर्य तेज का और बलवान् मंगल भूमि का देनेवाला है । यदि बृहस्पति बलहीन हो तो कन्या की मृत्यु, सूर्य बलहीन हो तो वर की मृत्यु, चन्द्रमा बलहीन हो तो लक्ष्मी का नाश तथा मंगल बलहीन हो तो स्थान की हानि होती है ।

दस वर्ष से अधिक आयु की कन्या का विवाह न करने पर दोष

संप्राप्तैकादशे वर्षे या कन्या न विवाहिता ।
मासेमासे पिताभ्रातातस्याः पिबतिशोणितम् ॥६१॥

ग्यारहवाँ वर्ष प्राप्त होने पर जो कन्या विवाही नहीं जाती उसके पिता और ज्येष्ठ भ्राता महीने-महीने उसका रजसम्बन्धी रुधिर पीने के समान पापभागी होते हैं ।

द्वादशैकादशे वर्षे तस्याः शुद्धिर्न जायते ।
पूजाभिः शकुनैर्वापि तस्याः लग्नं प्रदापयेत् ॥६२॥

ग्यारह अथवा बारह वर्ष की कन्या होने पर उसकी शुद्धि नहीं रहती, इसलिए दान-पूजा करके अथवा केवल लग्न का बल या अच्छा शकुन देखकर उसका विवाह कर दे ।

रजस्वला के देखने का दोष

माता चैव पिता चैव ज्येष्ठभ्राता तथैव च ।
त्रयश्च नरकं यान्ति दृष्ट्वा कन्यां रजस्वलाम् ॥६३॥

यदि कुमारी कन्या पिता के घर में रजस्वला हो जाय तो उसके देखने से उसके माता, पिता और बड़ा भाई, ये तीनों नरक में जाते हैं ।

नाडीविचार

आदिमध्यान्तकं वापि अन्तमध्यादि भानि च ।
अश्विन्यादिक्रमेणैव रेवत्यन्तं सुसंलिखेत् ॥ ६४ ॥
ऊर्ध्वगा वेदरेखाः स्युस्तिर्यग्रेखा दश स्मृताः ।
सर्पाकारं लिखेद्धानां नाडीचक्रं वदेद्बुधः ॥ ६५ ॥

अश्विन्यादि नक्षत्रों का आदि, मध्य, अन्त्य और अन्त्य, मध्य, आदि । इस क्रम से रेवतीपर्यन्त चक्र लिखे । उसमें चार रेखाएँ खड़ी और दस रेखाएँ तिरछी हों । उसमें सर्पाकार नक्षत्रों को लिखे । इसे नाडीचक्र कहते हैं ।

नाडीचक्र

आदि	अश्वि	आर्द्रा.	पुन.	उ. फा.	हस्त	ज्येष्ठा	मूल	शत.	पू. भा.
मध्य	भरणी	मृग.	पुष्य	पू. फा.	चित्रा	अनु.	पू. षा.	धनि.	उ. भा
अन्त्य	कृत्ति.	रोहि.	अश्ले.	मघा	स्वाती	विशा.	उ. षा.	श्रव.	रेवती.

विप्रादि वर्णों को नाडी आदि का दोष

नाडीदोषस्तु विप्राणां वर्णदोषस्तु क्षत्रिये ।
गणदोषश्च वैश्येषु योनिदोषस्तु पादजान् ॥६६॥

ब्राह्मणों को नाडी का दोष, क्षत्रियों को वर्ण का दोष,

वैश्यों को गण का दोष और शूद्रों को योनि का दोष देखना चाहिए ।

नाडी-दोष का फल

एकनाडीस्थनक्षत्रे दम्पत्योर्मरणं ध्रुवम् ।
सेवायाञ्च भवेद्धानिर्विवाहे चाशुभं भवेत् ॥ ६७ ॥

वर और कन्या के जन्मनक्षत्र एक ही नाडी में हों तो दोनों की मृत्यु होती है । नाडी का वेध सेवा में हानिकर तथा विवाह में अशुभ होता है ।

आद्या नाडी वरं हन्ति मध्या नाडी च कन्यकाम् ।
अन्त्यानाडी द्वयोर्मृत्युं नाडीदोषंत्यजेद्बुधः ॥६८॥

दोनों की आदि नाडी हो तो वर की, दोनों की मध्य नाडी हो तो कन्या की और दोनों की अन्त्य नाडी हो तो दोनों की मृत्यु होती है । इसलिए बुद्धिमान नाडीदोष को त्याग दे ।

नाडी-दोष का परिहार

एकनक्षत्रजातानां नाडीदोषो न विद्यते ।
अन्यर्क्षपतिवेधेषु विवाहो वर्जितः सदा ॥ ६९ ॥

यदि वर और कन्या का जन्म एक ही नक्षत्र में हुआ हो तो नाडीदोष नहीं होता । अन्य नक्षत्रों में जन्म हुआ हो और नाडीदोष होता हो तो विवाह सदा वर्जित है ।

विवाह के दस दोष

लता पातो युतिर्वेधो जामित्रं बुधपंचकम् ।
एकार्गलोपग्रहौ च क्रान्तिसाम्यं निगद्यते ॥ ७० ॥
दग्धातिथिश्च विज्ञेयाः दशदोषा महाबलाः ।
एतान्दोषान् परित्यज्य लग्नं संशोधयेद्बुधः ॥७१॥

लता, पात, युति, वेध, जामित्र, बुधपंचक, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि ये दश दोष महाबलवान् हैं। इन दोषों को छोड़कर बुद्धिमान् लग्न का विचार करे।

लत्ता-दोष का विचार

नक्षत्रं द्वादशं भानुस्तृतीयं लत्तया कुजः ।
षष्ठं जीवोऽष्टमं मन्दो हन्ति दक्षिणतः सदा ॥ ७२ ॥
वामेन सप्तमश्चान्द्रिर्नवमे सिंहिकासुतः ।
हन्ति भं पंचमं शुक्रो द्वाविंशं पूर्णचन्द्रमाः ॥ ७३ ॥

सूर्य अपने नक्षत्र से बारहवें नक्षत्र को, मंगल तीसरे नक्षत्र को, बृहस्पति छठे नक्षत्र को और शनैश्चर आठवें नक्षत्र को दाहिनी ओर से लात मारते हैं तथा बुध अपने नक्षत्र से सातवें नक्षत्र को, राहु नवें नक्षत्र को, शुक्र पाँचवें नक्षत्र को और पूर्णचन्द्रमा बाईसवें नक्षत्र को बाईं ओर से लात मारते हैं।

लत्ता का फल

रवेर्लत्ता हरेद्वित्तं कुजस्य कुरुते मृतिम् ।
बृहस्पतेर्बन्धुनाशं शनेः कुर्यात्कुलक्षयम् ॥ ७४ ॥
बुधस्य कुरुते त्रासं लत्ता राहोर्विनाशयेत् ।
शुक्रस्य दुःखदा नित्यं त्रासदा तु कलानिधेः ॥७५॥

सूर्य की लात धन को हरती है, मंगल की लात मृत्यु करती है, बृहस्पति की लात बन्धु का नाश और शनि की लात कुल का क्षय करती है। बुध की लात त्रास करती है और राहु की लात नाशकारक होती है, शुक्र की लात हमेशा दुःख देती है और चन्द्रमा की लात त्रासकारक है।

पात का विचार

सूर्ययुक्ताच्च नक्षत्राद्दोषः पातो विधीयते ।
मघाश्लेषा च चित्रा च सानुराधा च रेवती ॥७६॥
श्रवणोऽपि च षट्कोऽयं पातदोषो निगद्यते ।
अश्विनीमवधिं कृत्वा गणयेल्लग्नभावधि ॥ ७७ ॥

जिस नक्षत्र पर सूर्य हो उस नक्षत्र से पात दोष का विचार किया जाता है। मघा, अश्लेषा, चित्रा, अनुराधा, रेवती और श्रवण इन छः नक्षत्रों के योग से छः प्रकार का पात दोष होता है। २७ रेखा खींचकर सूर्य के नक्षत्र से सब नक्षत्रों को स्थापन करे और अश्विनी से लेकर विवाह

नक्षत्र तक गिने, यदि पूर्वोक्त नक्षत्रों में गिनती पूरी हो तो पात दोष होता है।

पातों के नाम

पावकः पवमानश्च विकारः कलहोऽपरः।
मृत्युः क्षयश्च विज्ञेयं पातषट्कस्य लक्षणम् ॥७८॥

पावक, पवमान, विकार, कलह, मृत्यु और क्षय; ये छः पातों के नाम हैं। ये अपने नाम के अनुसार फल देते हैं।

पात का फल

पातेन पतितो ब्रह्मा पातेन पतितो हरिः।
पातेन पतितः शम्भुस्तस्मात्पातं विवर्जयेत् ॥७९॥

पातदोष से ब्रह्मा, विष्णु और शिव भी पतित हुए हैं। अतः पातदोष को त्यागना चाहिए।

देशभेद से पात का निषिद्धत्व

चित्रां गते पातविचित्रदेशे
मैत्रे मघामालवके निषिद्धः।
पौष्णश्रुती चोत्तरदेशजातः
सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजङ्गपातः ॥ ८० ॥

चित्रा नक्षत्र का पात विचित्र देश में, अनुराधा और मघा का पात मालव देश में, रेवती तथा श्रवण का पात उत्तर देश में और अश्लेषा का पात सब देशों में वर्जित है।

युतिदोष का विचार

यत्र गृहे भवेच्चन्द्रः ग्रहस्तत्र यदा भवेत्।
युतिदोषस्तदा ज्ञेयो विना शुक्रं शुभाशुभम् ॥ ८१ ॥

जिस घर (नक्षत्र) में चन्द्रमा हो उसी में यदि कोई और ग्रह हो तो युतिदोष होता है। यदि शुक्र के सिवा अन्य शुभ ग्रह हों तो शुभ है और अशुभ ग्रह हों तो अशुभ युति-दोष होता है।

युतिदोष का फल

रविणा संयुतो हानिं भौमेन निधनं शशी।
करोति मूलनाशं च राहुकेतुशनैश्चरैः ॥ ८२ ॥

यदि चन्द्रमा के साथ सूर्य हो तो हानि होती है। चन्द्रमा के साथ मंगल हो तो मृत्यु होती है। चन्द्रमा के साथ राहु, केतु और शनैश्चर हों तो मूल का नाश करते हैं।

युतिदोष का परिहार

वर्गोत्तमगतश्चन्द्रःस्वोच्चं वा मित्रराशिगः।
युतिदोषश्च न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसी सदा ॥ ८३ ॥

यदि चन्द्रमा वर्गोत्तम में हो अथवा अपने उच्च में हो, या मित्र राशि में हो तो युतिदोष नहीं होता, और वर-कन्या के लिए सदा शुभ होता है।

विवाह में पंचशलाका चक्र

पंचोर्ध्वाः स्थापयेद्रेखा पंच तिर्यङ्मुखास्तथा।
द्वयोश्च कोणयोर्द्वे द्वे चक्रं पंचशलाककम् ॥ ८४ ॥

वायव्ये कृत्तिका देया क्रमादन्यानि भानि च ।
ते ग्रहास्तु प्रदातव्या ये च यत्र प्रतिष्ठिताः ॥ ८५ ॥
लग्नस्य निकटे या च गता भवति पूर्णिमा ।
तन्नक्षत्रस्थितश्चन्द्रो दातव्यो गणकोत्तमैः ॥ ८६ ॥

पाँच रेखा खड़ी खींचे और पाँच ही आड़ी खींचे तथा दो-दो रेखाएँ कोणों में तिरछी खींचे तो पंचशलाका चक्र बन जाता है । वायव्य कोण की रेखा पर कृत्तिका नक्षत्र रक्खे और दाहिने क्रम से अन्य सब नक्षत्रों को स्थापित करे । जो ग्रह जिस नक्षत्र पर हो उसे भी उस नक्षत्र पर स्थापित करे । लग्न के निकटवाली पूर्णिमा में जिस नक्षत्र पर चन्द्रमा हो उस नक्षत्र पर चन्द्रमा को स्थापित करे ।

पंचशलाका चक्र

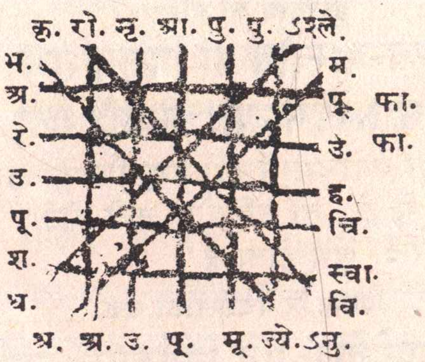

वेध-फल

एकरेखायुतिर्वेधो दिननाथादिभिर्ग्रहैः ।
विवाहे तत्र मासं तु न जीवति कदाचन ॥ ८७ ॥

किसी रेखा के एक छोर पर स्थित सूर्य आदि ग्रह जिस नक्षत्र को वेधते हों उस नक्षत्र में विवाह करने से एक ही महीने के भीतर वर या कन्या की मृत्यु हो जाती है ।

वेध के नक्षत्र

अश्विनी पूर्वफाल्गुन्या भरणी चानुराधया ।
अभिजच्चापिरोहिण्याकृत्तिका चविशाखया ॥ ८८ ॥
मृगश्चोत्तरषाढेन पूर्वाषाढा तथार्द्रया ।
पुनर्वसुश्च मूलेन तथा पुष्यश्च ज्येष्ठया ॥ ८९ ॥
धनिष्ठया तथाऽऽश्लेषा मघापि श्रवणेन च ।
रेवत्युत्तर फाल्गुन्या हस्तेनोत्तरभाद्रपात् ॥ ९० ॥
स्वात्या शतभिषा विद्धा चित्रया पूर्वभाद्रपात् ।
विद्धान्येतानिवर्ज्यानिविवाहेमानिकोविदैः ॥ ९१ ॥

अश्विनी का पूर्वाफाल्गुनी से, भरणी का अनुराधा से, अभिजित् का रोहिणी से, कृत्तिका का विशाखा से, मृगशिरा का उत्तराषाढा से, पूर्वाषाढा का आर्द्रा से, पुनर्वसु का मूल से, पुष्य का ज्येष्ठा से, धनिष्ठा का अश्लेषा से, मघा का

श्रवण से, रेवती का उत्तराफाल्गुनी से, हस्त का उत्तराभाद्रपदा से, स्वाती का शतभिषा से और चित्रा का पूर्वाभाद्रपदा से वेध होता है। एक रेखा के दोनों छोरों पर स्थित दोनों नक्षत्रों में से किसी नक्षत्र पर कोई ग्रह स्थित हो तो वह दूसरे नक्षत्र को वेधता है। ये विद्ध नक्षत्र विद्वानों ने विवाह में वर्जित किये हैं।

वेधफल

रविवेधे च वैधव्यं कुजवेधे कुलक्षयम्।
बुधवेधे भवेद्वन्ध्या प्रव्रज्या गुरुवेधतः ॥ ६२ ॥
अपुत्रा शुक्रवेधे च सौरे चन्द्रे च दुःखिता।
पुरुषान्यरता राहौ केतौ स्वच्छन्दचारिणी ॥ ६३ ॥

सूर्य के वेध में विवाह करे तो विधवा हो, मंगल के वेध में कुल का क्षय हो, बुध के वेध में वन्ध्या (बाँझ) हो, बृहस्पति के वेध में संन्यासिनी हो, शुक्र के वेध में अपुत्रा हो, शनि और चन्द्रमा के वेध में दुःखित हो, राहु का वेध हो तो परपुरुषगामिनी तथा केतु का वेध हो तो स्वच्छन्द विचरनेवाली होती है।

युतिदोष का विचार

शनिराहुकुजादित्या यदा जन्मर्क्षसंस्थिताः।
विवाहिता च या कन्यासाकन्याविधवा भवेत् ॥६४॥

जिसके विवाह में शनि, राहु, मंगल और सूर्य, इनमें से कोई ग्रह जन्म के नक्षत्र पर स्थित हो तो वह कन्या विधवा हो जाती है।

जामित्रदोष का विचार

चतुर्दशं च नक्षत्रं जामित्रं लग्नभात्स्मृतम्।
शुभयुक्तं तदिच्छन्ति पापयुक्तं च वर्जयेत् ॥ ६५ ॥
चन्द्रश्चान्द्रिर्भृगुर्जीवो जामित्रे शुभकारकाः।
स्वर्भानुर्भानुमन्दारा जामित्रे न शुभप्रदाः ॥ ६६ ॥

लग्न के नक्षत्र से चौदहवाँ नक्षत्र जामित्रसंज्ञक होता है। उस नक्षत्र पर शुभग्रह हो तो ग्राह्य है और पापग्रह हो तो वर्ज्य है चन्द्रमा, बुध, शुक्र और बृहस्पति ये जामित्र में शुभकारक हैं तथा राहु-केतु, सूर्य, शनि और मंगल ये जामित्र में अशुभ होते हैं।

चन्द्राद्वा लग्नतो वापि ग्रहा वर्ज्याश्च सप्तमे।
तत्र स्थिता ग्रहा नूनं व्याधिवैधव्यकारकाः ॥ ६७ ॥

चन्द्रमा से तथा लग्न से सातवें स्थान में ग्रहों का होना वर्जित है, क्योंकि वहाँ स्थित ग्रह निश्चय व्याधि और वैधव्यकारक होते हैं।

बुधपंचक (बाण) विचार

धार्या तिथिर्मासदशाष्टवेदाः
संक्रान्तितो यातदिनैश्च योज्याः ।
ग्रहैर्विभक्ता यदि पञ्चशेषा
रोगस्तथाग्निर्नृपचौरमृत्युः ॥ ९८ ॥

१५, १२, १०, ८ और ४ इन संख्याओं को अलग अलग रक्खे और सूर्य की संक्रान्ति से जितने दिन बीते हों उतने दिन सबमें जोड़े और सबमें अलग-अलग ९ का भाग दे। जिसमें पाँच शेष बचें उसी को क्रमानुसार रोगपंचक, अग्निपंचक, नृपपंचक, चौरपंचक और मृत्युपंचक जाने। अर्थात् पहले अंक में ५ शेष बचें तो रोगपंचक और दूसरे अंक में ५ शेष बचें तो अग्निपंचक, इसी क्रम से जाने।

वारसम्बन्ध से बाण का विचार

यद्यर्कवारे किल रोगपञ्चकं
सोमे च राज्यं क्षितिजे च वह्निः ।
सौरौ च मृत्युर्धिषणे च चौरो
विवाहकाले परिवर्जनीयाः ॥ ९९ ॥

रविवार को रोगपंचक, सोमवार को नृपपंचक, मंगलवार को अग्निपंचक, शनिवार को मृत्युपंचक और गुरुवार को चौरपंचक विवाह में वर्जित हैं।

दिन और रात में त्यागने योग्य बाणदोष

रोगं चौरं त्यजेद्रात्रौ दिवा राज्याग्निपञ्चकम् ।
उभयोःसंध्ययोर्मृत्युरन्यकाले न निन्दिता ॥१००॥

रोगपंचक और चौरपंचक रात्रि में त्याज्य हैं तथा नृपपंचक और अग्निपंचक दिन में त्याज्य हैं। दोनों सन्धियों में (सूर्योदय और सूर्यास्त के समय) मृत्युपंचक त्याज्य है। अन्य समय में ये त्याज्य नहीं हैं।

विद्युदादिदोष (उपग्रह)

सूर्यभात्पञ्चमे विद्युन्नक्षत्रे शूलमष्टमे ।
चतुर्दशे शनेः पातः केतुरष्टादशे तथा ॥ १०१ ॥
ऊनविंशे भवेदुल्का निर्घातश्च द्विविंशके ।
त्रयोविंशतिके कम्पः पञ्चविंशे तु वज्रकः ॥१०२॥

सूर्य के नक्षत्र से पाँचवें नक्षत्र में विद्युत् दोष, आठवें नक्षत्र में शूल दोष, चौदहवें नक्षत्र में शनिपात दोष, अठारहवें में केतु दोष, उन्नीसवें में उल्कापात दोष, बाईसवें में निर्घात, तेईसवें में कम्प और पच्चीसवें नक्षत्र में वज्र दोष होता है।

उपग्रह का फल

पुत्रनाशकरी विद्युत् पत्युः शूलो विनाशकः ।
शनेः पातो वंशघाती केतुर्देवरनाशकः ॥ १०३ ॥

द्रव्यनाशकरी चोल्का निर्घातो बन्धुनाशनः ।
कम्पःकम्पयते नित्यं वज्रे स्त्रीऽव्यभिचारिणी॥ १०४ ॥

विद्युत् दोष में विवाह करने से पुत्रनाश, शूल दोष में पतिनाश, शनिपात दोष में वंशनाश, केतु दोष में देवर की मृत्यु, उल्का दोष में धन का नाश और निर्घात दोष में भाई का नाश होता है। कम्प दोष नित्य ही कँपाता है और वज्र में विवाह करने से स्त्री व्यभिचारिणी होती है।

एकार्गलयोग

योगाङ्के विषमे चैको देयोऽष्टाविंशतिः समे ।
अर्द्धं कृत्वाऽश्विनीपूर्वमङ्कं मूर्ध्नि प्रदीयते ॥१०५॥

यदि योग की संख्या विषम हो तो एक और सम हो तो अट्ठाईस जोड़कर उसको आधा करे। उसे अश्विन्यादि क्रम से चक्र के मस्तक पर लिखे।

विष्कुम्भे चाश्विनी देया प्रीतौ स्वातिर्निगद्यते ।
सौभाग्ये च विशाखा स्यादायुष्मान्भरणीयुतः १०६॥
शोभने कृत्तिका देया अनुराधा च गण्डके ।
रोहिणी च सुकर्माख्ये धृतौ ज्येष्ठाप्रकीर्त्तिता ॥१०७॥
गण्डे मूलं मृगः शूले वृद्धौ चार्द्रा निगद्यते ।
पूर्वाषाढा ध्रुवे प्रोक्ता व्याघाते च पुनर्वसुः ॥ १०८ ॥

हर्षणे चोत्तराषाढा वज्रे पुष्यः प्रकीर्त्तितः ।
अभिजिच्चतथा सिद्धा वाश्लेषाव्यतिपातके ॥ १०९ ॥
वरीयसि श्रुतिर्देया परिघे च मघा तथा ।
शिवेधनिष्ठादातव्यासिद्धौपूर्वाचफाल्गुनी ॥ ११० ॥
साध्ये शतभिषा देया शुभे चोत्तरफाल्गुनी ।
पूर्वाभाद्रपदा शुक्ले हस्तो ब्राह्मे प्रकीर्त्तितः ॥१११॥
उत्तराभाद्रपच्चैन्द्रे चित्रा देया च वैधृतौ ।
सूर्याचन्द्रमसोर्योगे भवेदेकार्गलं तदा ॥ ११२ ॥
त्रयोदश तिरोरेखा एकोर्ध्वा मूर्ध्न्यभिस्मृता ।
योगाङ्के प्राप्तनक्षत्रे ज्ञेयमेकार्गलं बुधैः ॥ ११३ ॥

विष्कुंभ में अश्विनी, प्रीति में स्वाती, सौभाग्य में विशाखा, आयुष्मान् में भरणी, शोभन में कृत्तिका, अतिगण्ड में अनुराधा, सुकर्मा में रोहिणी, धृति में ज्येष्ठा, गण्ड में मूल, शूल में मृगशिरा, वृद्धि में आर्द्रा, ध्रुव में पूर्वाषाढ़, व्याघात में पुनर्वसु, हर्षण में उत्तराषाढ़, वज्र में पुष्य, सिद्धि में अभिजित्, व्यतिपात में आश्लेषा, वरीयान् में श्रवण, परिघ में मघा, शिव में धनिष्ठा, सिद्धि में पूर्वाफाल्गुनी, साध्य में शतभिषा, शुभ में उत्तराफाल्गुनी, शुक्ल में पूर्वाभाद्रपद, ब्रह्म में हस्त, इन्द्र में उत्तराभाद्रपद और वैधृति योग में चित्रा नक्षत्र स्थापित करना चाहिए।

एकार्गलचक्रम्

१३ रेखा तिरछी और एक रेखा खड़ी लिखे। इसे एकार्गल चक्र कहते हैं। इसमें पूर्वोक्त प्रकार से सब नक्षत्र स्थापित करे। योग के अंक से प्राप्त हुए नक्षत्र में यदि चन्द्रमा और सूर्य का योग हो तो बुद्धिमानों ने उसे एकार्गल दोष कहा है।

क्रान्तिसाम्य विचार

ऊर्ध्वास्तिस्रस्तिरस्तिस्रो मध्ये मीनं लिखेद्बुधः।
सूर्याचन्द्रमसौ दृष्टौक्रान्तिसाम्यं निगद्यते ॥ ११४ ॥

मीनः कन्यकया युक्तो मेषः सिंहेन संगतः।
मकरेणवृषाक्रान्तिश्चापोऽपि मिथुनेन च ॥ ११५ ॥
कर्केण वृश्चिको विद्धो वेधश्च तुलकुम्भयोः।
क्रान्तिसाम्येकृतोद्वाहो न जीवति कदाचन ॥११६॥

तीन रेखा खड़ी और तीन रेखा तिरछी खींचे और बीच की रेखा पर मीन लिखकर क्रम से सब राशि स्थापित करे। सूर्य और चन्द्रमा एक रेखा पर पड़े तो क्रान्तिसाम्य होता है। वेध इस प्रकार होता है:—मीन से कन्या का, मेष से सिंह का, वृष से मकर का, धनु से मिथुन का, कर्क से वृश्चिक का और तुला से कुंभ का वेध होता है। क्रान्तिसाम्य में विवाह करने से वर कदापि जीवित नहीं रह सकता।

क्रांतिसाम्य का फल

क्रान्तिसाम्ये च कन्याया यदि पाणिग्रहो भवेत्।
कन्या वैधव्यतां याति ईशस्य दुहिता यदि ॥११७॥

क्रान्तिसाम्य में जिस कन्या का विवाह होता है वह विधवा हो जाती है, चाहे महादेवजी की ही कन्या क्यों न हो।

कण्टकादि दोषों का विचार

मर्मवेधः कण्टकश्च शल्यं छिद्रं चतुर्थकम्।
एतद्वेधचतुष्कं तु परित्याज्यं प्रयत्नतः ॥ ११८ ॥

लग्ने पापे मर्मवेधः कण्टको नवपञ्चके ।
चतुर्थे दशमे शल्यं छिद्रं भवति सप्तमे ॥ ११९ ॥

१ मर्मवेध, २ कण्टक, ३ शल्य और ४ छिद्र ये चार वेध यत्न से त्यागना चाहिए । लग्न में पापग्रह हो तो मर्म-वेध होता है, नवें और पाँचवें पापग्रह हो तो कण्टक, चौथे दशवें पापग्रह हो तो शल्य और सातवें पापग्रह हो तो छिद्र होता है ।

कण्टक आदि का फल

मरणं मर्मवेधे स्यात् कण्टके च कुलक्षयः ।
शल्ये च नृपतेर्भीतिः पुत्रनाशश्च छिद्रके ॥ १२० ॥

मर्मवेध में विवाह हो तो मृत्यु होती है, कण्टक में कुल का नाश, शल्य में राजा से भय और छिद्रदोष में विवाह करने से पुत्र का नाश होता है ।

जन्ममास, जन्मनक्षत्र, जन्मदिन और ज्येष्ठमास का विचार

जन्ममासे जन्मभे च नैव जन्मदिनेऽपि च ।
ज्येष्ठे न ज्येष्ठगर्भस्य विवाहं कारयेत्क्वचित् ॥ १२१ ॥

जन्ममास, जन्मनक्षत्र और जन्मदिन में विवाह न करे। ज्येष्ठगर्भवाले का विवाह ज्येष्ठ मास में कभी न करे ।

न कन्यावरयोर्ज्येष्ठे ज्येष्ठयोः पाणिपीडनम् ।
द्वयोरेकतरे ज्येष्ठे न ज्येष्ठो दोषमावहेत् ॥ १२२ ॥

वर और कन्या दोनों ज्येष्ठ हों तो ज्येष्ठ मास में विवाह नहीं करना चाहिए । यदि दोनों में से एक ही ज्येष्ठ हो तो ज्येष्ठमास में विवाह करने का दोष नहीं है ।

सिंहस्थ गुरु का विचार

सिंहे गुरौ गते कार्यो न विवाहः कदाचन ।
मेषस्थितेदिवानाथे सिंहेज्ये च शुभप्रदः ॥ १२३ ॥

सिंहराशि में बृहस्पति हो तो विवाह कदापि न करे । किन्तु यदि सूर्य मेषराशि में हो तो सिंह के बृहस्पति में भी विवाह शुभ होता है ।

ग्रहों का विश्वाबल

रवौ सार्धत्रयो भागाः पञ्च चन्द्रे गुरौ त्रयः ।
द्वे द्वे शुक्रेन्दुपुत्रे स्याद्विश्वाभागप्रदायकाः ॥ १२४ ॥
प्रत्येकं सार्धभागाश्च मन्दमंगलराहुषु ।
ग्रहा बलयुताविश्वाः प्रयच्छन्ति न दुर्बलाः ॥ १२५ ॥

सूर्य ३॥ भाग, चन्द्रमा ५ भाग, बृहस्पति ३ भाग, शुक्र और बुध दो-दो भाग तथा शनि, मंगल, राहु और केतु ये डेढ़-डेढ़ भाग विश्वाबल देते हैं । ये ग्रह जब बलवान् होतें हैं तब पूर्वोक्त विश्वाबल देते हैं और जब निर्बल होते हैं तब बल नहीं देते हैं । अर्थात् शुभ स्थान में हों तो ग्रह पूर्वोक्त बल देते हैं और अशुभ स्थान में हों तो हीनबल होते हैं ।

लग्नशुद्धि

केन्द्रे सप्तमहीने च द्वित्रिकोणे शुभाः शुभाः ।
धने शुभप्रदश्चन्द्रः पापाः षष्ठे च शोभनाः ॥१२६॥
तृतीयैकादशे सर्वे सौम्याः पापाः शुभप्रदा ।
ते सर्वे सप्तमस्थाने मृत्युदा वरकन्ययोः ॥ १२७ ॥

सप्तमरहित केन्द्र (लग्न, चतुर्थ और दशम इन स्थानों) में तथा दूसरे, तीसरे, पाँचवें और नवें स्थान में शुभ ग्रह (बुध, बृहस्पति और शुक्र तथा शुक्ल दशमी से कृष्णपक्ष की पंचमी तक चन्द्रमा) शुभ होते हैं । धन स्थान में चन्द्रमा शुभ होता है । छठे पापग्रह शुभ होते हैं; किन्तु सप्तम स्थान में शुभ या अशुभ कोई भी ग्रह हो, तो कन्या और वर की मृत्यु हो जाती है ।

शनिः सूर्यश्च लग्नेऽस्ते चन्द्रो लग्नेऽष्टमे रिपौ ।
कुजो लग्नेऽष्टमे चास्ते शुक्रोद्यूनेऽष्टमेरिपौ ॥१२८॥
गुरुर्मृत्यौ सैंहिकेयो लग्ने तुर्ये च सप्तमे ।
बुधोऽष्टमे च जामित्रे विवाहः प्राणनाशकः ॥१२९॥
क्रूरयोरन्तरे लग्नं चन्द्रं च परिवर्जयेत् ।
वरंहन्तिध्रुवंलग्नं शीतरश्मिश्चकन्यकाम् ॥ १३० ॥

शनि वा सूर्य लग्न में अथवा सातवें स्थान में हों, चन्द्रमा

१, ८, ६ में हो, मंगल १, ८, ७ में हो, शुक्र ७, ८, ६ में हो, गुरु ८ वें, राहु १, ४, ७ में हो और बुध ८, ७ में हो तो विवाह में प्राणनाशक होते हैं । क्रूरग्रहों के मध्य में लग्न हो तो वर का और चन्द्रमा हो तो कन्या का नाश करता है ।

विवाह में शुभ लग्न

तुला च मिथुनं कन्या पूर्वार्द्धं धनुषो वृषः ।
एतेलग्नाःशुभाः नित्यंमध्यमाश्चापरेस्मृताः ॥१३१॥

धनु का पूर्वार्ध तथा तुला, मिथुन, कन्या और वृष, ये लग्न नित्य ही शुभ होते हैं । अन्य लग्न मध्यम होते हैं ।

देशभेद से दस दोषों का परिहार

लत्ता मालवके देशे पातश्च कुरुजाङ्गले ।
एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत् ॥ १३२ ॥

लत्ता दोष मालव देश में, पात दोष कुरुजाङ्गल देश में, एकार्गल दोष काश्मीर में और वेध दोष सब देशों में वर्जित है ।

नवमांश विचार

मेषे नवांशा मेषाद्या वृषे च मकरादिकाः ।
मिथुने च तुलाद्याःस्युःकर्कटेकर्कटादिकाः ॥१३३॥
मेषाद्यौ च धनुःसिंहौ गोकन्ये मकरादिके ।
तुलाद्यौयुग्मकुम्भौच्कर्काद्यौमीनवृश्चिकौ ॥१३४॥

गोतुलायुग्मकन्यानां नवांशाः शुभदाः स्मृताः ।
धनुषः प्रथमो भागो विवाहेऽन्ये च मध्यमाः ॥१३५॥

मेष में नवांश मेष से धनुपर्यंन्त होते हैं, एवं वृष में मकरादि नवांश होते हैं, मिथुन में तुलादि नवांश तथा कर्क में कर्कादि नवांश होते हैं। मेष, सिंह और धनु में नवांश मेष से धनुपर्यन्त; वृष, कन्या और मकर में नवांश मकर से कन्यापर्यन्त; मिथुन, तुला और कुम्भ में नवांश तुला से मिथुनपर्यन्त तथा कर्क, वृश्चिक और मीन में कर्क से मीन-पर्यन्त नवांश होते हैं। वृष, तुला, मिथुन और कन्या के नवांश विवाह में शुभ होते हैं। धनु का प्रथम भाग भी शुभ होता है। अन्य नवांश मध्यम होते हैं।

अथ नवांशचक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	
मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	कुं.	३।२०
वृष.	कुं.	वृ.	सिं.	वृष.	कुं.	वृ.	सिं.	वृष.	कुं.	वृ.	सिं.	६।४०
मि.	मी.	ध.	कं.	मि.	मी.	ध.	कं.	मि.	मी.	ध.	क.	१०।०
क.	मे.	म.	तु.	कं.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	१३।२०
सिं.	वृष	कुं.	वृ.	सिं.	वृष.	कु.	वृ.	सिं.	वृष.	कुं.	वृ.	१६।४०
कं.	मि.	मी.	ध.	कं.	मि.	मी.	ध.	कं.	मि.	मी.	ध.	२०।०
तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	२३।२०
वृ.	सिं.	वृष.	कुं.	वृ.	सिं.	वृष.	कुं.	बृ.	सिं.	बृ.	कुं.	२६।४०
ध.	कं.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	३०।०

लग्न नवांश विचार

अंशस्य पतिरंशे च तन्मित्रं वा शुभोऽपि वा ।
पश्यते वा शुभो ज्ञेयः सर्वे दोषाश्च निष्फलाः॥१३६॥

नवांश का स्वामी अपने अंश में हो और उसका मित्र अथवा शुभ ग्रह उसको देखता हो तो शुभ होता है तथा सब दोष निष्फल हो जाते हैं।

होलाष्टक विचार

शुक्लाष्टमीं समारभ्य फाल्गुनस्य दिनाष्टकम् ।
पूर्णिमामवधिं कृत्वा त्याज्यं होलाष्टकं बुधैः ॥१३७॥
शुतुद्र्यां च विपाशायामैरावत्यां त्रिपुष्करे ।
होलाष्टकंविवाहादौत्याज्यमन्यत्रशोभनम् ॥ १३८ ॥

फाल्गुन शुक्लपक्ष की अष्टमी से पूर्णमासीपर्यन्त आठ दिन तक होलाष्टक होते हैं, उनको बुद्धिमान् त्याग दे। शुतुद्री नदी, विपाशा नदी, इरावती और त्रिपुष्कर के समीपस्थ देशों में विवाह में होलाष्टक त्याज्य हैं। अन्य देशों में शुभ हैं।

दिवान्धादि लग्न

दिने सदान्धा वृषमेषसिंहा
रात्रौ च कन्या मिथुनं कुलीरः ।

मृगस्तुलालिर्बधिरोऽपराह्णे
सन्ध्यासु कुब्जा घटधन्विमीनाः ॥ १३९ ॥

वृष, मेष और सिंह लग्न दिन में अन्धी रहती हैं। मिथुन, कर्क और कन्या लग्न रात्रि में अन्धी रहती हैं। तुला, वृश्चिक और मकर लग्न अपराह्ण में बधिर रहती हैं तथा कुंभ, धनु और मीन लग्न सन्ध्याकाल में कुब्ज रहती हैं।

दिवान्धादि लग्नों का फल

दिवान्धो वरहन्ता च रात्र्यन्धो धननाशकः।
दुःखदोवधिरोलग्नः कुब्जो वंशविनाशकः ॥१४०॥

दिवान्ध लग्न में विवाह करने से वर की हानि होती है। रात्र्यन्ध लग्न में विवाह करने से धन का नाश होता है। बधिर लग्न में विवाह करने से दुःख होता है और कुब्ज लग्न में विवाह करने से वंश का विनाश होता है।

गोधूलिका विचार

यत्र चैकादशश्चन्द्रो द्वितीयश्च तृतीयकः।
गोधूलिकः सविज्ञेयः शेषाधूलिमुखाः स्मृताः ॥१४१॥

गोधूलि समय में लग्न से दूसरे, तीसरे और ग्यारहवें चन्द्रमा हो तो उसे गोधूलि लग्न और अन्य स्थानों में चन्द्रमा हो तो उसे धूलिमुख लग्न कहते हैं।

त्याज्य गोधूलि

कुलिकः क्रांतिसाम्यं च लग्ने षष्ठाष्टमे शशी।
तदागोधूलिकस्त्याज्यः पञ्चदोषैश्च दूषितः ॥१४२॥

कुलिक दोष हो, क्रान्तिसाम्य दोष हो, अथवा लग्न से छठे वा आठवें चन्द्रमा हो, अथवा पंच दोषों से दूषित हो, वह गोधूलि-लग्न विवाह में त्याज्य है।

गोधूलि का समय

यदा नास्तं गतो भानुर्गोधूल्या पूरितं नभः।
सर्वमङ्गलकार्येषु गोधूलिश्च प्रशस्यते ॥ १४३ ॥

जब सूर्य अस्त न हुआ हो और गौओं के खुरों से उड़ी हुई धूलि आकाश में छा गई हो, वह गोधूलि समय है। वह सब मंगल कार्यों में श्रेष्ठ है।

गोधूलिनाशक योग

अष्टमे जीवभौमौ च बुधो वा भार्गवोऽष्टमे।
लग्ने षष्ठाष्टमे चन्द्रस्तदा गोधूलिनाशकः ॥१४४॥

यदि लग्न से आठवें स्थान में बृहस्पति, मंगल, बुध वा शुक्र हों, अथवा लग्न में वा लग्न से छठे वा आठवें चन्द्रमा हो तो गोधूलि की श्रेष्ठता नहीं रहती।

लग्नशुद्धि विचार

लग्नादेकादशे सर्वे लग्नपुष्टिकरा ग्रहाः ।
तृतीये चाष्टमे सूर्यः सूर्यपुत्रश्च शोभनः ॥१४५॥
चन्द्रो धने तृतीये च कुजो षष्ठे तृतीयके ।
बुधेज्यौ नवषड्द्वित्रिचतुः पञ्चदशे स्थितौ ॥१४६॥
शुक्रो द्वित्रिचतुः पञ्चधर्म्मकर्म्मतनुस्थितः ।
राहुर्दशाष्टषट्पञ्चत्रिनवद्वादशे शुभः ॥ १४७ ॥

लग्न से ग्यारहवें स्थान में सब ग्रह शुभदायक हैं। तीसरे और आठवें सूर्य तथा शनि शुभकारक हैं। तीसरे और दूसरे चन्द्रमा, तीसरे और छठे मंगल तथा नवें, छठे, दूसरे, तीसरे, चौथे, पाँचवें और दसवें बुध तथा बृहस्पति शुभ होते हैं। दूसरे, तीसरे, चौथे, पाँचवें, नवें, दशवें और लग्न में शुक्र शुभ होता है। राहु और केतु दशवें, आठवें, छठे, पाँचवें, तीसरे, नवें और बारहवें शुभ होते हैं।

दिन में इष्टकाल का विचार

छायापादै रसोपेतैरेकविंशशतं भजेत् ।
लब्धांके घटिकाज्ञेयाशेषांके च पलाः स्मृताः ॥१४८॥

अपनी छाया को अपने पाँवों से नापे, उसमें ६ और

जोड़कर १२१ से भाग दे। जो लब्धि मिले उसे घड़ी* समझे और जो शेष बचे उसको ६० से गुणा करके फिर १२१ से भाग दे। वह लब्धि पल होती हैं।

रात्रि में इष्टकाल का विचार

पूर्वाषाढानुराधा च ज्येष्ठाश्लेषा च रेवती ।
विशाखा च यदा मूर्ध्नि तदा स्यादष्टमोदयः ॥१४९॥
सूर्यभान्मौलिभं गण्यं सप्तहीनं च शेषकम् ।
द्विगुणं च द्विहीनं च गतारात्रिःस्फुटाभवेत् ॥१५०॥
मस्तके मृगशीर्षे च मूले च नवमोदयः ।
अन्यदृक्षे तदा मूर्ध्नि यदा स्यादष्टमोदयः ॥ १५१ ॥

पूर्वाषाढ़ा, अनुराधा, ज्येष्ठा, आश्लेषा, रेवती और विशाखा, इन नक्षत्रों में से कोई नक्षत्र मस्तक पर हो तो आठवें नक्षत्र का उदय जानना। सूर्य के नक्षत्र से मस्तक के नक्षत्र तक गिने और उसमें सात का भाग दे। जो शेष बचे उसको दुगुना करके उसमें से दो घटावे तो गत रात्रि अथवा भोग्य होती है। मृगशिरा या मूल माथे पर हो तो नवम नक्षत्र का उदय होता है और जो अन्य नक्षत्र मस्तक पर हों तो आठवें नक्षत्र का उदय जानना चाहिए।

* दिन चढ़ता हो तो उतनी घड़ी दिन चढ़ा समझे और दोपहर के बाद उतनी घड़ी दिन बाकी समझे।

लग्नशुद्धि का परिहार

किं कुर्वन्ति ग्रहाः सर्वे यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः ।
मत्तमातङ्गयूथानां शतं हन्ति च केसरी ॥ १५२ ॥

जिसके केन्द्र (१।४।७।१०) में बृहस्पति हो उसका और ग्रह क्या कर सकते हैं । अर्थात् अन्य ग्रह अनिष्ट नहीं कर सकते । जैसे सैकड़ों हाथियों के समूह को अकेला सिंह भगा सकता है, वैसे ही अकेला बृहस्पति सब दोषों को दूर करता है ।

शुक्रो दशसहस्राणि बुधो दशशतानि च ।
लक्षमेकं तु दोषाणां गुरुर्लग्ने व्यपोहति ॥ १५३ ॥

यदि विवाहलग्न में शुक्र हो तो दस सहस्र दोषों का, बुध हो तो एक सहस्र दोषों का और बृहस्पति हो तो एक लाख दोषों का नाश करता है ।

त्रिनाड़ीचक्र

सर्पाकारं लिखेच्चक्रं विवाहे च त्रिनाडिकम् ।
अश्विनीप्रमुखं भं च दत्त्वासाम्यंविचारयेत् ॥१५४॥
एकनाडीस्थनक्षत्रे दम्पत्योर्मरणं ध्रुवम् ।
सेवायां च भवेद्धानिर्विवाहे त्वशुभं भवेत् ॥ १५५ ॥

विवाह में सर्पाकार त्रिनाडीचक्र लिखकर उस पर अश्विनी आदि २७ नक्षत्र क्रम से लिखे । यदि एक नाडी में वर-कन्या दोनों का जन्मनक्षत्र हो तो दोनों की मृत्यु होती है । सेवा में (नौकरी में) हानि होती है और विवाह में अशुभ होता है ।

सर्पाकार त्रिनाड़ी चक्र

योगों की वर्ज्य घटी

परिघार्द्धं व्यतीपातं वैधृतिं सकलं त्यजेत् ।
विष्कुम्भे घटिका पञ्च शूले सप्त प्रकीर्तिताः ॥१५६॥
षट्कं गण्डेऽतिगण्डे च नव व्याघातवज्रयोः ।
एतेतुनवयोगाश्च वर्ज्या लग्ने सदा बुधैः ॥ १५७ ॥

परिघयोग का अर्धभाग तथा व्यतीपात और वैधृति संपूर्ण त्याज्य हैं । विष्कुंभ की ५ घड़ी और शूल की ७ घड़ी तथा गण्ड और अतिगण्ड की ६ घड़ी, व्याघात और वज्र की ९ घड़ी वर्जित हैं । ये नव योग विवाहलग्न में सदा विद्वानों ने त्याज्य कहे हैं ।

वर्ज्य योगों का फल

व्यतीपाते भवेन्मृत्युर्गण्डान्ते मरणं ध्रुवम् ।
अग्निदग्धो भवेद्वज्रे रुजश्चैवापिगण्डके ॥ १५८ ॥
वैधव्यं वैधृतौ चैव विष्कुम्भे कामचारिणी ।
वीर्यहीने च गण्डे च व्याघाते मृतवत्सकाः ।
परिघे च भवेद्दासी मद्यमांसरता सदा ॥ १५९ ॥

व्यतीपात में विवाह करने से मृत्यु, गण्डान्त में भी मृत्यु, वज्र में अग्निदग्ध, गण्ड में रोग, वैधृति में वैधव्य, विष्कुंभ में स्वेच्छाचारिणी, अतिगण्ड में बलहीन, व्याघात में मृतवत्सा और परिघयोग में मदिरा-मांस का सेवन करनेवाली दासी होती है।

पट्टचक्र विचार

पट्टाकारं लिखेच्चक्रमष्टकोणसमन्वितम् ।
यस्मिन्नृक्षे भवेत्सूर्यस्तदाद्यं मध्यगत्रयम् ॥ १६० ॥
त्रयस्त्रयश्च सर्वत्र ततः पूर्वादितो लिखेत् ।
नक्षत्रत्रितये मध्ये पक्षद्वयविनाशनम् ॥ १६१ ॥
पूर्वस्थाने भवेल्लक्ष्मीर्धनधान्यसमागमः ।
अग्निकोणेभवेन्मृत्युर्नारीकुलविनाशिनी ॥१६२॥

दक्षिणे दुर्भगा नारी दारिद्र्यं मृत्युमाप्नुयात् ।
नैर्ऋत्ये पुत्रलाभश्च सुखं सौभाग्यमेव च ॥ १६३ ॥
पश्चिमे विधवा कन्या वायव्ये व्यभिचारिणी ।
उत्तरे धनधान्यानि ऐशान्ये सुखसम्पदौ ॥ १६४ ॥
माङ्गल्यं सर्वकार्येषु पट्टचक्रं विचारयेत् ।
गर्गाचार्येण संप्रोक्तं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥ १६५ ॥

इति श्रीकाशीनाथभट्टाचार्यकृतशीघ्रबोधे विवाहप्रकरणं समाप्तम् ।

पट्टाकार अष्टकोण चक्र बनावे। जिस नक्षत्र पर सूर्य हो उस नक्षत्र से तीन नक्षत्र उसके मध्य में स्थापित करके शेष नक्षत्र तीन-तीन करके पूर्वादि आठों दिशाओं में स्थापित करे। मध्य के ३ नक्षत्रों में विवाहनक्षत्र पड़े तो दोनों पक्षों का नाश हो, पूर्व के ३ नक्षत्रों में लक्ष्मी और धनधान्य की प्राप्ति हो, अग्निकोण में मृत्यु हो अथवा स्त्री कुलनाशिनी हो, दक्षिण में स्त्री दुर्भगा हो तथा दरिद्रता और मृत्यु हो, नैर्ऋत्य में पुत्र का लाभ, सुख और सौभाग्य हो, पश्चिम के नक्षत्रों में विवाह नक्षत्र पड़े तो कन्या विधवा हो, वायव्य के नक्षत्रों में व्यभिचारिणी हो, उत्तर के नक्षत्रों में धन-धान्य हो तथा ईशान्य के नक्षत्रों में विवाह नक्षत्र पड़े तो सुख-

संपत्ति हो। यह पट्टचक्र सब प्रकार के माङ्गलिक कार्यों में विचारना चाहिए। यह सब सिद्धियों का देनेवाला चक्र गर्गाचार्य ने कहा है।

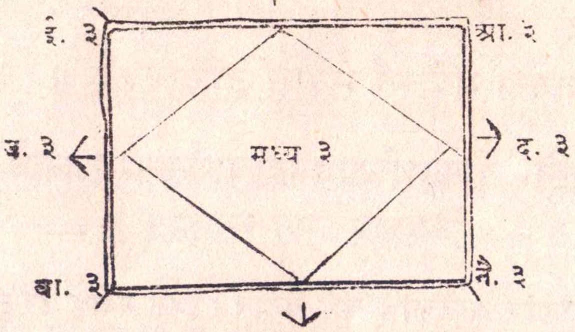

इति श्रीखूबचन्दशर्मविरचितायां सुबोधिनी-
भाषाटीकायां शीघ्रबोधस्य प्रथमं
प्रकरणं समाप्तम्।

—:०:—

॥ श्रीः ॥

दूसरा प्रकरण

द्विरागमनमुहूर्त

धातृयुग्मं हयो मैत्रं श्रुतियुग्मं करत्रयम्।
पुनर्वसुद्वयं पूषा मूलं चाप्युत्तरात्रयम्॥ १॥
विषमे वत्सरे मासे मार्गे मेषे च फाल्गुने।
मकरे मिथुने मीने लग्ने कन्यातुलाधनुः॥ २॥
भौमार्किवर्जिता वारा गृह्यन्ते च द्विरागमे।
षष्ठी रिक्ता द्वादशी च अमावास्या च वर्जिताः॥ ३॥

रोहिणी, मृगशिरा, अश्विनी, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाती, पुनर्वसु, पुष्य, पूर्वाषाढ़, मूल और तीनों उत्तरा ये नक्षत्र द्विरागमन में शुभदायक हैं। विषम संवत्सर (१।३।५।७ इत्यादि); वृश्चिक, कुंभ और मेष के सूर्य अर्थात् मार्गशीर्ष, फाल्गुन और वैशाख मास; मकर, मिथुन, मीन, कन्या, तुला और धन लग्न तथा शनि और मंगल को छोड़कर सब वार द्विरागमन में शुभ हैं। षष्ठी, रिक्ता (४।९।१४), द्वादशी और अमावास्या ये तिथियाँ द्विरागमन में वर्जित हैं।

अथ द्विरागमनार्थमुक्तनक्षत्रादिचक्र

रो.	मृ.	ऽश्वि.	ऽनु.	श्र.	ध.	ह.	चि.	स्वा.	नक्षत्र
पुन.	पु.	पू. षा.	मू.	उ. फा.	उ. षा.	उ. भा.	०	०	
१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	वर्ष
मार्गशीर्ष			फाल्गुन			वैशाख			मास.
मि.	क.	तु.	ध.	म.	मी.	०	०	०	लग्न.
र.	चं.	बु.	गु.	शु.	०	०	०	०	वार.
१	२	३	५	७	८	१०	११	३	तिथि.

पुंसवन तथा सीमन्तोन्नयन मुहूर्त्त

आर्द्रात्रयं आद्रयुग्मं मृगः पूषा श्रुतिः करः ।
मूलत्रयं गुरौ सूर्ये भौमे रिक्तां विना तिथिः ॥ ४ ॥
आद्यद्वये त्रये मासे लग्ने कन्याझषे स्थिरे ।
चापे पुंसवनं कुर्यात्सीमन्तं चाष्टमे तथा ॥ ५ ॥

आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, मृगशिरा, रेवती, श्रवण, हस्त, मूल, पूर्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़ इन नक्षत्रों में; बृहस्पति, रविवार और मंगलवार इन वारों में; रिक्तारहित तिथियों में; पहले, दूसरे और तीसरे महीने में; तथा कन्या, मीन, धन और स्थिर लग्न में पुंसवन कर्म करे। एवं पूर्वोक्त नक्षत्रादिकों में आठवें महीने में सीमन्तोन्नयन संस्कार करना शुभप्रद होता है।

गर्भाधान मुहूर्त्त

पुनर्वसुद्वयं चित्रा विशाखा भरणीद्वयम् ।
शुभे त्रिकोणे केन्द्रस्थे पापे षष्ठे त्रिलाभगे ॥
पुत्रकामः स्त्रियं गच्छेन्नरो युग्मासु रात्रिषु ॥ ६ ॥

पुनर्वसु, पुष्य, चित्रा, विशाखा, भरणी और कृत्तिका, इन नक्षत्रों में तथा त्रिकोण (९।५) और केन्द्र (१।४।७।१०) में शुभ ग्रहों के रहते, एवं छठे, तीसरे और ग्यारहवें पापग्रहों के रहते पुत्र की इच्छा से युग्म (सम) रात्रियों में स्त्री-गमन करे।

नामकरणमुहूर्त्त

पुनर्वसुद्वये हस्तत्रये मैत्रद्वये मृगे ।
मूलोत्तराधनिष्ठासु द्वादशैकादशे दिने ॥ ७ ॥
अन्यत्रापि शुभे योगे वारे बुधशशाङ्कयोः ।
भानोर्गुरोः स्थिरे लग्ने बालनामकृतं शुभम् ॥ ८ ॥

पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, मृगशिरा, मूल, उत्तरा और धनिष्ठा इन नक्षत्रों में, तथा ग्यारहवें या बारहवें दिन में, शुभ योग में, बुधवार, सोमवार, रविवार और बृहस्पतिवार इन दिनों में, तथा स्थिर लग्न में बालक का नामकरण करे।

वहिर्निष्कासनमुहूर्त्त

मैत्रत्रये हरिद्वन्द्वे विधिद्वन्द्वेऽदितिद्वये ।
स्वाती हस्तोत्तराषाढापूषार्यमहयेषु च ॥ ९ ॥
सिंहत्रये घटे लग्ने मासयोस्त्रिचतुर्थयोः ।
यात्रातिथौचनिष्कास्यः शिशुर्नैवार्कभौमयोः ॥ १० ॥

अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, स्वाती, हस्त, उत्तराषाढ़, रेवती, उत्तराफाल्गुनी वा अश्विनी नक्षत्र में तथा सिंह, कन्या, तुला वा कुम्भ लग्न में एवं तीसरे वा चौथे महीने में तथा यात्रोक्त तिथियों में और रविवार तथा मंगलवार से रहित दिन में बालक को घर से बाहर निकालना शुभदायक होता है।

सूतिकास्नानमुहूर्त्त

पुनर्वसुद्वयं चित्रा विशाखा भरणीद्वयम् ।
मूलमार्द्रा मघा हेया श्रवणो दशमस्तथा ॥ ११ ॥
सोमशुक्रबुधा नारी प्रसूतास्नानकर्मणि ।
हेया प्रतिपदा षष्ठी नवमी च तिथिक्षयम् ॥ १२ ॥

पुनर्वसु, पुष्य, चित्रा, विशाखा, भरणी, कृत्तिका, मूल, आर्द्रा, मघा और श्रवण ये दश नक्षत्र, तथा सोमवार, शुक्रवार और बुधवार ये दिन; एवं प्रतिपदा, षष्ठी, नवमी और क्षयतिथि ये तिथियाँ प्रसूतिका के स्नान में वर्जित हैं।

स्त्रीनवाम्बरधारणमुहूर्त्त

हस्तादिपञ्चके ऽश्विन्यां धनिष्ठायां च रेवती ।
पुष्ये पुनर्वसुद्वन्द्वे रोहिण्युत्तरभेषु च ॥ १३ ॥
गुरौ शुक्रे बुधे वारे धार्यं स्त्रीभिर्नवाम्बरम् ।
लग्ने मीने च कन्यायां मिथुने च वृषे शुभः ॥ १४ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, अश्विनी, धनिष्ठा, रेवती, पुष्य, पुनर्वसु, रोहिणी और तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में; तथा बृहस्पति, शुक्र और बुधवार में; वृष, मिथुन, कन्या और मीन इन लग्नों में स्त्री नये वस्त्र धारण करे तो शुभ होता है।

प्रसूतिकास्नान और जलपूजनमुहूर्त्त

रोहिण्युत्तररेवत्योर्मूलं स्वात्यनुराधयोः ।
धनिष्ठा च त्रयः पूर्वा ज्येष्ठायां मृगशीर्षके ॥ १५ ॥
एते यात्रागता भानि प्रसूतिस्नानकोविदैः ।
वारे भौमार्कयोर्जीवे स्नानमुक्तं सदैव हि ॥ १६ ॥
मूलादितिद्वयं ग्राह्यं श्रवणश्च मृगः करः ।
जलवाप्यर्चने हेयाः शुक्रमंदार्कभूमिजाः ॥ १७ ॥

रोहिणी, तीनों उत्तरा, रेवती, मूल, स्वाती, अनुराधा, धनिष्ठा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा और मृगशिरा नक्षत्र तथा रविवार, मंगलबार और बृहस्पतिवार प्रसूतिकास्नान में विद्वानों ने शुभ कहे हैं। मूल, पुष्य, पुनर्वसु, श्रवण, मृगाशिरा और हस्त ये नक्षत्र प्रसूतिका स्त्री को जलकूपआदि के पूजन में शुभ हैं तथा शुक्र, शनैश्चर, रबिवार और मंगल इनको छोड़कर शेष वारों में जलपूजा शुभ है।

नवान्नभक्षणमुहूर्त्त

नवान्नभोजने ग्राह्यं वस्त्रे प्रोक्तमशेषतः।
वाराधिकौ सूर्यसोमौ नक्षत्रं श्रवणो मृगः॥ १८॥

वस्त्र धारण करने के मुहूर्त्त में तथा उससे विशेष रविवार और सोमवार तथा श्रवण और मृगशिरा नक्षत्रों में नवान्न भोजन करना शुभ है।

अन्नप्राशनमुहूर्त्त

आद्यान्नप्राशने पूर्वा सर्पार्द्रा वरुणोयमः।
नक्षत्राणि परित्याज्यौ वारौ भौमार्कनन्दनौ॥१९॥
द्वादशीसप्तमीरिक्ता पर्वनंदास्तु वर्जिताः।
लग्नेषु च झषो ग्राह्यो वृषः कन्या च मन्मथः॥२०॥
शुक्लपक्षे शुभे योगे संग्राह्यः शुभचन्द्रमाः।
मासे षष्ठाष्टमे पुंसां स्त्रियो मासि च पञ्चमे॥ २१॥

तीनों पूर्वा, अश्लेषा, आर्द्रा, शतभिषा और भरणी ये नक्षत्र; मंगल और शनिवार ये वार; द्वादशी, सप्तमी, रिक्ता (४,९,१४), अमावस्या, नन्दा (१,६,११) तिथि ये सब प्रथम अन्नप्राशन में वर्जित हैं। वृष, मिथुन, कन्या और मीन इन लग्नों में; शुक्लपक्ष में; शुभ योग में; शुभ चन्द्रमा में; छठे और आठवें महीने में बालकों का तथा पाँचवें महीने में कन्याओं का अन्नप्राशन शुभ है।

चूडाकर्ममुहूर्त्त

पुनर्वसुद्वयं ज्येष्ठा मृगश्च श्रवणद्वयम्।
हस्तत्रये च रेवत्यां शुक्लपक्षोत्तरायणे॥ २२॥
लग्नं गोस्त्रीधनुःकुम्भौ मकरो मन्मथस्तथा।
सौम्यवारे शुभे योगे चूडाकर्म स्मृतं बुधैः॥ २३॥

पुनर्वसु, पुष्य, ज्येष्ठा, मृगशिरा, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाती और रेवती ये नक्षत्र तथा शुक्लपक्ष, उत्तरायण और वृष, कन्या, धनु, कुंभ, मकर और मिथुन ये लग्न; सौम्यवार (चन्द्र, बुध, बृहस्पति और शुक्रवार) तथा शुभयोग में विद्वानों ने चूडाकर्म शुभ कहा है।

विद्यारम्भमुहूर्त्त

हस्तत्रये हरिद्वन्द्वे पूर्वा च मृगपञ्चके।
मूले पौष्णे च नक्षत्रे बुधेऽर्के गुरुशुक्रयोः॥ २४॥

देवोत्थाने मीनचापे लग्ने वर्षे च पञ्चमे ।
विद्यारंभोऽत्रवर्ज्यश्च पठनाध्यायरिक्तकाः ॥ २५ ॥
रिक्तायां च अमावास्यां प्रतिपच्च विवर्जयेत् ।
बुधेन्दुवासरे मूर्खः शनिभौमौ मृतिप्रदौ ॥ २६ ॥
विद्यारम्भे गुरुः श्रेष्ठो मध्यमौ भृगुभास्करौ ।
बुधेन्दू चोपविद्यायां शनिभौमौ परित्यजेत् ॥ २७ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, तीनों पूर्वा, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मूल और रेवती इन नक्षत्रों में; देवोत्थानी एकादशी से आषाढ़शुक्ल एकादशी पर्यन्त समय में, मीन और धनु लग्न में तथा पाँचवें वर्ष में विद्यारम्भ करना शुभ है। अष्टमी, रिक्ता (४,९,१४), अमावस्या और प्रतिपदा ये अनध्याय तिथियाँ विद्यारम्भ में वर्जित हैं। बुध और सोमवार को विद्यारम्भ करे तो मूर्ख हो, शनि और मंगलवार को विद्यारम्भ करे तो मृत्यु हो। विद्यारम्भ में बृहस्पतिवार शुभ है, रविवार और शुक्र मध्यम हैं। उपविद्या में बुध और सोमवार ग्राह्य हैं और शनि तथा मंगल सर्वत्र त्याज्य हैं।

यज्ञोपवीतमुहूर्त्त

पूर्वाषाढाश्विनीहस्तत्रये च श्रवणत्रये ।
ज्येष्ठा भगे मृगे पुष्ये रेवत्यां चोत्तरायणे ॥ २८ ॥

द्वितीयायां तृतीयायां पञ्चम्यां दशमीत्रये ।
सूर्यशुक्रसुराचार्ये वारे पक्षे तथा सिते ॥ २९ ॥
लग्ने वृषे धनुः सिंहे कन्यामिथुनयोरपि ।
व्रतबन्धः शुभे योगे ब्रह्मक्षत्रविशाम्पतेः ॥ ३० ॥

पूर्वाषाढ, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, ज्येष्ठा, पूर्वाफाल्गुनी, मृगशिरा, पुष्य और रेवती ये नक्षत्र; उत्तरायण तथा द्वितीया, तृतीया, पंचमी, दशमी, एकादशी और त्रयोदशी ये तिथियाँ; रविवार, शुक्रवार तथा बृहस्पतिवार; शुक्लपक्ष; एवं वृष, धनु, सिंह कन्या और मिथुन लग्न; शुभ योग इनमें ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों को यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए।

ग्रहों की शुभाशुभसंज्ञा

पापो भौमः शनिः केतुः क्रूरो राहु रविस्तथा ।
सौम्यः सोमो बुधश्चैव गुरुः शुक्रस्तथैव च ॥ ३१ ॥

मंगल, शनि और केतु पापग्रह हैं। राहु और रवि क्रूर ग्रह हैं। सोम, बुध, बृहस्पति और शुक्र सौम्य हैं।

कर्णवेधमुहूर्त्त

श्रुतित्रयेऽदितिद्वन्द्वे मैत्रे हस्तत्रयोत्तरे ।
भगे विधियुगे मूले पूषाश्वे सौम्यवासरे ॥ ३२ ॥

द्विस्वभावे घटे लग्ने कर्णवेधः प्रशस्यते ।
चैत्रपौषौ हरिस्वापं वर्षं च युगलं त्यजेत् ॥ ३३ ॥

श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पुनर्वसु, पुष्य, अनुराधा, हस्त, तीनों उत्तरा, पूर्वाफाल्गुनी, रोहिणी, मृगशिरा, मूल, रेवती और अश्विनी नक्षत्र; सौम्यवार (चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र), द्विस्वभाव (मिथुन, कन्या, धनु, मीन) और कुंभ लग्न कर्णवेध में शुभ हैं। चैत्र, पौष तथा हरिशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्त्तिक शुक्ल ११ तक), और समवर्ष इनका त्याग करना चाहिए ।

वास्तुकर्ममुहूर्त्त

पूर्वाषाढादितिद्वन्द्वं विधियुग्मं हरित्रयम् ।
उत्तराफाल्गुनी हस्तत्रयं मूलं च रेवती ॥ ३४ ॥
मैत्राश्विनी च लग्नानि सिंहः कन्या घटो वृषः ।
मिथुनं मकरो ग्राह्यं वास्तुकर्मणि कोविदैः ॥ ३५ ॥
श्रावणश्चैव वैशाखः कार्त्तिकः फाल्गुनस्तथा ।
मासेषु मार्गशीर्षश्च वास्तुकर्मणि शस्यते ॥ ३६ ॥
वज्रव्याघातशूलानि व्यतीपातश्च गण्डकः ।
विष्कुम्भपरिघौ वर्ज्यौ वारो भौमश्च भास्करः ॥३७॥

पूर्वाषाढ़, पुनर्वसु, पुष्य, रोहिणी, मृगशिरा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, मूल, रेवती, अनुराधा और अश्विनी नक्षत्र तथा सिंह, कन्या, कुम्भ, वृष, मिथुन और मकर लग्न विद्वान् लोग वास्तुकर्म में ग्रहण करें। श्रावण, वैशाख, कार्त्तिक, फाल्गुन और मार्गशीर्ष (अगहन) ये महीने वास्तुकर्म में शुभ हैं। वज्र, व्याघात, शूल, व्यतीपात, गण्ड, विष्कुम्भ और परिघ योग तथा रविवार और मंगलवार वास्तुकर्म में वर्जित हैं।

सुरप्रतिष्ठामुहूर्त्त

आर्द्रा शतभिषाश्लेषा विशाखा भरणीद्वयम् ।
त्याज्यौ च द्वादशी रिक्ता षष्ठी चंद्रक्षयोऽष्टमी ॥ ३८॥
प्रतिपच्च तिथिर्वारो त्याज्यौ शनिकुजौ तथा ।
देवमूर्तिप्रतिष्ठायां स्थिरे लग्नोत्तरायणे ॥ ३९ ॥

आर्द्रा, शतभिषा, अश्लेषा, विशाखा, भरणी और कृत्तिका नक्षत्र तथा द्वादशी, रिक्ता (४,९,१४), छठि, अमावस, अष्टमी और प्रतिपदा ये तिथियाँ तथा शनि और मंगलवार देवप्रतिष्ठा में वर्जित हैं। इनके अतिरिक्त नक्षत्रों तिथियों और वारों में, स्थिर लग्नों में तथा उत्तरायण में देवमूर्ति की स्थापना करनी चाहिए ।

गृहप्रवेशमुहूर्त्त

विशाखा भरणी हेयाश्लेषाख्या च मृगस्तथा ।
अमावस्या च रिक्ता च वारे भौमे रवौ तथा ॥४०॥
गृहप्रवेशो वैशाखे श्रावणे फाल्गुने तथा ।
आश्विने च स्थिरतनुर्ग्राह्यः पक्षो बुधैः सितः ॥४१॥

विशाखा, भरणी, अश्लेषा और मृगशिरा नक्षत्र; अमावस्या और रिक्ता तिथि; रविवार और मंगलवार गृहप्रवेश में वर्जित हैं। शेष ग्राह्य हैं। वैशाख, श्रावण, फाल्गुन और आश्विन महीना; स्थिर लग्न और शुक्लपक्ष विद्वानों ने शुभ बताया है।

हलप्रवाहमुहूर्त्त

अनुराधाचतुष्कं च मघादितियुगे करे ।
स्वातिश्रुतिविधिद्वन्द्वे रेवत्यामुत्तरात्रये ॥ ४२ ॥
गोस्त्री झषे हलं कार्यं हेयः सूर्यश्शनिः कुजः ।
षष्ठी रिक्ता द्वादशी च द्वितीयाद्वयपर्व च ॥ ४३ ॥
त्रिभिस्त्रिभिस्त्रिभिः पञ्चत्रिभिः पञ्चत्रिभिर्द्वयम् ।
सूर्यभाद्दिनभं यावद्धानिर्वृद्धिर्हले क्रमात् ॥ ४४ ॥

अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, मघा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाती, श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा, रेवती और तीनों उत्तरा तथा वृष, कन्या और मीन लग्न हलप्रवाह में शुभ हैं। रविवार, शनिवार और मंगलवार; षष्ठी, रिक्ता (४,९,१४), द्वादशी, द्वितीया, पूर्णिमा और अमावस्या हलप्रवाह में अशुभ हैं। सूर्य के नक्षत्र से हलप्रवाह के नक्षत्र तक गिने। उनमें ३ अशुभ, ३ शुभ, ३ अशुभ, ५ शुभ, ३ अशुभ, ५ शुभ, ३ अशुभ और २ शुभ क्रम से होते हैं।

यात्रामुहूर्त्त

अनुराधात्रयं हस्तमृगाश्वौ चादितिद्वयम् ।
यात्रायां रेवती शस्ता निन्द्याद्राभरणीद्वयम् ॥४५॥
मघोत्तरा विशाखा च सर्पश्चान्ये च मध्यमाः ।
षष्ठी रिक्ता द्वादशी च पर्वाणि च विवर्जयेत् ॥४६॥
लग्नं कन्या मन्मथश्च मकरश्च तुलाधरः ।
यात्रा चंद्रबले कार्या शकुनं च विचारयेत् ॥ ४७॥

अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, हस्त, मृगशिरा, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य और रेवती नक्षत्र यात्रा में शुभ हैं। आर्द्रा, भरणी, कृत्तिका, मघा, तीनों उत्तरा, विशाखा और अश्लेषा नक्षत्र यात्रा में निन्द्य हैं। शेष नक्षत्र मध्यम हैं। छठि,

रिक्ता (४,९,१४), द्वादशी, अमावस्या और पूर्णमासी त्याज्य हैं। कन्या, मिथुन, मकर और तुला लग्न यात्रा में शुभ हैं। चन्द्रमा बली हो और उत्तम शकुन हों तब यात्रा करनी चाहिए।

दिशाशूलज्ञान

शनौ चन्द्रे त्यजेत्पूर्वां दक्षिणां च दिशं गुरौ।
सूर्यशुक्रौ पश्चिमायां बुधे भौमे तथोत्तराम् ॥४८॥

शनिवार और सोमवार को पूर्वदिशा में, बृहस्पतिवार को दक्षिण में, रविवार और शुक्रवार को पश्चिम में तथा बुधवार और मंगलवार को उत्तर दिशा में दिक्शूल होने से यात्रा वर्जित है।

सर्वदिग्गमन के नक्षत्र

सर्वदिग्गमने हस्तः पूपाश्वौ श्रवणो मृगः।
सर्वसिद्धिकरः पुष्यो विद्यायां च गुरुर्यथा ॥ ४९ ॥

सब दिशाओं में गमन करने के लिए हस्त, रेवती, अश्विनी, श्रवण और मृगशिरा नक्षत्र शुभ हैं। जैसे विद्यारम्भ में गुरुवार शुभ है वैसे ही यात्रा में पुष्य नक्षत्र; पुष्य में यात्रा करने से सब काम सिद्ध होते हैं।

योगिनी विचार

प्रतिपत्सु नवम्यां च पूर्वस्यां दिशि योगिनी।
अग्निकोणे तृतीयायामेकादश्यां तु सा स्मृता ॥५०॥
त्रयोदश्यां च पञ्चम्यां दक्षिणस्यां शिवप्रिया।
द्वादश्यां च चतुर्थ्यां च नैर्ऋत्यकोणगामिनी ॥५१॥
चतुर्दश्यां च षष्ठ्यां च पश्चिमायां च योगिनी।
पूर्णिमायां च सप्तम्यां वायुकोणे तु पार्वती ॥ ५२ ॥
दशम्यां च द्वितीयायामुत्तरस्यां शिवा वसेत्।
ईशान्यां दर्शे चाष्टम्यां योगिनी समुदाहृता ॥ ५३॥

प्रतिपदा और नवमी को पूर्वदिशा में, तृतीया और एकादशी को अग्निकोण में, पंचमी और त्रयोदशी को दक्षिण में, चौथि और द्वादशी को नैर्ऋत्य में, छठि और चतुर्दशी को पश्चिम में, सप्तमी और पूर्णमासी को वायव्य में, द्वितीया और दशमी को उत्तर में तथा अमावस्या और अष्टमी को ईशान में योगिनी वास करती है।

योगिनीवासफल

योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे वांछितदायिनी।
दक्षिणे धनहन्त्री च सम्मुखे मरणप्रदा ॥ ५४ ॥

चन्द्रवासज्ञान

चन्द्रश्चरति पूर्वादिक्रमेषु दिक्चतुष्टयम् ।
मेषादिकेषु यात्रायां सम्मुखे दक्षिणे शुभः ॥ ६३ ॥

मेषे च सिंहे धनुपूर्वभागे
वृषे च कन्यामकरे च याम्ये ।
युग्मे तुलाकुम्भसु पश्चिमायां
कर्कालिमीने दिशि चोत्तरस्याम् ॥ ६४ ॥

पूर्व आदि चारों दिशाओं में चन्द्रमा क्रम से घूमता है। वह सम्मुख और दक्षिण शुभ होता है। मेष, सिंह और धनु का चन्द्रमा पूर्व में; वृष, कन्या और मकर का दक्षिण में, मिथुन, तुला और कुम्भ का पश्चिम में तथा कर्क, वृश्चिक और मीन का चन्द्रमा उत्तर में वास करता है।

चन्द्रफल

सम्मुखे त्वर्थलाभाय पृष्ठे चन्द्रे धनक्षयः ।
दक्षिणे सुखसम्पत्तिर्वामे तु मरणं भवेत् ॥ ६५ ॥

सम्मुख चन्द्रमा में धन का लाभ, पीठपीछे धन का नाश, दक्षिण चन्द्रमा में सुख और सम्पत्ति तथा बायें चन्द्रमा में गमन करने से मृत्यु होती है।

रविवास

यामयुग्मे च रात्रौ च वामे पूर्वादिगो रविः ।
यात्रायां दक्षिणे वामे प्रवेशे पृष्ठके द्वयम् ॥ ६६ ॥

सूर्योदय से एक प्रहर पहले से एक प्रहर दिन चढ़े तक सूर्य पूर्व में रहते हैं। इसके पश्चात् दो प्रहर तक दक्षिण में, फिर दो प्रहर पश्चिम में, फिर दो प्रहर तक अर्थात् अर्ध-रात्रि के बाद एक प्रहर तक सूर्य उत्तर में रहते हैं।

कुलिकमुहूर्त्त

मनुभानुदिशासर्परसवेदाश्विनः क्रमात् ।
रविवारान्मुहूर्तोऽयं कुलिको निन्दितः शुभे ॥ ६७ ॥

रविवार को चौदहवाँ, सोमवार को बारहवाँ, मंगलवार को दशवाँ, बुधवार को आठवाँ, बृहस्पतिवार को छठा, शुक्रवार को चौथा और शनिवार को दूसरा मुहूर्त्त कुलिक-संज्ञक होता है। शुभ काम में कुलिक मुहूर्त्त अशुभ है।

कालहोरा

गता नाड्यो द्विगुणिताः पञ्चभिश्चविभाजिताः ।
शेषं त्याज्यंयुतश्चैकः सप्तशेषे प्रशंसितम् ॥ ६८ ॥
कालहोरेति विख्यातं सौम्ये सौम्यफलप्रदा ।
सूर्यशुक्रबुधश्चन्द्रो मन्दजीवकुजाः क्रमात् ॥ ६९ ॥

मानसनक्षत्र पर सूर्य हो तथा जन्मनक्षत्र पर मंगल और चन्द्रमा हो तो एक वर्ष और ३ मासों में मृत्यु होती है ॥ ३०३ ॥

जन्मर्क्षगः स्याद्यदि भूमिपुत्रः
कर्मर्क्षगौ सूर्यनिशाधिनाथौ ।
चतुर्दिनैः स्यान्मरणं नरस्य
जलेन वा मासचतुष्टयेन ॥ ३०४ ॥

जन्मनक्षत्र पर मंगल हो तथा कर्मनक्षत्र पर सूर्य और चन्द्रमा हो तो ४ दिनों में वा ४ मासों में जल के योग से मृत्यु होती है ॥ ३०४ ॥

कर्मर्क्षगः स्याद्यदि भूमिपुत्रः
संघातिके रात्रिपवासरेशौ ।
भल्लूसकाशान्मरणं नरस्य
तथा भवेन्मासचतुष्टयेन ॥ ३०५ ॥

कर्मनक्षत्र पर मंगल हो तथा संघातिकनक्षत्र पर सूर्य और चन्द्रमा हो तो ४ मासों में रीछ से मृत्यु होती है ॥ ३०५ ॥

संघातिकस्थो यदि भूमिपुत्रः
सूर्यः शशिश्चोदयऋक्षयातौ ।
व्याधेः सकाशान्मरणं नरस्य
संवत्सराद्ये च भवेच्च नूनम् ॥ ३०६ ॥

संघातिकनक्षत्र पर मंगल हो तथा उदयनक्षत्र पर सूर्य और चन्द्रमा हो तो संवत्सर के आदि में निश्चय रोग से मृत्यु होती है ॥ ३०६ ॥

उदयर्क्षसंस्थो यदि भूमिपुत्रो
वैनाशिकस्थौ रविरात्रिनाथौ ।
अजीर्णतः स्यान्मरणं नरस्य
क्षुधाक्षयारोचकतः क्रमेण ॥ ३०७ ॥

उदयनक्षत्र पर मंगल हो तथा वैनाशिकनक्षत्र पर सूर्य और चन्द्रमा हो तो अजीर्ण वा मन्दाग्नि वा अरुचि से मृत्यु होती है।। ३०७ ।।

वैनाशिकस्थो यदि भूमिपुत्रः
सूर्यर्क्षपेशौ तु मनःप्रयातौ ।
व्याधेः सकाशान्मरणं नरस्य
संवत्सरान्ते भवतीह नूनम् ।। ३०८ ।।

वैनाशिकनक्षत्र पर मंगल तथा मानसनक्षत्र पर सूर्य और चन्द्रमा हो तो रोग के होने से १ वर्ष में निश्चय मृत्यु होती है ।। ३०८ ।।

मनःस्थितः स्याद्यदि भूमिपुत्रो
जन्मर्क्षगौ भास्कररात्रिनाथौ ।
प्राणादिघातश्च भवेन्नरस्य
षण्मासमध्ये कथितो मुनीन्द्रैः ।। ३०९ ।।

मानसनक्षत्र पर यदि मंगल हो तथा जन्मनक्षत्र पर सूर्य और चन्द्रमा हो तो प्राणादि का घात ६ महीनों के भीतर मुनिजनों ने कहा है ।। ३०९ ।।

जन्मर्क्षगः स्याद्यदि सूर्यसूनुः
कर्मर्क्षगौ भूमिजरात्रिनाथौ ।
मासैस्त्रिभिः स्यान्मरणं नरस्य
शस्त्रप्रहारैरथवाऽऽत्मघातैः ।। ३१० ।।

जन्मनक्षत्र पर शनि हो तथा कर्मनक्षत्र पर मंगल और चन्द्रमा हो तो शस्त्र के लगने से वा आत्मघात करने से ३ मास में मृत्यु होती है ।। ३१० ।।

कर्मर्क्षगः स्याद्यदि सूर्यसूनुः
संघातिकस्थौ कुजरात्रिनाथौ ।

यो वारो यत्र दिवसे तदादि गणयेत्क्रमात् ।
शुभग्रहस्य सुखदो मुहूर्तोऽनिष्टदुःखदः ॥ ७० ॥

सूर्योदय से गत घड़ियों को द्विगुणित करके पाँच का भाग दे। जो शेष बचे उसको त्याग दे। लब्धि में एक और जोड़कर सात का भाग दे। जो शेष बचे उसे क्रम से सूर्य, शुक्र, बुध, चन्द्रमा, शनि, बृहस्पति और मंगल का कालहोरा जाने। सौम्य ग्रह का कालहोरा शुभ फल और अशुभ ग्रह का कालहोरा अशुभ फल देता है। जिस दिन का कालहोरा जानना हो उसी दिन के क्रम से कालहोरा की गणना करनी चाहिए।

अङ्कमुहूर्त्त

तिथिर्वारं च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम् ।
द्वित्रिचतुर्भिर्गुणितं रससप्ताष्टभाजितम् ॥ ७१ ॥
आदिशून्ये भवेद्धानिर्मध्यशून्ये रिपोर्भयम् ।
अन्त्यशून्ये भवेन्मृत्युः सर्वाङ्के विजयी भवेत् ॥७२॥

तिथि, वार, नक्षत्र और पृच्छक के नाम के अक्षरों को जोड़कर उसे ३ जगह रक्खे। पहले को २ से गुणा कर ६ का भाग दे, दूसरे को ३ से गुणा कर ७ का भाग दे और तीसरे को ४ से गुणा कर आठ का भाग दे। पहले में

शून्य बचे तो हानि, बीच वाले में शून्य बचे तो शत्रु से भय और अन्त्य में शून्य बचे तो मृत्यु हो और सब जगह अंक बचें तो विजयी हो।

चन्द्र और रवि-स्वर का फल

शशिप्रवाहे गमनादि शस्तं
सूर्यप्रवाहे नहि किञ्चनोऽपि ।
प्रष्टुर्जयः स्याद्वहमानभागे
रिक्ते च भागे विफलं समस्तम् ॥ ७३ ॥

बायाँ स्वर चन्द्रमा का है। वह स्वर चलता हो तो गमन आदि शुभ होते हैं। दाहिना स्वर सूर्य का है, वह चलता हो तो गमन आदि अशुभ होते हैं। जिधर का स्वर चलता हो यदि उसी ओर पूछनेवाला हो तो कार्य सिद्ध होता है तथा खाली स्वर की ओर पूछनेवाला हो तो सब कार्य निष्फल होते हैं।

सम्मुखादि शुक्र का फल

दक्षिणे दुःखदः शुक्रः सम्मुखे हन्ति लोचनम् ।
वामे पृष्ठे शुभो नित्यं रोधयेच्चास्तगः शुभम् ॥७४॥

यात्रा में शुक्र दाहिने हो तो दुःख देता है, सम्मुख हो तो नेत्रों को अनिष्ट करता है। बायें और पीठपीछे हो तो शुभ है। अस्त शुक्र में शुभ काम वर्जित हैं।

क्रयविक्रय मुहूर्त्त

पुष्ये भाद्रपदायुग्मं मैत्रश्रवणमश्विनी ।
हस्तोत्तरामृगस्वाती तथाश्लेषा च रेवती ॥७५॥
ग्राह्याणि भानि चैतानि क्रयविक्रयणे बुधैः ।
चन्द्रभार्गवजीवाश्च वाराः शकुनमुत्तमम् ॥७६॥

पुष्य, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, अनुराधा, श्रवण, अश्विनी, हस्त, तीनों उत्तरा, मृगशिरा, स्वाती, अश्लेषा और रेवती इन नक्षत्रों में तथा सोमवार, शुक्रवार और बृहस्पति इन वारों में अच्छा शकुन देखकर क्रय (खरीदना) और विक्रय (बेचना) करना चाहिए ।

पञ्चकों में त्याज्य कर्म

धनिष्ठापञ्चकं त्याज्यं तृणकाष्ठादिसंग्रहे ।
त्याज्या दक्षिणदिग्यात्रा गृहाणां छादनं तथा ॥

धनिष्ठा से रेवती पर्यन्त पाँच नक्षत्र पंचक कहलाते हैं । इनमें तृण-काष्ठ आदि का संग्रह करना, दक्षिण दिशा की यात्रा करना तथा घर छावना (खाट बिनना और प्रेत का दाह करना) आदि वर्जित हैं ।

तैलाभ्यङ्ग

तैलाभ्यङ्गे रवौ तापः सोमे शोभा कुजे मृतिः ।
बुधे धनं गुरौ हानिः शुक्रे दुःखं शनौ सुखम् ॥७७॥

रविवार को तेल लगावे तो ताप, सोमवार को शोभा, मंगलवार को मृत्यु, बुधवार को धन, बृहस्पतिवार को हानि, शुक्रवार को दुःख तथा शनिवार का तेल लगाने से सुख होता है ।

तैलाभ्यङ्ग का परिहार

रवौ पुष्पं गुरौ दूर्वा भौमवारे च मृत्तिका ।
गोमयं शुक्रवारे च तैलाभ्यंगे न दोषभाक् ॥ ७९ ॥

रविवार को पुष्प, बृहस्पति को दूब, मंगल को मिट्टी और शुक्रवार को गोबर डालकर तैल लगावे तो दोष नहीं है ।

वधूप्रवेशमुहूर्त्त

हस्तत्रये ब्रह्मयुगे मघायां
पुष्ये धनिष्ठाश्रवणोत्तरेषु ।
मूलानुराधाहयरेवतीषु
स्थिरेषु लग्नेषु वधूप्रवेशः ॥ ८० ॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, रोहिणी, मृगशिरा, मघा, पुष्य, धनिष्ठा, श्रवण, तीनों उत्तरा, मूल, अनुराधा, अश्विनी और रेवती इन नक्षत्रों में तथा स्थिर (वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ) लग्नों में वधूप्रवेश शुभ होता है ।

रोगीस्नानमुहूर्त्त

अश्लेषाद्वितयं स्वाती रोहिणी च पुनर्वसुः ।
रोगिस्नाने रेवती च वर्जयेदुत्तरात्रयम् ॥ ८१ ॥
रिक्तातिथौ चरे लग्ने वारे च रविभौमयोः ।
स्नानं च रोगिणां प्रोक्तं द्विजभोजनसंयुतम् ॥८२॥

अश्लेषा, मघा, स्वाती, रोहिणी, पुनर्वसु, रेवती और तीनों उत्तरा ये नक्षत्र रोगी को प्रथम स्नान कराने में वर्जित हैं। रिक्ता तिथि (४,९,१४), चरलग्न (मेष, कर्क, तुला, मकर), रविवार और मंगलवार इनमें ब्राह्मणों को भोजन कराकर रोगी को स्नान कराना शुभ है (चन्द्रमा भी शुभ होना चाहिए)।

आनन्दादियोग

आनंदः कालदंडश्च धूम्राक्षश्च प्रजापतिः ।
सौम्यध्वांक्षौ ध्वजश्चापि श्रीवत्सो वज्रमुद्गरौ ॥८३॥
छत्रं मित्रं मानसाख्यं पद्माख्यं लुम्बकस्तथा ।
उत्पातमृत्युकाणाश्च सिद्धिश्चाथशुभोऽमृतः ॥ ८४ ॥
मुसलं गदमातंगराक्षसाश्च चरः स्थिरः ।
वर्धमानश्च विज्ञेयो अष्टाविंशतिरित्यपि ॥ ८५ ॥

फलं तु नामसदृशं योगा दैवज्ञभाषिताः ।
अश्विनी रविवारे च योगो ह्यानन्दसंज्ञकः ॥ ८६ ॥
मृगशीर्षे शीतरश्मिः श्लेषायां क्षितिनंदनः ।
बुधे हस्तोऽनुराधा च देवराजपुरोहिते ॥ ८७ ॥
भार्गवे चोत्तराषाढा शनौ शतभिषा यदा ।
तदानंदाख्ययोगः स्यात्कालदंडादयः क्रमात् ॥८८॥

आनन्द, कालदण्ड, धूम्राक्ष, प्रजापति, सौम्य, ध्वांक्ष, ध्वज, श्रीवत्स, वज्र, मुद्गर, छत्र, मित्र, मानस, पद्म, लुम्बक, उत्पात, मृत्यु, काण, सिद्धि, शुभ, अमृत, मुसल, गद, मातंग, राक्षस, चर, स्थिर और वर्धमान ये अट्ठाईस योग हैं। ज्योतिषियों ने इनके फल नामानुसार कहे हैं।

रविवार को अश्विनी, सोमवार को मृगशिरा, मंगलवार को अश्लेषा, बुधवार को हस्त, बृहस्पति को अनुराधा, शुक्रवार को उत्तराषाढ़ और शनिवार को शतभिषा हो तो आनन्दयोग होता है। इसी क्रम से रविवार को भरणी, सोमवार को आर्द्रा हो तो कालदंडयोग होता है। इसी प्रकार शेष योग जानना।

आनन्दादि योगचक्र

सू.	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	अश्ले	म.	पू.	उ.	ह.	चि.
चं.	मृ.	आ.	पु.	पु.	श्ले	म.	पू.	उ.	ह.	चि.	स्वा	वि.	अनु	ज्ये.
मं.	श्ले	म.	पू.	उ.	ह.	चि.	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	अ.
बु.	ह.	चि.	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	अभि	श्र.	ध.	श.	पू.
बृ.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	अ.	श्र.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.	अ.	भ.
शु.	उ.	अ.	श्र.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.
श.	श.	पू.	उ.	रे.	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	श्ले	म.
योग नाम	आनंद	काल.	धूम्र	प्रजा	सौम्य	ध्वांक्ष	ध्वज	श्रीवत्स	वज्र	मुद्गर	छत्र	मैत्र	मानस	पद्म

सू.	स्वा	वि.	अनु	ज्ये	मू.	पू.	उ.	अ.	श्र.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.
चं.	पु.	पू.	उ.	अ.	श्र.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.	अ.	भ.	कृ.	रो.
मं.	श्र.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.
बु.	उ.	रे.	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	अश्ले	म.	पू.	उ.
बृ.	कृ.	रो.	मृ.	आ	पु.	पु.	श्ले	म.	पू.	उ.	ह.	चि.	स्वा	वि.
शु.	पु.	पु.	श्ले	म.	पू.	उ.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.
श.	पू.	उ.	ह.	चि.	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	अभि	श्र.	ध.
योगनाम	लुंबक	उत्पात	मृत्यु	काण	सिद्धि	शुभ	अमृत	मुसल	गद	मातंग	राक्षस	चर	स्थिर	वर्धमान

अमृतसिद्धियोग

हस्तः सूर्ये मृगः सोमे वारे भौमे तथाऽश्विनी ।
बुधे मैत्रं गुरौ पुष्यं रेवती भृगुनन्दने ॥ ८९ ॥
रोहिणी रविपुत्रे च सर्वसिद्धिप्रदायकः ।
अयं चामृतसिद्धिः स्याद्योगः प्रोक्तः पुरातनैः ॥९०॥

रविवार को हस्त, सोमवार को मृगशिरा, मंगलवार को अश्विनी, बुधवार को अनुराधा, बृहस्पतिवार को पुष्य, शुक्रवार को रेवती और शनिवार को रोहिणी नक्षत्र हो तो सब सिद्धियों का दाता अमृतसिद्धियोग होता है। यह पुरातन विद्वानों का कथन है।

अमृतसिद्धियोगचक्र ।							
रवि	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
हस्त	मृगशि.	अश्वि.	अनु.	पुष्य	रेवती	रोहि.	नक्षत्र

यमघण्टयोग

मघादित्ये विशाखेन्दौ भौमे चार्द्रानले गुरौ ।
बुधे मूलं विधिः शुक्रे यमघण्टः शनौ करः ॥ ९१॥

रविवार को मघा, सोमवार को विशाखा, मंगलवार को आर्द्रा, बृहस्पतिवार को कृत्तिका, बुधवार को मूल,

शुक्रवार को रोहिणी और शनिवार को हस्त नक्षत्र हो तो यमघण्टयोग होता है।

यमघण्टयोगचक्र							
सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
मघा	विशा.	आर्द्रा	मूल	कृत्ति.	रोहि.	हस्त	नक्षत्र

मृत्युयोग

नंदा सूर्ये च भौमे च भद्रा भार्गवचन्द्रयोः ।
बुधे जया गुरौ रिक्ता शनौ पूर्णा च मृत्युदा ॥६२॥

रविवार और मंगलवार को नन्दा, शुक्रवार और सोमवार को भद्रा, बुधवार को जया, बृहस्पतिवार को रिक्ता और शनिवार को पूर्णा तिथि हो तो मृत्युयोग होता है। यह शुभ कार्य में वर्जित है।

मृत्युयोगचक्र							
रवि	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
१	२	१	३	४	२	५	तिथि
६	७	६	८	९	७	१०	
११	१२	११	१३	१४	१२	३०	

क्रकचयोग

तिथ्यङ्केन समायुक्तो वाराङ्को यदि जायते ।
त्रयोदशाङ्कः क्रकचो योगः प्रोक्तः पुरातनैः ॥६३॥

यदि तिथि के अंक में वार का अंक जोड़ने से १३ हो तो क्रकचयोग होता है। यह प्राचीनों का मत है।

क्रकचयोगचक्र							
सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
१२	११	१०	९	८	७	६	तिथि

अन्धाक्षादिसंज्ञा

अंधाक्षश्चिपिटाक्षश्च काणाक्षो दिव्यलोचनः ।
गणयेद्रोहिणीपूर्वं सप्तवारमनुक्रमात् ॥ ६४ ॥
अंधे च लभते शीघ्रं मंदे चैव दिनत्रयम् ।
काणाक्षे मासमेकं तु सुनेत्रे नैव लभ्यते ॥ ६५ ॥

अन्धाक्ष, चिपिटाक्ष, काणाक्ष और सुलोचन ये चार संज्ञाएँ नक्षत्रों की हैं। रोहिणी आदि नक्षत्रों को क्रम से सात बार गिने, अर्थात् रोहिणी की अन्धाक्ष, मृगशिरा की चिपिटाक्ष, आर्द्रा की काणाक्ष और पुनर्वसु की सुलोचन संज्ञा है। इसी प्रकार सात बार गिने। अन्धे नक्षत्र में

चोरी में गई हुई वस्तु शीघ्र मिलती है। मन्दाक्ष (चिपिटाक्ष) में तीन दिन में, काणाक्ष में एक महीने में तथा सुलोचन में गई हुई वस्तु नहीं मिलती।

अन्धादिनक्षत्रबोधकचक्र

रोहि.	पुष्य	उ. फा.	विशा.	पू. षा.	धनिष्ठा	रेवती	अंधा.
मृग.	आश्ले.	हस्त	अनु.	उ.षा.	शत.	अश्वि.	चिपिटा
आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पू. भा.	भरणी	काणा.
पुन.	पू.फा.	स्वाती	मूल	श्रवण	उ. भा.	कृत्तिका	सुलो.

दक्षिणादिचारी नक्षत्र

पुनर्वसुर्मृगश्चार्द्रा ज्येष्ठा मैत्रं करस्तथा।
पूर्वाषाढोत्तराषाढे मूलं दक्षिणचारिणः ॥९६॥
कृत्तिका रोहिणी पुष्यश्चित्राश्लेषा च रेवती।
शतं धनिष्ठा श्रवणो नव मध्यमचारिणः ॥९७॥
अश्विनी भरणी स्वाती विशाखा फाल्गुनीद्वयम्।
मघा भाद्रपदायुग्मं नव चोत्तरचारिणः ॥ ९८ ॥

पुनर्वसु, मृगशिरा, आर्द्रा, ज्येष्ठा, अनुराधा, हस्त, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़ और मूल ये नक्षत्र दक्षिणचारी हैं अर्थात् दक्षिण की तरफ हैं। कृत्तिका, रोहिणी, पुष्य, चित्रा, अश्लेषा, रेवती, शतभिषा, धनिष्ठा और श्रवण ये नक्षत्र मध्यमचारी हैं अर्थात् आकाश के मध्य में रहते हैं। अश्विनी, भरणी, स्वाती, विशाखा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तरा-फाल्गुनी, मघा, पूर्वाभाद्रपद और उत्तराभाद्रपद ये नव नक्षत्र उत्तरचारी हैं अर्थात् उत्तर दिशा में रहते हैं।

नक्षत्रप्रचारकचक्र

पुन.	मृग.	आर्द्रा	ज्येष्ठा	अनु.	हस्त	पू. षा.	उ.षा.	मल	दक्षिण
कृत्ति.	रोहि.	पुष्य	चित्रा	अश्ले.	रेवती	शत.	धनि	श्रवण	मध्य
अश्वि	भरणी	स्वाती	विशा.	पू.फा.	उ.फा.	मघा	पू.भा.	उ.भा.	उत्तर

वत्सचक्र

भ्रमतीन्द्रदिशं वत्सो मासानां च त्रिकं त्रिकम्।
आदौ भाद्रपदं कृत्वा सव्यतो दिक्चतुष्टयम् ॥९९॥
यात्राविवादसंबंधे द्वारे च गृहहर्म्ययोः।
भूपतेर्मिलने युद्धे वत्सस्याभिमुखं त्यजेत् ॥१००॥

पूर्व आदि दिशाओं में तीन-तीन महीने वत्स सव्यमार्ग से घूमता है। भाद्रपद, आश्विन और कार्त्तिक में पूर्व दिशा में; मार्गशीर्ष, पौष और माघ में दक्षिण दिशा में; फाल्गुन, चैत्र और वैशाख में पश्चिम दिशा में तथा ज्येष्ठ, आषाढ़

और श्रावण में उत्तर दिशा में वत्स घूमता है। यह वत्स यात्रा, विवाह-सम्बन्ध, गृह और प्रासाद के द्वार में, राजा से मिलने में और युद्ध में संमुख त्याज्य है। इन कार्यों में बायें और पीठ पीछे शुभ होता है।

वत्सचक्र

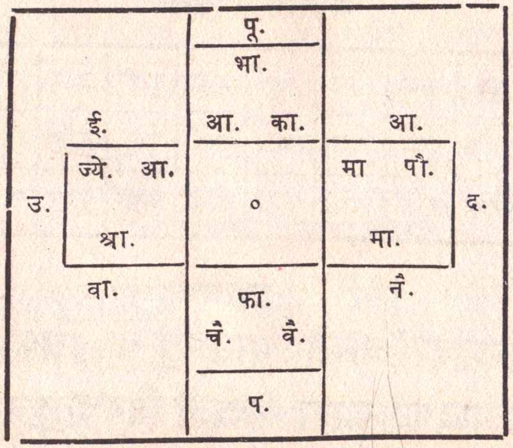

नक्षत्रों की ताराओं की संख्या

त्रयं यमेऽश्वे चाग्नौ षड् विधौ पंच मृगे त्रयम्।
एकमार्द्रा च नक्षत्रं चत्वारि च पुनर्वसौ॥१०१॥
पुष्ये त्रयं रसाः सार्पे मघायां चैव पंचकम्।
द्वयं द्वयं च फाल्गुन्योर्ज्ञेयं हस्ते तु पंचकम्॥१०२॥

चित्रास्वात्योरेकमेकं चतुष्कं च द्विदैवते।
त्रयंस्यादनुराधायांज्येष्ठायां च त्रयं स्मृतम्॥१०३॥
मूले रुद्रश्चतुष्कं च पूर्वाषाढे तथोत्तरे।
त्रयं चाभिजितः प्रोक्तः श्रवणे च त्रयं तथा॥१०४॥
धनिष्ठायां च चत्वारः शतं शतभिषासु च।
द्वयं द्वयं भाद्रयोश्च द्वात्रिंशदपि चांत्यके॥१०५॥

अश्विनी आदि नक्षत्रों की ताराओं की संख्या इस प्रकार है। अश्विनी ३, भरणी ३, कृत्तिका ६, रोहिणी ५, मृगशिरा ३, आर्द्रा १, पुनर्वसु ४, पुष्य ३, अश्लेषा ६, मघा ५, पूर्वाफाल्गुनी २, उत्तराफाल्गुनी २, हस्त ५, चित्रा १, स्वाती १, विशाखा ४, अनुराधा ३, ज्येष्ठा ३, मूल ११, पूर्वाषाढ़ ४, उत्तराषाढ़ ४, अभिजित् ३, श्रवण ३, धनिष्ठा ४, शतभिषा १००, पूर्वाभाद्रपद २, उत्तराभाद्रपद २ और रेवती की ताराओं की संख्या ३२ है।

ताराओं की संख्या का चक्र

अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	अश्ले	म.	पू.	उ.	ह.	चि.
३	३	६	५	३	१	४	३	६	५	२	२	५	१
स्वा.	वि.	अनु	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	अ.	श्र.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.
१	४	३	३	११	४	४	३	३	४	१००	२	२	३२

लग्नेऽष्टमे व्यये सूर्ये क्षेत्रपालस्य दूषणम् ।
आकाशदेव्याश्चन्द्रे तु लग्नेषष्ठेऽष्टमे व्यये ॥१०६॥

द्वादशे दशमे भौमे डाकिनीदूषणं स्मृतम् ।
वनदेव्युद्भवो दोषः सप्तमे द्वादशे बुधे ॥१०७॥

जामित्रे द्वादशे जीवे देवदोषो निगद्यते ।
अस्तेव्यये दैत्यपूज्ये जलदेव्याश्च दूषणम् ॥ १०८॥

शनैश्चरे व्यये चास्ते दोषः स्यादामवातजः ।
जामित्रे द्वादशे राहुः कुमतिज्ञातिदूषणम् ॥ १०९ ॥

प्रश्नलग्न में, आठवें वा बारहवें सूर्य हो तो क्षेत्रपाल का दोष, लग्न में, छठे, आठवें, बारहवें चन्द्रमा हो तो आकाश-देवी का दोष, लग्न से बारहवें वा दसवें मंगल हो तो डाकिनी का दोष, बुध लग्न से सातवें वा बारहवें हो तो वनदेवी का दोष, बृहस्पति लग्न से सातवें वा बारहवें हो तो देवकृत दोष, शुक्र सातवें वा बारहवें हो तो जल-देवता का दोष, शनैश्चर सातवें वा बारहवें हो तो आमवात का दोष और राहु सातवें वा बारहवें हो तो कुमति से जाति-गत दोष होता है ।

प्रश्नलग्न से दोषज्ञान

पितृदोषो भवेन्मेषे क्षुधाहानिर्विवर्णता ।
वृषे गगनदेव्यास्तु ज्वरो दुःस्वप्नमक्षिरुक् ॥११०॥
मिथुने च महामायादोषो वेलाज्वरोऽनिलः ।
कर्के च शाकिनीदोषो हास्यरोदनमौनताः ॥१११॥
सिंहे चले प्रेतदोषो दिवा शीतज्वरोऽरुचिः ।
ग्रहदोषश्च कन्यायां क्रोधालस्ये तथारुचिः ॥११२॥
क्षेत्रपालभवो दोषस्तुले संतानपीडनम् ।
वृश्चिके नागदोषश्च ज्वाला देहे कुबुद्धिता ॥११३॥
चापे देहे भवेद्दोषो ज्वरः शोकोदरव्यथा ।
मकरे चण्डिकादोषो देहभङ्गो ज्वरानिलः ॥११४॥
मलिनप्रेतदोषश्च कुम्भे देहस्य पीडनम् ।
मीने च पिङ्गलादोषो ज्वरो जंजालदर्शनम् ॥११५॥

प्रश्न लग्न मेष हो तो पितरकृत दोष होता है । इसमें भूख नहीं लगती और शरीर विवर्ण हो जाता है । वृष हो तो आकाशदेवी का दोष होता है । इसमें ज्वर, अशुभ स्वप्न और आँखों में पीड़ा होती है । मिथुन लग्न हो तो महामाया का दोष होता है । इसमें समय पर आनेवाला

ज्वर और वातविकार होता है। कर्क हो तो शाकिनी दोष होता है जिससे कभी हँसता, रोता और कभी चुप रहता है। सिंह हो तो प्रेतबाधा होती है, दिन में सर्दी का ज्वर और अरुचि होती है। कन्या लग्न हो तो ग्रहकृत अरिष्ट होता है। इसमें क्रोध, आलस्य तथा अरुचि होती है। तुला लग्न हो तो क्षेत्रपालकृत दोष होता है जो संतान को पीड़ित करता है। वृश्चिक लग्न हो तो नागकृत दोष होता है जिससे ज्वर और कुबुद्धि होती है। धनु लग्न हो तो शरीरस्थ दोषों से ज्वर, शोक तथा उदर पीड़ा होती है। मकर लग्न हो तो चण्डिका का दोष होता है। इसमें अङ्ग-भङ्ग और वातिक ज्वर होता है। कुंभ लग्न हो तो देह में पीड़ा, मलिनता और प्रेत दोष होता है। प्रश्न लग्न मीन हो तो पिङ्गलाकृत दोष होता है। इसमें ज्वर होता है तथा बुरे स्वप्न दिखाई देते हैं।

व्यये धर्मे तृतीये च षष्ठे पापग्रहो यदा।
हतो गरे जले शस्त्रे तस्य दोषः कुलोद्भवः ॥११६॥
शनौ जले कुजे शस्त्रे युते सूर्ये स्वबंधुजः।
राहौ विक्रमतोनेष्टः शान्तिपूजाद्विजार्चनैः ॥११७॥
स्वक्षेत्रे गोत्रदोषोऽपि परक्षेत्रे परोद्भवः।
शत्रु क्षेत्रे शत्रुदोषो मित्रे स्वजनसम्भवः ॥११८॥

प्रश्न लग्न से बारहवें, नवें, तीसरे और छठे पापग्रह हों तो कुल से उत्पन्न दोष होता है, जिससे विष, जल अथवा शस्त्र से मृत्यु होती है। पूर्वोक्त स्थानों में शनि हो तो जल से, मंगल हो तो शस्त्र से, सूर्य हो तो अपने बन्धुओं से मृत्यु होती है। राहु हो तो पराक्रम नष्ट हो जाता है। इनकी शान्ति के लिए ब्राह्मणों और देवताओं का पूजन कराना चाहिए। पूर्वोक्त स्थानों में ग्रह स्वक्षेत्री हों तो अपने गोत्रियों द्वारा दोष हो, परक्षेत्री ग्रह हों तो परकृत दोष हो, शत्रुक्षेत्री ग्रह हों तो शत्रुकृत दोष तथा मित्रक्षेत्री ग्रह हों तो स्वजनकृत दोष होता है।

नक्षत्र, तिथि और वार से उत्पन्न शुभाशुभ योग

आदित्ये चाश्विनीहस्तमूलं पुष्योत्तरात्रयम्।
सिद्धियोगो धनिष्ठा च तिथिरप्यष्टमी तथा ॥११९॥
सूर्ये विशाखा भरणी ज्येष्ठा मैत्रं मघा तथा।
चतुर्दशी द्वादशी च विरुद्धा सप्तमी तिथिः ॥१२०॥

रविवार को अश्विनी, हस्त, मूल, पुष्य, तीनों उत्तरा अथवा धनिष्ठा नक्षत्र हो और अष्टमी तिथि हो तो सिद्धि योग होता है। और यदि रविवार को विशाखा, भरणी, ज्येष्ठा, अनुराधा, मघा ये नक्षत्र तथा चतुर्दशी, द्वादशी

वा सप्तमी तिथि हो तो उससे विरुद्ध योग (कुयोग) होता है।

सोमे पुष्यानुराधा च श्रवणो रोहिणी मृगः।
नवमी दशमी चापि सिद्धियोगाः प्रकीर्त्तिताः १२१॥
चन्द्रे चित्रा विशाखा च तथाऽऽषाढाद्वयं बुधैः।
एकादशी तथा षष्ठी वर्जनीया त्रयोदशी ॥१२२॥

सोमवार को पुष्य, अनुराधा, श्रवण, रोहिणी वा मृगशिरा नक्षत्र तथा नवमी वा दशमी तिथि हो तो सिद्धियोग होता है। यदि सोमवार को चित्रा, विशाखा, पूर्वाषाढ़ वा उत्तराषाढ़ नक्षत्र तथा एकादशी, छठि वा त्रयोदशी तिथि हो तो सिद्धियोग नहीं होता अर्थात् कुयोग होता है।

भौमे मूलाश्विनी सार्पो मृगश्चोत्तरभाद्रपात्।
सिद्धाष्टमी तृतीया च सप्तमी च त्रयोदशी ॥१२३॥
निन्द्या शतभिषार्द्रा च धनिष्ठा पूर्वभाद्रपात्।
मघा चोत्तरषाढे च द्वितीया दशमी कुजे ॥ १२४॥

मंगलवार को मूल, अश्विनी, अश्लेषा, मृगशिरा, उत्तराभाद्रपद ये नक्षत्र तथा अष्टमी, तृतीया, सप्तमी वा त्रयोदशी तिथि हो तो सिद्धियोग होता है। यदि मंगलवार को शतभिषा, आर्द्रा, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद, मघा वा उत्तराषाढ़ नक्षत्र तथा द्वितीया वा दशमी तिथि हो तो निन्द्ययोग होता है।

बुधेऽनुराधा पुष्यश्च कृत्तिका रोहिणी मृगः।
द्वादशीसिद्धियोगाश्चद्वितीयासप्तमीतिथिः ॥१२५॥
बुधे मूलं धनिष्ठा च रेवती चाश्विनी मृगः।
तृतीयां नवमीं चापि वर्जयेत्प्रतिपत्तिथिम् ॥ १२६॥

बुधवार को अनुराधा, पुष्य, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा ये नक्षत्र तथा द्वादशी, द्वितीया वा सप्तमी तिथि हो तो सिद्धियोग होता है। यदि बुधवार को मूल, धनिष्ठा, रेवती, अश्विनी वा मृगशिरा नक्षत्र तथा तृतीया, नवमी वा प्रतिपदा तिथि हो तो सिद्धियोग नहीं (निन्द्य योग) होता है।

गुरौ च दशमी पञ्च पौर्णमासी विशेषतः।
पौष्णाश्विन्यनुराधाच सिद्धिः पुष्यःपुनर्वसुः१२७॥
जीवे शतभिषार्द्रा च कृत्तिकोत्तरफाल्गुनी।
विधिमृगोऽष्टमी षष्ठी चतुर्थी च विवर्जिताः ॥१२८॥

बृहस्पतिवार को दशमी, पञ्चमी वा पूर्णमासी तिथि हो तथा रेवती, अश्विनी, अनुराधा, पुष्य वा पुनर्वसु नक्षत्र हो तो सिद्धियोग होता है। यदि बृहस्पतिवार को शतभिषा, आर्द्रा, कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी, रोहिणी वा मृगशिरा नक्षत्र

हो तथा अष्टमी, षष्ठी वा चतुर्थी तिथि हो तो वर्जित (निन्द्य) योग होता है।

शुक्रे चित्रार्यमा पूषा श्रवणश्च पुनर्वसुः।
सिद्धा चैकादशी षष्ठी प्रतिपच्च त्रयोदशी ॥ १२९ ॥
भार्गवे रोहिणीपुष्यो ज्येष्ठाश्लेषा मघा तथा।
द्वितीया सप्तमी चापिवर्जनीया सदा बुधैः ॥१३०॥

शुक्रवार को चित्रा, उत्तराफाल्गुनी, रेवती, श्रवण, पुनर्वसु ये नक्षत्र और एकादशी, छठि, प्रतिपदा वा त्रयोदशी तिथि हो तो सिद्धियोग होता है। यदि शुक्रवार को रोहिणी, पुष्य, ज्येष्ठा, अश्लेषा वा मघा नक्षत्र और द्वितीया वा सप्तमी तिथि हो तो उसे बुद्धिमान् सदा वर्जित करें।

शनौ च रोहिणी स्वाती श्रवणः पूर्वफाल्गुनी।
मघा च नवमी सिद्धा चतुर्थी च त्रयोदशी ॥१३१॥
शनौ हस्तोत्तराषाढा चित्रा चोत्तरफाल्गुनी।
रेवती च सदा वर्ज्या तिथिः षष्ठी च सप्तमी ॥१३२॥

शनिवार को रोहिणी, स्वाती, श्रवण, पूर्वाफाल्गुनी वा मघा नक्षत्र तथा नवमी, चतुर्थी वा त्रयोदशी तिथि हो तो सिद्धियोग होता है। यदि शनिवार को हस्त, उत्तराषाढ़, चित्रा, उत्तराफाल्गुनी वा रेवती नक्षत्र तथा षष्ठी वा सप्तमी तिथि हो तो सदा वर्जित करे।

शुभाशुभयोग चक्र

र.	अ.	ह.	मू.	पु.	उ३	ध.	नक्षत्र	८	ति	थि	०			शुभयोग
र.	वि.	भ.	ज्ये.	ऽनु.	म.	नक्षत्र	१४	१२	७	ति	थि			अशुभयोग
चं.	पु.	ऽनु.	श्र.	रो.	मृ.	नक्षत्र	९	१०	ति	थि	०			शुभयोग
चं.	चि.	वि.	पू. षा.	उ. षा.	नक्षत्र	११	६	१३	०	ति	थि	०		अशुभयोग
मं.	मू.	अ.	अ. श्ले	मृ.	उ. भा.	नक्षत्र	३	७	८	१३	ति	थि		शुभयोग
मं.	श.	आ.	ध.	पू. भा.	म.	उ. षा.	नक्षत्र	२	१०	ति	थि	०		अशुभयोग
बु.	ऽनु.	पु.	कृ.	रो.	मृ.	न.	२	७	१२	ति	थि	०	०	शुभयोग
बु.	मू.	ध.	रे.	अ.	मृ.	न.	१	३	९	ति	थि	०	०	अशुभयोग
बृ.	पु.	अ.	ऽनु.	रे.	पुन	न.	५	१०	१५	ति	थि	०	०	शुभयोग
बृ.	[illegible]	आ.	कृ.	उ. फा.	रो	मृ.	न.	४	६	८	ति	थि	०	अशुभयोग
शु.	चि	उ. फा.	रे.	श्र.	पुन	नक्षत्र	११	६	१	१३	ति	थि		शुभयोग
शु.	रो.	पु.	ज्ये	अ. श्ले	म.	न.	२	७	ति	थि	०	०	०	अशुभयोग
श.	रो.	स्वा	श्र.	पू. फा.	म.	न.	४	९	१३	ति	थि	०	०	शुभयोग
श.	ह.	उ. षा.	चि	उ. फा.	रे.	न.	६	७	ति	थि	०	०	०	अशुभयोग

नक्षत्रों की चर चलादिसंज्ञा

चरं चलं स्मृतं स्वाती पुनर्वसु श्रुतित्रयम् ।
क्रूरमुग्रं मघा पूर्वात्रितयं भरणी तथा ॥ १३३ ॥
ध्रुवं स्थिरं विनिर्दिष्टं रोहिणी चोत्तरात्रयम् ।
तीक्ष्णदारुणमश्लेषा ज्येष्ठार्द्रा मूलमेव च ॥ १३४ ॥
लघुक्षिप्रं स्मृतं पुष्यो हस्ताश्विन्यभिजित्स्मृतम् ।
मृदुमैत्रं स्मृतं चित्राऽनुराधा रेवती मृगः ॥ १३५ ॥
मिश्रं साधारणं प्रोक्तं विशाखा कृत्तिका तथा ।
नक्षत्रेष्वेषु कर्माणि नामतुल्यानि कारयेत् ॥ १३६ ॥

स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा इनकी चर और चल संज्ञा है इनमें चर कार्य शुभ हैं। मघा, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़, पूर्वाभाद्रपद और भरणी इनकी क्रूर और उग्र संज्ञा है इनमें क्रूर कार्य शुभ हैं। रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ और उत्तराभाद्रपद इनकी ध्रुव और स्थिर संज्ञा है इनमें स्थिर कार्य शुभ हैं। अश्लेषा, ज्येष्ठा, आर्द्रा और मूल इनकी तीक्ष्ण और दारुण संज्ञा है, इनमें तीक्ष्ण कार्य शुभ हैं। पुष्य, हस्त, अश्विनी और अभिजित् की लघु और क्षिप्र संज्ञा है। इनमें शीघ्र तथा थोड़ा कार्य शुभ है। चित्रा, अनुराधा, रेवती और मृगशिरा की मृदु

और मैत्र संज्ञा है, इनमें मैत्री आदि शुभ हैं। विशाखा तथा कृत्तिका की मिश्र और साधारण संज्ञा है। इनमें सामान्य कार्य शुभ हैं। इन नक्षत्रों में मान के तुल्य ही कार्य करना चाहिए।

नक्षत्रों की संख्या का चक्र

स्वा.	पुन.	श्र.	ध.	श.	चर-चल
भ.	पू.फा.	पू.षा.	पू.भा.	म.	क्रूर-उग्र
रो.	उ.फा.	उ.षा.	उ.भा.	०	ध्रुव-थिर
अश्ले	ज्ये.	आ.	मू.	०	तीक्ष्ण-दारुण
ह.	पुष्य.	अश्वि	अभि.	०	लघु-क्षिप्र
चि	अनु.	मृ.	रे.	०	मृदु-मैत्र
वि.	कृ.	०	०	०	मिश्र-साधारण

शनिचक्र

शनिचक्रं नराकारं लिखेद्यत्र शनिर्भवेत् ।
तन्नक्षत्रं मुखे दत्त्वा यावन्नाम नरस्य च ॥ १३७ ॥
तावद्विचारयेत्तत्र ज्ञेयं तत्र शुभाशुभम् ।
एकं मुखे च नक्षत्र चत्वारि दक्षिणे करे ॥ १३८ ॥

त्रयं त्रयं पादयोश्च वामहस्ते चतुष्टयम् ।
ललाटे द्वितयं नेत्रे हृदि पञ्च गुदे द्वयम् ॥ १३६ ॥
एकैकं दक्षिणे कुक्षौ नक्षत्राणि क्रमेण च ।
हानिर्मुखे दक्षहस्ते लाभो वामे च रोगता ॥ १४० ॥
हृदि श्रीर्मस्तके राज्यं पादे पर्य्यटनं फलम् ।
नेत्रे सुखं गुदे मृत्युः कुक्षौ शोकं विचिन्तयेत् ॥ १४१ ॥
जपादिपूजनार्चाभिः कल्याणं जायते सदा ।
अन्यान्येव विचार्याणि वाहनादि बहूनि च ॥ १४२ ॥

मनुष्य के आकार का शनि-चक्र बनावे। जिस नक्षत्र पर शनि हो उस नक्षत्र को मुख पर लिखे और उस नक्षत्र से मनुष्य के जन्म-नक्षत्र तक गिने। जिस अंग में जन्म-नक्षत्र पड़े उसका शुभाशुभ फल इस प्रकार जाने। १ नक्षत्र मुख में, ४ दाहिने हाथ में, ३-३ दोनों पैरों में, ४ बायें हाथ में, २ मस्तक में, ३ नेत्रों में, ५ हृदय में, २ गुदा में और १ नक्षत्र दाहिनी कोख में, क्रम से स्थापित करे। मुख में जन्मनक्षत्र पड़े तो हानि, दाहिने हाथ में लाभ, बायें हाथ में रोग, हृदय में लक्ष्मीप्राप्ति, मस्तक में राज्य, पैरों में भ्रमण, नेत्रों में सुख, गुदा में मृत्यु और कोख में जन्म-नक्षत्र पड़े तो शोक होता है। यदि अरिष्ट स्थान में जन्म-

नक्षत्र पड़े तो जप, दान और पूजा आदि करने से शुभ होता है। शनि के वाहन आदि का भी विचार करना चाहिए।

शनिचक्र

देशविशेष में शनिफल

मेषे शनौ गुर्जरेषु प्रभासे चार्बुदे वृषे ।
मिथुने जायते पीडा स्थले मूलस्थलीषु च ॥ १४३ ॥
कर्के काश्मीरके बाधा शक्रप्रस्थे मृगाधिपे ।
शनैश्चरे च कन्यायां मालवाख्ये च संक्षयम् ॥ १४४ ॥
तुलावृश्चिकचापेषु यदि याति शनैश्चरः ।
न वर्षन्ति तदा मेघाः पृथ्वी दुर्भिक्षपीडिता ॥ १४५ ॥
सुभिक्षं मकरे कुम्भे जायते बहुधा शनौ ।
मीने च सर्वलोकानां दुर्भिक्षन्तु क्षयो भवेत् ॥ १४६ ॥

मेष राशि का शनि हो तो गुजरात देश में पीड़ा हो, वृष का हो तो प्रभासक्षेत्र और अर्बुद देश में, मिथुन का हो तो स्थल और मूलस्थल देश में, कर्क का हो तो काश्मीर देश में, सिंह का हो तो इन्द्रप्रस्थ में और कन्या का शनि मालवा देश में पीड़ा या विनाश करता है। यदि तुला या वृश्चिक का शनैश्चर हो तो वर्षा नहीं होती, पृथ्वी अकाल से पीड़ित होती है। मकर और कुंभ का शनि सुभिक्षकारक होता है। एवं मीन का शनैश्चर दुर्भिक्ष और नाशकारक होता है।

महीने में पाँच रविवार आदि का फल

यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पञ्च सन्ततम् ।
दुर्भिक्षं छत्रभङ्गश्च तदास्ते च महद्भयम् ॥ १४७ ॥
सोमस्य पञ्चवाराश्च यत्र मासे भवन्ति हि ।
धनधान्यसमृद्धिश्च सुखी भवति मेदिनी ॥ १४८ ॥
यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पञ्च वासराः ।
रक्तेन पूरिता पृथ्वी क्षत्रभङ्गस्तदा भवेत् ॥ १४९ ॥
बुधस्य पञ्च वाराश्च जायन्ते च निरन्तरम् ।
प्रजाश्च सुखसम्पन्नाः सुभिक्षञ्च प्रजायते ॥१५०॥

यत्र मासे पञ्चवारा जायन्ते च बृहस्पतेः ।
विग्रहं पश्चिमे देशे पीडायुद्धं च जायते ॥ १५१ ॥
मासे यस्मिन् शुक्रवाराः पञ्च यत्र भवन्ति हि ।
प्रजावृद्धिः सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्त्तते ॥ १५२ ॥
शनिवारा यदा पञ्च पाताले कम्पते फणी ।
ईशानदेशभङ्गश्च वह्निदाहो महर्घता ॥ १५३ ॥

जिस महीने में पाँच रविवार हों उस महीने में महँगी, छत्रभंग और बहुत भय होता है। जिस महीने में पाँच सोमवार होते हैं उसमें धन-धान्य की वृद्धि होती है तथा पृथ्वी सुख से पूर्ण रहती है। जिस महीने में पाँच मंगलवार होते हैं उसमें पृथ्वी खून से भर जाती और क्षत्रभंग होता है। जिस महीने में पाँच बुधवार होते हैं उसमें प्रजा सुखी होती है और सुकाल होता है। जिस महीने में पाँच बृहस्पतिवार होते हैं उसमें पश्चिम के देशों में युद्ध और पीड़ा होती है। जिस महीने में पाँच शुक्रवार होते हैं उसमें प्रजा की वृद्धि, सुकाल और सुख होता है। जिस महीने में पाँच शनिवार होते हैं उसमें पाताल में शेषजी काँपते हैं (अर्थात् भूकम्प होता है)। ईशान देश का भंग होता है, अग्नि का प्रकोप होता है तथा अन्न महँगा होता है।

अभिजिन्मुहूर्त्त का ज्ञान

अंगुल्यो विंशतिः सूर्ये शंकुः सोमे च षोडश ।
कुजे पञ्चदशांगुल्यो बुधवारे चतुर्दश ॥ १५४ ॥
त्रयोदश गुरोर्वारे द्वादशार्कजशुक्रयोः ।
शंकुमूले यदाच्छाया मध्याह्ने च प्रजायते ॥ १५५ ॥
तदा चाभिजिदाख्याता घटिकैका स्मृता बुधैः ।
अत्रकार्याणिसर्वाणि सिद्धियान्तिकृतानिच ॥ १५६ ॥
जातोभिजिति राजास्याद् व्यापारे सिद्धिरुत्तमा ।
महाक्रूरवियोगेन सर्वमङ्गलदायकः ॥ १५७ ॥

रविवार को २० अंगुल की, सोमवार को १६ अंगुल की, मंगल को १५ अंगुल की, बुधवार को १४ अंगुल की, बृहस्पतिवार को १३ अंगुल की, शुक्रवार को १२ अंगुल की और शनिवार को १२ अंगुल की सींक लेकर खड़ी करे। जब मध्याह्न के समय सींक की छाया उसके मूल में आ जावे तब एक घड़ी तक अभिजित् मुहूर्त्त रहता है। इस समय में किये हुए सब काम सिद्ध होते हैं। अभिजित् में जिसका जन्म होता है वह राजा होता है। व्यापार में सिद्धि होती है। अत्यन्त क्रूर योग भी सब प्रकार का मंगलदायक होता है।

फाल्गुन आदि महीनों में शुक्र उदय होने का फल

अर्थवृद्धिः फाल्गुने स्याच्चैत्रे च धनसम्पदः ।
वैशाखे विग्रहो राज्ञां ज्येष्ठे वृष्टिश्च भूयसी ॥ १५८ ॥
आषाढे चोदिते शुक्रे जलं भवति दुर्लभम् ।
श्रावणे तु पशोः पीडा भाद्रे धान्यसमृद्धयः ॥ १५९ ॥
आश्विने सर्वसम्पत्तिः शुभं कार्त्तिकमार्गयोः ।
पौषे माघे छत्रभंगो यद्युदेति भृगोः सुतः ॥ १६० ॥

फाल्गुन में शुक्रोदय हो तो धन की वृद्धि, चैत्र में हो तो धन और सम्पत्ति, वैशाख में राजाओं में लड़ाई तथा ज्येष्ठ में शुक्रोदय हो तो बहुत वर्षा होती है। आषाढ़ में शुक्रोदय हो तो जल दुर्लभ हो जाता है। श्रावण में हो तो पशुओं को पीड़ा, भाद्रपद में हो तो अनाज की वृद्धि, आश्विन में हो तो सब सम्पत्ति तथा कार्त्तिक अगहन में शुक्रोदय हो तो शुभप्रद होता है। यदि पौष और माघ में शुक्रोदय हो तो छत्रभंग होता है।

होलिकावायु परीक्षा

पूर्वे वायुर्होलिकायाः प्रजाभूपालयोः सुखम् ।
पलायनं च दुर्भिक्षं दक्षिणे जायते ध्रुवम् ॥ १६१ ॥

पश्चिमे तृणसंपत्तिरुत्तरे धान्यसम्भवः ।
यदि खे च शिखावृद्धिर्दुर्गराज्ञोपि संक्षयः ॥१६२॥

यदि होलिकादाह के समय पूर्व की वायु चले तो प्रजा और राजा को सुख हो । दक्षिण की वायु चले तो दुर्भिक्ष हो और प्रजा देश छोड़कर भाग जाय । यदि पश्चिम की वायु चले तो तृण बहुत उत्पन्न हों और उत्तर की वायु चले तो अन्न की वृद्धि हो । यदि होली की शिखा सीधी आकाश की ओर जाय तो राजाओं के किले भी नष्ट हो जायँ ।

वृष्टि के गर्भ का लक्षण ।

एकादश्यां कार्त्तिकस्य यदि मेघः समीक्ष्यते ।
आषाढे च तथा वृष्टिर्जायते नात्र संशयः ॥१६३॥
मार्गशीर्षस्य चाष्टम्यां दृश्यन्ते विद्युतो यदा ।
तदा वृष्टिः श्रावणे च मासि सञ्जायते ध्रुवम् ॥१६४॥
कृष्णपक्षदशम्यां च वृष्टिः पौषे च जायते ।
तदा भाद्रपदे मासे वृष्टिर्भवति भूयसी ॥१६५॥
वृष्टिश्चेन्माघसप्तम्यां ज्येष्ठे मूलं च वर्षति ।
नक्षत्रे वारिवाहश्च तदान्नैः पूर्यते मही ॥१६६॥
पञ्चम्यां प्रथमे पक्षे श्रावणे च प्रवर्षते ।
पयोवाहस्तदा धान्यैर्धरा व्याप्ता जलैरपि ॥१६७॥

कार्त्तिक की एकादशी को यदि मेघ दिखाई देता है तो आषाढ़ में निस्सन्देह वर्षा होती है । मार्गशीर्ष की अष्टमी को यदि बिजली चमकती है तो श्रावण में अवश्य ही वर्षा होती है । पौष में कृष्णपक्ष की दशमी को यदि पानी बरसता है तो भाद्रपद में बहुत वर्षा होती है । माघ की सप्तमी को अथवा ज्येष्ठ के मूल नक्षत्र में यदि पानी बरसता है तो वर्षा के सब नक्षत्रों में वर्षा होती है और पृथ्वी अन्न से पूर्ण हो जाती है । यदि श्रावण कृष्णपक्ष की पंचमी को मेघ बरसता है तो पृथ्वी जल और अन्न से पूर्ण हो जाती है ।

आषाढ़पूर्णिमा के नक्षत्रों का शुभाशुभ फल

आषाढे पूर्णिमायां तु यन्नक्षत्रं विचारयेत् ।
पूर्वाषाढे सुभिक्षं च मूले दुर्भिक्षमुच्यते ॥
उत्तराषाढकेऽश्वानां पीडा कटकसंगतिम् ॥१६८॥

आषाढ़ की पूर्णिमा को जो नक्षत्र हो उसका विचार इस प्रकार है पूर्वाषाढ़ हो तो सुभिक्ष, मूल हो तो दुर्भिक्ष और उत्तराषाढ़ हो तो घोड़ों को पीड़ा तथा फौजों में भिड़ंत हो ।

ज्येष्ठकृष्ण की परेवा के वारों का फल

ज्येष्ठस्य प्रथमे पक्षे प्रतिपच्च यदा भवेत् ।
रवेर्वारे तदा वायुर्वाति वृक्षान्तकारकः ॥१६९॥

अत्यन्तविग्रहो भौमे बुधे दुर्भिक्षमुच्यते ।
अनावृष्टिः शनेर्वारे जलं क्वापि न लभ्यते ॥१७०॥
सोमशुक्रसुरेज्यानां यदि वारः प्रजायते ।
धनधान्यसुतोत्पत्तिर्गेहे गेहे महोत्सवः ॥१७१॥

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष की प्रतिपदा को रविवार हो तो वृक्षों को तोड़नेवाली जोर की हवा चले, मंगलवार हो तो बहुत लड़ाई हो, बुधवार हो तो दुर्भिक्ष पड़े, शनिवार हो तो अनावृष्टि हो, जल कहीं भी न बरसे । यदि सोमवार, शुक्र-वार अथवा बृहस्पतिवार हो तो धन-धान्य और पुत्रों की उत्पत्ति हो और सब घरों में बड़े उत्सव हों ।

पौषसंक्रान्ति का फल

पौषमासस्य संक्रान्तौ रविवारो यदा भवेत् ॥१७२॥
धान्यानां त्रिगुणं मूल्यं भौमवारे चतुर्गुणम् ।
त्रिगुणं शनिवारे च बुधे शुक्रे समं भवेत् ॥१७३॥
सुराचार्ये च सोमे च मौल्यमर्धं सुनिश्चितम् ।
क्रूरोहिलाभकृद्धान्येसौम्योहानिप्रदोभवेत् ॥१७४॥

पौष महीने की संक्रान्ति को यदि रविवार हो तो अन्न का मूल्य तिगुना हो जाता है और मंगलवार हो तो चौगुना मूल्य होता है, शनिबार हो तो तिगुना मूल्य और बुधवार

वा शुक्रवार हो तो समभाव रहता है । यदि बृहस्पतिवार या सोमवार हो तो निश्चय आधा मूल्य रह जाता है । क्रूरवार हों तो अन्न में लाभ होता है और सौम्यबार हों तो अन्न में हानि होती है ।

मीनसंक्रान्ति का फल

मीनसंक्रमणे सूर्ये वारे वाति समीरणः ।
भौमे पीडा पशूनां च दुर्भिक्षं च शनैश्चरे ॥१७५॥
वृक्षपातः प्रजापीडा मिथ्या सञ्चरते मही ।
हिंसाकामातुरा लोका यदि वृष्टिश्च तद्दिने ॥१७६॥
संक्रान्तौ यदि मीनस्य बुधवारः प्रजायते ।
छत्रभंगो महामारी रोदनं भयचिन्तया ॥१७७॥
संक्रान्तौ सोमवारश्चेत्प्रजानां परमं सुखम् ।
भानुभौमार्किवारेषु पापयुद्धं महर्घता ॥१७८॥

रविवार को मीन की संक्रान्ति हो तो वायु अधिक चले, मंगलवार को हो तो पशुओं को पीड़ा हो, शनिवार की संक्रान्ति हो तो दुर्भिक्ष हो, वृक्ष गिरे, प्रजा में पीड़ा हो, मिथ्या का प्रचार हो । यदि उस दिन बर्षा भी हो तो लोग हिंसाप्रिय तथा कामी हों । यदि मीन की संक्रान्ति बुधवार को हो तो छत्रभंग हो, महामारी, रोदन, भय और चिन्ता

हो। यदि सोमवार को संक्रान्ति हो तो प्रजा को बहुत सुख हो। रविवार, मंगलवार या शनिवार को मीन की संक्रान्ति होने से पापयुद्ध और मँहगी होती है।

संक्रान्ति समय में जन्मनक्षत्र का विचार

संक्रान्त्याधारनक्षत्रादात्मभावधिगण्यते।
त्रिकं षट्कं त्रिकं षट्कं त्रिकं षट्कं पुनः पुनः॥१७९॥
पन्था भोगो व्यथा वस्त्रं हानिश्च विपुलं धनम्।
षट्के भागे फलं श्रेष्ठं मासे मासे विचारयेत्॥१८०॥

जिस नक्षत्र में संक्रान्ति हो उस नक्षत्र से अपने जन्म-नक्षत्र तक गिने। क्रम से ३ में मार्ग चलना पड़े, ६ में भोग मिले, ३ में दुःख हो, ६ में वस्त्र मिलें, ३ में हानि हो, फिर ६ में बहुत धन मिले। छठवें भाग में शुभ फल होता है। यह महीने-महीने विचारना चाहिए।

संक्रान्ति चक्र

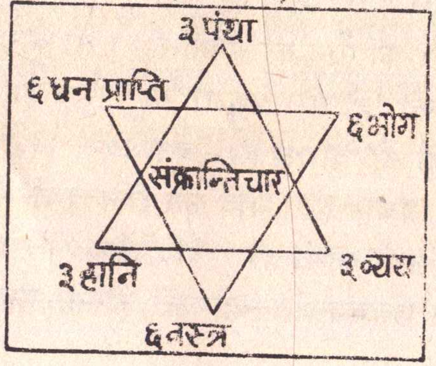

रोहिणी चक्र

राशिचक्रं लिखित्वादौ मेषसंक्रान्ति भादिकम्।
अष्टाविंशतिकं तत्र लिखेन्नक्षत्रसंकुलम्॥१८१॥
सिन्धौ द्वयं द्वयं दद्यादन्यत्रैकैकमेव च।
चत्वारः सागरास्तत्रसन्धयश्चाष्टसंख्यया॥१८२॥
शृङ्गाणि तत्र चत्वारि तटान्यष्टौ स्मृतानि च।
रोहिणी पतिता यत्र ज्ञेयं तत्र शुभाशुभम्॥१८३॥
जाता जलप्रदस्यैषा चन्द्रस्य परमप्रिया।
समुद्रेति महावृष्टिस्तटे वृष्टिश्च शोभना।
पर्वते बिन्दुमात्रा च खण्डवृष्टिश्च सन्धिषु॥१८४॥

पहले द्वादश कोठा का राशिचक्र लिखकर उसमें मेष संक्रान्ति को जो नक्षत्र हो वह प्रथम लिखकर अट्ठाईसों नक्षत्र लिखे। अर्थात् सिन्धु में दो-दो नक्षत्र लिखे और सर्वत्र एक-एक लिखे। उस रोहिणी-चक्र में ४ सागर, ८ सन्धि, ४ शृङ्ग और ८ तट होते हैं। जहाँ रोहिणी नक्षत्र पड़े, वहाँ का शुभाशुभ फल कहे। जलप्रद चन्द्रमा की परम प्यारी रोहिणी समुद्र में पड़े तो बहुत वर्षा हो, तट में पड़े तो शुभ वर्षा हो, पर्वत में पड़े तो बूँद-बूँद वर्षा हो तथा सन्धि में रोहिणी पड़े तो खण्ड वृष्टि हो।

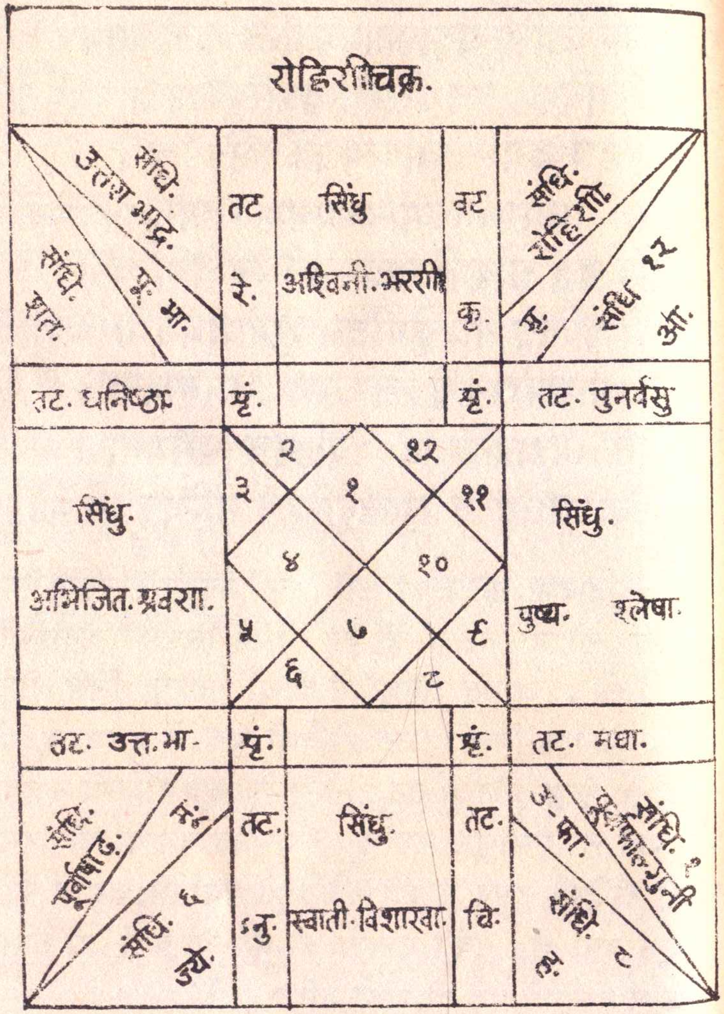

नरचक्र

नराकारं लिखेच्चक्रं सूर्यो यत्र व्यवस्थितः ।
तन्नक्षत्रादिकं कृत्वा त्रयं दद्याच्च मस्तके ॥१८५॥
मुखे त्रयं स्कन्धयोश्च दद्यादेकैकमेव च ।
बाहुद्वयं तथैकैकं पाण्योरेकैकमेव च ॥१८६॥
हृदि पञ्च गुदे चैकं नाभौ चैकं प्रदापयेत् ।
जङ्घयोरेकमेकं च षडङ्घ्राः पादयोर्द्वयोः ॥१८७॥
मस्तके पट्टबन्धी स्यान्मुखे मिष्टान्नभोजनम् ।
स्कन्धेगजेन्द्रगामीस्याद्बाहुस्थानच्युतोभवेत् १८८॥
पाणौ च जायते चौरो हृदयेऽपीश्वरो नरः ।
स्वल्पतोषी भवेन्नाभौ परदाररतो गुदे ॥१८९॥
जङ्घयोः परदेशी स्यादल्पायुश्च पदद्वये ।
नृचक्रे सूर्यनक्षत्राज्जन्मभावधिगण्यते ॥ १९० ॥

मनुष्याकार चक्र लिखकर उसमें सूर्य के नक्षत्र से ३ नक्षत्र मस्तक में, ३ मुख में, एक-एक दोनों कन्धों में, एक-एक बाहुओं में, एक-एक हाथों में, ५ हृदय में, १ गुदा में, १ नाभि में, एक-एक दोनों जाँघों में, तथा तीन-तीन नक्षत्र पैरों में स्थापित करे। यदि जन्म का नक्षत्र मस्तक में पड़े तो कुटुम्ब में श्रेष्ठ हो, मुख में पड़े तो

मीठा भोजन मिले, कन्धों में पड़े तो हाथी की सवारी मिले, बाहु में पड़े तो स्थान छूट जाय, हाथों में पड़े तो चोर हो, हृदय में पड़े तो सबका स्वामी हो, नाभि में पड़े तो थोड़े में सन्तुष्ट हो, गुदा में पड़े तो परस्त्रीगामी हो, जाँघों में पड़े तो परदेशी हो तथा दोनों पैरों में जन्म नक्षत्र पड़े तो अल्पायु हो। नराकार चक्र में सूर्य के नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गिनना चाहिए।

नराकारचक्रफल

स्थान	न०सं०	फल	स्थान	न०सं०	फल
मस्तक	३	कुल श्रेष्ठ	हृदय	५	स्वामित्व
मुख	३	मिष्ठान्न	नाभि	१	अल्पतुष्टि
२ स्कंध	१–१	गजारूढ	गुदा	१	परस्त्रीरत
२ बाहु	१–१	स्थानभ्रंश	२ जंघा	१–१	परदेशी
२ हस्त	१–१	तस्करता	२ पाद	३–३	अल्पायु

ग्रामचक्र

ग्रामनाम्नो भवेदृक्षं तदाद्याः सप्त मस्तके ।
पृष्ठे सप्त हृदिः सप्त पादयोः सप्त तारकाः ॥१६१॥

मस्तके च धनी मान्यः पृष्ठे हानिश्च निर्धनः ।
हृदये सुखसम्पत्तिःपादे पर्यटनं फलम् ॥१६२॥

गाँव के नाम का जो नक्षत्र हो उससे लेकर सात नक्षत्र मस्तक में, सात पीठ पर, सात हृदय में और सात नक्षत्र पैरों में स्थापित करे। यदि अपने नाम का नक्षत्र मस्तक में पड़े तो धनवान् तथा मान्य हो। पीठ में पड़े तो हानि तथा निर्धन हो। हृदय में सुख और संपत्ति हो तथा पैरों में पड़े तो परदेश में घूमना पड़े।

मूलवृक्षचक्र

मूलेऽष्टौ मूलवृक्षस्य घटिकाः परिकीर्तिताः ।
स्तम्भेषुषट्कघटिकास्त्वचि चैकादश स्मृताः १६३॥
शाखायां च नव प्रोक्ता पत्रे प्रोक्ताश्चतुर्दश ।
पुष्पे पञ्च फले वेदाः शिखायां च त्रयं स्मृतम् ॥१६४॥
मूले नाशो हि मूलस्य स्तम्भे हानिर्धनक्षयः ।
त्वचि भ्रातुर्विनाशश्च शाखायां मातृपीडनम्॥१६५॥
परिवारक्षयं पत्रे पुष्पे मन्त्री च भूपतिः ।
फले राज्यं शिखायां चेदल्पजीवी च बालकः ॥१६६॥

मूल नक्षत्र का विचार इस प्रकार है कि एक वृक्ष के आकार का चक्र लिखकर ८ घड़ी उसके मूल में, ६ घड़ी

स्तम्भ में, ११ घड़ी त्वचा (छाल) में, ९ घड़ी शाखाओं में, १४ घड़ी पत्तों में, ५ घड़ी फूलों में, ४ घड़ी फलों में और ३ घड़ी टहनियों में स्थापित करे। मूल (जड़) में जन्म नक्षत्र पड़े तो मूल का नाश, तने में हानि और धन का नाश, छाल में भाई का नाश, शाखा में माता को पीड़ा, पत्तों में परिवार का नाश, फूलों में मन्त्री या राजा, फल में राज्य और शिखा में जन्म नक्षत्र पड़े तो बालक अल्पजीवी हो।

मूलवृक्षचक्र

मूलवृक्ष	घटी	फल
शिखा	३	अल्पायु
फल	४	नृप
फूल	५	राजमन्त्री
पत्र	१४	परिवारक्षय
शाखा	९	मातानाश
त्वचा	११	भ्रातानाश
स्तम्भ	६	धनहानि
मूल	८	मूलनाश

शुक्रान्ध में सम्मुख दक्षिण का परिहार

रेवत्यादिमृगान्ते च यावत्तिष्ठति चन्द्रमाः।
तावच्छुक्रो भवेदन्धः सम्मुखे दक्षिणे शुभः ॥१६७॥

जब चन्द्रमा रेवती से मृगशिरा नक्षत्र तक रहता है तब शुक्र अन्धा रहता है। वह सम्मुख और दक्षिण भी शुभ होता है।

शुक्र की बाल्य और वृद्धावस्था

प्राक्पश्चादुदितः शुक्रः पञ्च सप्त दिनं शिशुः।
विपरीतं तु वृद्धत्वं तद्वदेव गुरोरपि ॥१६८॥

पूर्व में शुक्र उदय होता है तो ५ दिन और पश्चिम में उदय होता है तो ७ दिन बालक रहता है। इसके विपरीत अस्त होने से पहले पूर्व में ७ दिन और पश्चिम में ५ दिन वृद्ध रहता है। इसी प्रकार बृहस्पति का भी बाल-वृद्धत्व जानना। (यह स्थूल मत है। सर्वमान्य नहीं है)।

चन्द्रमा का शुभाशुभत्व

तृतीये दशमे षष्ठे प्रथमे सप्तमे शशी।
शुक्लपक्षे द्वितीयस्तु पञ्चमे नवमे शुभः ॥१६९॥

चन्द्रमा ३, १०, ६, १, ७ वें सदा शुभ होता है तथा शुक्ल पक्ष में २, ५, ९ वें भी शुभ होता है।

ताराओं का शुभाशुभत्व और परिहार

ताराः शुभप्रदाः सर्वास्त्रिपञ्चसप्तवर्जिताः।
प्रथमे दशमे षष्ठे तृतीयैकादशे तथा ॥ २०० ॥

यदि स्यात् सबलश्चन्द्रस्तारापि क्लेशदायिनी ।
तृतीया पञ्चमी तारा सप्तमे च नृणां भवेत् ॥२०१॥

तीसरी, पाँचवीं और सातवीं तारा को छोड़कर शेष सब ताराएँ शुभप्रद हैं। यदि १, १०, ६, ३, ११ वें सबल चन्द्रमा हो तो मनुष्यों को क्लेशदायिनी ३, ५ और ७वीं तारा भी शुभप्रद होती है।

ताराविचार

जन्मभाद्गणयेद्धीमान् क्रमाच्च दिनभावधि ।
नवभिस्तु हरेद्भागं शेषं तारा विनिर्दिशेत् ॥२०२॥
जन्म सम्पद्विपत् क्षेमः प्रत्यरिः साधको वधः ।
मैत्रातिमैत्रताराः स्युस्त्रिरावृत्त्या नवैव हि ॥२०३॥

बुद्धिमान् मनुष्य जन्म-नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने। जो संख्या हो उसमें ९ का भाग दे। जो शेष बचे उसे तारा समझे। १ शेष हो तो जन्म, २ संपत्, ३ विपत्, ४ क्षेम, ५ प्रत्यरि, ६ साधक, ७ वध, ८ मैत्र और ९ बचें तो अतिमैत्र तारा होती है। २७ नक्षत्रों में तीन आवृत्ति से नवों ताराएँ होती हैं (ये नामतुल्य फलप्रद हैं)।

अन्यग्रहों का शुभाशुभत्व

त्रिषष्ठे दशमे भौमो राहुः केतुः शनिः शुभः ।
षष्ठेऽष्टमे द्वितीये वा चतुर्थे दशमे बुधः ॥ २०४ ॥

द्वितीये पञ्चमे जीवो सप्तमे नवमे शुभः ।
विवाहे शुक्रो दशमे षष्ठे स्यात्सप्तमे शुभः ॥२०५॥
एकादशे ग्रहाः सर्वे सर्वकार्येषु शोभनाः ।
ग्रहाणां गोचरं ज्ञेयं फलं विज्ञैः शुभाशुभम् ॥२०६॥

तीसरे, छठे और दशवें मंगल, राहु, केतु और शनैश्चर शुभ होते हैं। छठे, आठवें, दूसरे चौथे और दशवें बुध एवं दूसरे पाँचवें सातवें और नवें बृहस्पति शुभ होता है। विवाह में दशवें, छठे और सातवें शुक्र शुभ होता है। ग्यारहवें स्थान में सम्पूर्ण ग्रह सब कामों में शुभ होते हैं। ग्रहों का शुभाशुभ गोचर-फल इस प्रकार जानना चाहिए।

दशम्यवधिकृष्णे तु पक्षे पूर्णो हि चन्द्रमाः ।
ततः परं क्षीणचन्द्रः शुभकार्ये विवर्जितः ॥२०७॥

कृष्ण पक्ष में दशमी तक चन्द्रमा पूर्ण रहता है। इसके पीछे चन्द्रमा क्षीण होता है, वह शुभ कार्य में वर्जित है।

क्षौरमुहूर्त्त

पुनर्वसुद्वयं क्षौरं श्रुतियुग्मं करत्रयम् ।
रेवतीद्वितयं ज्येष्ठा मृगशीर्षं च गृह्यते ॥२०८॥

क्षौरे प्राणहरास्त्याज्या मघा मंत्रे च रोहिणी ।
उत्तरा कृत्तिका वारा भानुभौमशनैश्चराः ॥२०९॥
रिक्ता षष्ठ्यष्टमी ज्ञेया क्षौरे चन्द्रक्षयो निशि ।
सन्ध्या विष्टिश्च गण्डान्ते भोजनान्ते च गोगृहे २१०

पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाती, रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा और मृगशिरा ये नक्षत्र क्षौरकर्म में ग्राह्य हैं। तथा मघा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा और कृत्तिका ये नक्षत्र तथा मंगल, रवि और शनिवार ये क्षौर में प्राण हरनेवाले हैं अतः त्याज्य हैं। तथा ४, ९, १४, ६, ८, ३० ये तिथियाँ, रात्रि, सन्ध्याकाल, भद्रा, गण्डान्त, भोजनोपरान्त तथा गोशाला ये सब क्षौर में त्याज्य हैं।

राज्याभिषेक

रेवतीयुगले पुष्ये रोहिण्यां मृगमैत्रयोः ।
श्रवणोत्तरशक्रेषु राज्ञां स्यादभिषेचनम् ॥२११॥

रेवती, अश्विनी, पुष्य, रोहिणी, मृगशिरा, अनुराधा, श्रवण, तीनों उत्तरा और ज्येष्ठा ये नक्षत्र राजाओं के अभिषेक में शुभ हैं।

तिर्यङ्मुखसंज्ञक नक्षत्र और उनमें कृत्यकर्म

रेवतीयुगलं ज्येष्ठा मैत्रं हस्तत्रयं मृगः ।
पुनर्वसुश्च विज्ञेयो गणस्तिर्यङ्मुखोबुधैः ॥२१२॥
वृक्षारोपणवाणिज्यं वाहनं यन्त्रमेव च ।
रहरटकं च गमनं सर्वसिद्धिश्च कारयेत् ॥२१३॥

रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा, अनुराधा, हस्त, चित्रा, स्वाती, मृगशिरा और पुनर्वसु इनकी तिर्यङ्मुख संज्ञा है। इनमें वृक्ष लगाना, वाणिज्य करना, वाहन लेना, यन्त्र, रहँट और गमन ये सब कार्य सिद्ध होते हैं।

अधोमुखसंज्ञक नक्षत्र और उनमें कृत्यकर्म

पूर्वात्रयं मघाश्लेषा विशाखा कृत्तिका यमः ।
मूलं चाधोमुखो ज्ञेयो नवकोऽयं गणो बुधैः॥२१४॥
भूकार्यमुग्रकार्यं च खननं विवरस्य च ।
युद्धं चाधोमुखं यच्च तत्कार्यं कारयेद् बुधः ॥२१५॥

तीनों पूर्वा, मघा, अश्लेषा, विशाखा, कृत्तिका, भरणी और मूल इन ९ नक्षत्रों की अधोमुख संज्ञा है। इनमें भूमि-कार्य, उग्रकार्य कूपादि खोदना, युद्ध और नीचे के मुखवाले सब कार्य शुभ होते हैं।

ऊर्ध्वमुखसंज्ञक नक्षत्र और उनमें कृत्यकर्म

उत्तरात्रितयं पुष्यो रोहिण्यार्द्राश्रुतित्रयम् ।
ऊर्ध्ववक्त्रो गणो ज्ञेयो नक्षत्राणां मनीषिभिः ॥२१६॥
प्रासादाच्छन्नगेहानि प्राकारध्वजतोरणम् ।
राज्याभिषेकमश्वं च कुर्यादूर्ध्वमुखे गणे ॥२१७॥

तीनों उत्तरा, पुष्य, रोहिणी, आर्द्रा, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा इन ९ नक्षत्रों की ऊर्ध्वमुख संज्ञा है । इनमें महलादि पर छत डलवाना, घर बनवाना, चहारदिवारी बनवाना, ध्वजा, बन्दनवार, राज्याभिषेक और घोड़े पर चढ़ना आदि शुभ होते हैं ।

तिर्यङ्मुख, अधोमुख और ऊर्ध्वमुखचक्र									
रेवती	अश्वि	ज्येष्ठा	धनु.	हस्त	चित्रा	स्वाती	मृग	पुन.	तिर्यङ्
पू.फा.	पू.षा.	पू.भा.	मघा	अश्ले.	विशा.	कृत्ति.	भरणी	मूल	अधो
उ.फा.	उ.षा.	उ.भा.	पुष्य	रोहि.	आर्द्रा	श्रवण	धनि.	शत.	ऊर्ध्व

भैषज्यमुहूर्त्त

पुनर्वसुद्वयं पौष्णं मृगाश्वौ च करत्रयम् ।
मूलं श्रुतित्रयं मैत्रं भिषक्कर्मणि गृह्यते ॥२१८॥

सोमशुक्रसुरेज्यानां वाराः शकुनमुत्तमम् ।
लग्नेषु चापमीनेषु वृषो ग्राह्यस्तुलाधरः ॥२१९॥

पुनर्वसु, पुष्य, रेवती, मृगशिरा, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और अनुराधा ये नक्षत्र तथा सोम, शुक्र और बृहस्पति ये वार एवं धनु, मीन, वृष और तुला ये लग्न भेषजकर्म (औषध-सेवन) में शुभ हैं । तथा उत्तम शकुन शुभ होते हैं ।

गौ आदि पशुओं के बेचने का मुहूर्त्त ।

अमावस्याष्टमी त्याज्या पूर्णिमा च चतुर्दशी ।
रविवारे वर्जनीयो गोपशूनां च निर्गमः ॥२२०॥
चित्रोत्तरा रोहिणी च श्रवणोऽपि विवर्जितः ।
एतेषु पशुजातीनामशुभो निर्गमो भवेत् ॥२२१॥

अमावस्या, अष्टमी, पूर्णिमा और चतुर्दशी ये तिथियाँ; रविवार और चित्रा, तीनों उत्तरा, रोहिणी और श्रवण ये नक्षत्र गौ आदि पशुओं के बेचने में वर्जित हैं ।

पशुग्रहण मुहूर्त्त

उत्तरायां विशाखायां रोहिण्यां च पुनर्वसौ ।
नवम्यां च चतुर्दश्यामष्टम्यां नानयेत्पशून् ॥२२२॥

तीनों उत्तरा, विशाखा, रोहिणी और पुनर्बसु इन नक्षत्रों में तथा नवमी, चतुर्दशी और अष्टमी इन तिथियों में पशुओं को न लावे ।

पशुक्रय-विक्रय

पूर्वामैत्रद्वयं मूलं वासवं रेवती करः ।
पुनर्वसुद्वयं ग्राह्यं पशूनां क्रयविक्रये ॥२२३॥
पुष्यो भाद्रपदायुग्मं स्वाती श्रुतिरथाश्विनी ।
हस्तोत्तरा मृगो मैत्रं तथाश्लेषा च रेवती ॥२२४॥
ग्राह्याणि भानि चैतानि क्रयविक्रयणे बुधैः ।
चन्द्रभार्गवजीवानां वाराः शकुनमुत्तमम् ॥२२५॥

तीनों पूर्वा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, धनिष्ठा, रेवती, हस्त, पुनर्वसु और पुष्य इन नक्षत्रों में पशुओं का खरीदना और बेचना शुभ है । तथा पुष्य, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, स्वाती, श्रवण, अश्विनी, हस्त, तीनों उत्तरा, मृगशिरा, अनुराधा, अश्लेषा और रेवती इन नक्षत्रों में तथा सोम, शुक्र और बृहस्पति इन वारों में और उत्तम शकुन में विद्वान् क्रय-विक्रय करे ।

तिथिगण्डान्त

नन्दा तिथेश्च नामादौ पूर्णायाश्च तथान्तके ।
घटिकैका शुभे त्याज्या तिथिगण्डे घटिद्वयम् २२६॥

नन्दा तिथियों के आदि की और पूर्णा तिथियों के अन्त की एक-एक घड़ी शुभ कार्य में त्याज्य हैं । अन्त तिथियों के अन्त की दो-दो घड़ी गण्डान्त हैं ।

नक्षत्रगण्डान्त

ज्येष्ठाश्लेषारेवती च नामान्ते घटिकाद्वयम् ।
आदौ मूलमघाश्विन्यां भगण्डघटिकाद्वयम् ॥२२७॥

ज्येष्ठा, अश्लेषा और रेवती इनके अन्त की दो-दो घड़ियाँ तथा मूल, मघा और अश्विनी इनके आदि की दो-दो घड़ियाँ नक्षत्रगण्डान्त हैं ।

लग्नगण्डान्त

मीनवृश्चिककर्कान्ते घटिकार्द्धं परित्यजेत् ।
आदौ मेषस्य चापस्य सिंहस्य घटिकार्द्धकम् ॥२२८॥

मीन, वृश्चिक और कर्क इन लग्नों के अन्त की और मेष, धनु और सिंह इन लग्नों के आदि की आधी-आधी घड़ी लग्नगण्डान्त होती हैं । ये शुभ कार्य में त्याज्य हैं ।

गण्डान्त का फल

तिथिगण्डे भगण्डे च लग्नगण्डे च जातकः ।
न जीवति यदा जातो जीविते च धनी भवेत् २२९॥

तिथिगण्डान्त, नक्षत्रगण्डान्त और लग्नगण्डान्त में पैदा हुआ बालक नहीं जीता। यदि जीवित रहता है तो धनवान् होता है।

संवर्तयोगः

सप्तम्यां च रवेर्वारो बुधश्च प्रतिपद्दिने।
संवर्त्ताख्यस्तदा योगो वर्जनीयः सदा बुधैः ॥२३०॥

सप्तमी को रविवार और प्रतिपदा को बुधवार हो तो संवर्तनाम योग होता है। यह शुभ कार्य में वर्जित है।

सिद्धियोग

शुक्रे नन्दा बुधे भद्रा शनौ रिक्ता कुजे जया।
गुरौपूर्णा तिथिर्ज्ञेया सिद्धियोग उदाहृतः ॥२३१॥

शुक्रवार को नन्दा तिथि, बुधवार को भद्रा तिथि, शनिवार को रिक्ता और मंगलवार को जया तथा गुरुवार को पूर्णा तिथि हो तो सिद्धियोग होता है।

सिद्धियोगचक्र

शुक्र	बुध	शनि	मङ्गल	गुरु	वार
१	२	४	३	५	तिथि
६	७	९	८	१०	
११	१२	१४	१३	१५	

विष्कुम्भादि २७ योग

विष्कुम्भःप्रीतिरायुष्मान्सौभाग्यःशोभनस्तथा।
अतिगण्डः सुकर्मा च धृतिः शूलं तथैव च ॥२३२॥
गण्डो वृद्धिर्ध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा।
वज्रं सिद्धिर्व्यतीपातो वरीयान् परिघः शिवः ॥२३३॥
सिद्धिःसाध्यःशुभःशुक्लो ब्रह्मा ऐन्द्रोऽथवैधृतिः।
सप्तविंशतिराख्याता नामतुल्यफलप्रदाः ॥२३४॥

१ विष्कुम्भ, २ प्रीति, ३ आयुष्मान्, ४ सौभाग्य, ५ शोभन, ६ अतिगण्ड, ७ सुकर्मा, ८ धृति, ९ शूल, १० गण्ड, ११ वृद्धि, १२ ध्रुव, १३ व्याघात, १४ हर्षण, १५ वज्र, १६ सिद्धि, १७ व्यतीपात, १८ वरीयान्, १९ परिघ, २० शिव, २१ सिद्धि, २२ साध्य, २३ शुभ, २४ शुक्ल, २५ ब्रह्म, २६ ऐन्द्र और २७ वैधृति ये सत्ताइस योग हैं। ये नाम के तुल्य फल देते हैं।

बवादि ११ करण

तिथिं तु द्विगुणीकृत्य हीनमेकेन कारयेत्।
सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषं करणमुच्यते ॥२३५॥

बवश्च बालवश्चैव कौलवस्तैतिलस्तथा ।
गरश्च वणिजो विष्टिः सप्तैतानि चराणि च ॥२३६॥
अन्त्ये कृष्णचतुर्दश्यां शकुनिःदर्शभागयोः ।
भवेच्चतुष्पदं नागं किंस्तुघ्नं प्रतिपद्दले ॥२३७॥
स्थिराण्येतानि चत्वारि करणानि जगर्बुधाः ।
शुक्लप्रतिपदन्ते च बवाख्यः करणो भवेत् ।
एकादश च विज्ञेयाश्चरस्थिरविभागतः ॥२३८॥

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से वर्तमान तिथि तक गिनकर उसे दुगुना करे और उसमें से एक घटावे, फिर सात का भाग दे जो शेष बचे उसे ववादि करण जाने । यथा १ बचे तो वव, २ बचें तो बालव, ३ बचें तो कौलव, ४ बचें तो तैतिल, ५ बचें तो गर, ६ बचें तो वणिज और ७ बचें तो विष्टि ये सात चर करण हैं । कृष्णचतुर्दशी के उत्तरार्ध में शकुनि करण, अमावस्या के पूर्वार्ध में चतुष्पद करण तथा अमावस्या के उत्तरार्ध में नागकरण और शुक्लप्रतिपदा के पूर्वार्ध में किंस्तुघ्न करण होता है । ये ४ करण विद्वानों ने स्थिर कहे हैं । शुक्ल प्रतिपदा के उत्तरार्ध में बव नामक करण होता है । स्थिर और चर के भेद से ग्यारह करण होते हैं ।

कृष्णपक्ष के करण

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३०	तिथि
बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	चतुष्पद	पूर्वार्ध
कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	शकुनि	नाग	परार्ध

शुक्लपक्ष के करण

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	तिथि
किंस्तुघ्न	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	पूर्वार्ध
बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	बव	परार्ध

नक्षत्रदेवता

दस्रो यमोऽनलो धाता चन्द्रो रुद्रोऽदितिर्गुरुः ।
भुजङ्गमश्च पितरो भगोर्[illegible]करौ ॥२३९॥

त्वष्टा वायुः शक्रवह्नी मित्रः शक्रश्च निर्ऋतिः ।
जलं विश्वे विधिर्विष्णुर्वासवोवरुणस्तथा ॥२४०॥
अजैकपादहिर्बुध्न्यः पूषेति कथिता बुधैः ।
अष्टाविंशतिसंख्यानां नक्षत्राणामधीश्वराः ॥२४१॥

इति श्रीकाशीनाथभट्टाचार्यकृतशीघ्रबोधे द्विरागमनमुहूर्त्तप्रकरणं संपूर्णम् ।

नक्षत्रदेवताचक्र

नक्षत्र	संख्या	देवता	नक्षत्र	संख्या	देवता
अ.	१	अश्विनीकु.	स्वा.	१५	वायु
भ.	२	यम	वि.	१६	इन्द्राग्नि
कृ.	३	अग्नि	अनु.	१७	मित्र
रो.	४	ब्रह्मा	ज्ये.	१८	इन्द्र
मृ.	५	चन्द्रमा	मू.	१९	राक्षस
आर्द्रा	६	रुद्र	पू. षा.	२०	जल
पुन.	७	अदिति	उ. षा.	२१	विश्वेदेव
पुष्य	८	बृह.	अभि.	२२	विधि
अश्ले.	९	सर्प	श्र.	२३	विष्णु
म.	१०	पितृ	ध.	२४	वसु
पू. फा.	११	भग	श.	२५	वरुण
उ. फा.	१२	अर्यमा	पू. भा.	२६	अजैकपाद
ह.	१३	सूर्य	उ. भा.	२७	अहिर्बुध्न्य
चि.	१४	त्वष्टा	रे.	२८	पूषा

१ अश्विनीकुमार, २ यम, ३ अनल, ४ धाता, ५ चन्द्र, ६ रुद्र, ७ अदिति, ८ गुरु, ९ सर्प, १० पितर, ११ भग, १२ अर्यमा, १३ सूर्य, १४ त्वष्टा, १५ वायु, १६ इन्द्राग्नि, १७ मित्र, १८ इन्द्र, १९ निर्ऋति (राक्षस), २० जल, २१ विश्वेदेव, २२ विधि, २३ विष्णु, २४ वसु, २५ वरुण, २६ अजैकपाद, २७ अहिर्बुध्न्य, और २८ पूषा ये क्रम से २८ नक्षत्रों के स्वामी हैं ।

इति श्रीखूबचन्दशर्मविरचितायांसुबोधिनीभाषाटीकायां शीघ्रबोधस्य द्वितीयं प्रकरणं समाप्तम् ।

—:०:—

श्रीः

तीसरा प्रकरण

प्रश्नफल

शिरोमुखे कर्णनेत्रे स्पृष्ट्वा पृच्छति यो नरः ।
सुवर्णधनधान्यानां लाभस्तत्र न संशयः ॥ १ ॥
स्कन्धग्रीवाकण्ठहस्तस्पर्शे लाभो हि दुःखितः ।
कुक्षिनाभिसमालम्भेभक्ष्यपानादिसिध्यति ॥ २ ॥
जङ्घालिङ्गकटिस्पर्शे कन्यालाभः सुतोद्भवः ।
जानुगुल्फपदस्पर्शे महाक्लेशः प्रजायते ॥ ३ ॥
केशस्पर्शे भवेन्मृत्युः फलस्पर्शे शुभं भवेत् ।
तृणाङ्गारकसंस्पर्शे कार्यसिद्धिर्न जायते ॥ ४ ॥
काष्ठकंकपटस्पर्शे ग्रहपीडाभयं भवेत् ।
सुगन्धमद्यभाण्डादिस्पर्शे सिद्धिः प्रजायते ॥ ५ ॥
शून्यालये श्मशाने च शुष्ककाष्ठक्षते तरौ ।
गुल्फभस्माधमस्थाने प्रश्ने क्लेशः प्रजायते ॥ ६ ॥

देवागारे नदीतीरे दिव्यस्थाने शुभं भवेत् ।
शुभं दिक्ष्वीरितं सिद्धिर्विदिक्षु च न जायते ॥ ७ ॥

प्रश्नकर्त्ता मनुष्य यदि शिर, मुख, कान या आँखों का स्पर्श करता हुआ पूछे तो उसे निस्सन्देह सुवर्ण, धन और अन्नादि का लाभ होता है । कंधा, गर्दन, कण्ठ और हाथों का स्पर्श करता हुआ पूछे तो कष्ट से लाभ होता है । कुक्षि या नाभि का स्पर्श कर पूछे तो अन्न-पानादि का लाभ होता है । जाँघ, लिङ्ग और कटिप्रदेश का स्पर्श कर पूछे तो कन्या अथवा पुत्र का लाभ होता है । मोटी जाँघ, घुटना या पैरों को छूता हुआ प्रश्न करे तो अत्यन्त दुःख होता है । यदि बालों को छूता हुआ पूछे तो मृत्यु हो । फल छूता हुआ पूछे तो शुभ हो । तृण या अंगार छूता हुआ पूछे तो कार्य-सिद्धि न हो । काष्ठ, कीच और वस्त्र छूकर पूछे तो ग्रहकृत पीड़ा जानना । सुगन्ध या मदिरा का पात्र छूता हुआ पूछे तो कार्य सिद्ध हो । शून्य स्थान में, श्मशान में, सूखे काठ पर या टूटे वृक्ष के नीचे पूछे या भस्म पर अथवा नीचे स्थान पर पूछे तो क्लेश हो । देवस्थान, नदी के किनारे अथवा सुन्दर स्थान पर पूछने से शुभ होता है । शुभ दिशा में पूछे तो कार्य सिद्ध होता है तथा विदिशा (कोणों) में पूछे तो सिद्धि नहीं होती ।

लग्नमान

तिस्रो मीने च मेषे च घटीपञ्च श्रुतिः पलम् ।
चतस्रश्च वृषे कुम्भे पलाः प्रोक्तास्तु षोडश ॥ ८ ॥
मिथुने मकरे पञ्च घटिका विशिखाः पलम् ।
पञ्च कर्के च चापे च शशिवेदाः पलाः स्मृताः ॥ ९ ॥
कन्यायां च तुले पञ्च पलाश्चन्द्रस्तथाग्नयः ।
घटिकाः पञ्च सिंहेऽलौ द्व्यवेदाः पलाः स्मृताः ।
एवं लग्नप्रमाणं स्यात् कथितं पूर्वसूरिभिः ॥ १० ॥

मीन और मेषलग्न* ३ घड़ी ४५ पल, वृष-कुंभ ४ घ० १६ प०, मिथुन और मकर ५ घ० ५ प०, कर्क और धनु ५ घ० ४१ प०, कन्या और तुला ५ घ० ३१ प०, सिंह तथा वृश्चिक लग्न ५ घड़ी ४२ पल रहती है । यह विद्वानों ने लग्न का प्रमाण कहा है ।

ग्रहों के दान

सूर्ये धेनुश्च ताम्रं च गोधूमं रक्तचन्दनम् ।
चन्द्रे शंखं चन्दनं च वस्त्रं च सिततन्दुलाः ॥ ११ ॥

*यह स्थूल मत है । लग्नमान प्रत्येक नगर का अलग-अलग होता है ।

कुजे वृषः प्रदातव्यो रक्तवस्त्रं गुडौदनम् ।
बुधे कर्पूरमुद्गाश्च हरिद्रा च हरिन्मणिः ॥ १२ ॥
पीतवस्त्रद्वयं जीवे हरिद्रा चणकानि च ।
अश्वःशुक्रेसितोदेयः शुक्लधान्यानियानिच ॥ १३ ॥
शनौ तैलं तिला देयाः कृष्णगोदानमुत्तमम् ।
राहोश्च महिषीछागौ माषाश्च तिलसर्षपाः ॥ १४ ॥
अजामेषौ च दातव्यौ केतौ चान्नञ्च मिश्रितम् ।
स्वर्णगोविप्रपूजाभिः सर्वेषां शान्तिरुत्तमा ॥ १५ ॥

सूर्य का दान लाल गौ, ताँबा, गेहूँ और लाल चन्दन । चन्द्रमा का दान शंख, सफेद चन्दन, सफेद वस्त्र और सफ़ेद चावल । मंगल का दान बैल, लाल वस्त्र, गुड़ और चावल । बुध का दान कपूर, मूँग, हल्दी और हरी मणि । गुरु का दान दो पीले वस्त्र, हल्दी और चने की दाल । शुक्र का दान सफ़ेद घोड़ा और सफ़ेद वस्त्र तथा सफ़ेद अनाज । शनि का दान तेल, तिल और काली गौ । राहु का दान भैंस, बकरी, उड़द, तिल और सरसों । केतु का दान बकरी, भेड़ और सतनजा । पूर्वोक्त दान देने से तथा सुवर्णदान, गोदान और ब्राह्मण की पूजा करने से सब ग्रहों की शान्ति होती है ।

गुरुचार

मेषे गुरौ सुभिक्षं च सुवृष्टिश्च सुखी नरः ॥ १६ ॥
वृषे गुरौ स्वल्पवृष्टिः प्रजापीडा च विग्रहः ।
अनावृष्टिः प्रजाऽनाथा वैरं च मिथुने गुरौ ॥ १७ ॥
कर्के गुरौ महावृष्टिर्देशभङ्गो महर्घता ।
सिंहे गुरौ सुभिक्षं च सुवृष्टिश्च प्रजासुखम् ॥ १८ ॥
कन्यागुरौ रोगपीडा सुभिक्षं सस्यजन्म च ।
तुले गुरौ सस्यनाशो बहुक्षीरं प्रजायते ॥ १६ ॥
अलौ जीवे च दुर्भिक्षं राजचौरोरगाद् भयम् ।
चापे गुरौ शुभा वृष्टिः शुभा सस्यमहर्घता ॥ २० ॥
दुर्भिक्षं मकरे जीवे राजयुद्धं पशुक्षयः ।
कुम्भेगुरौ च दुर्भिक्षं धातुमूलं महर्घता ॥ २१ ॥
दुर्भिक्षं दक्षिणे देशे झषे जीवे न चान्यगे ॥ २२ ॥

जब मेषराशि में बृहस्पति आते हैं तब अच्छा सुकाल होता है। उत्तम वर्षा होती तथा मनुष्य सुखी रहते हैं। वृष के बृहस्पति में थोड़ी वर्षा, प्रजा को पीड़ा और उनमें परस्पर युद्ध होता है। मिथुन के गुरु में वर्षा का अभाव, प्रजा अनाथ, और परस्पर वैर होता है। कर्क के गुरु में महावृष्टि, देशों का भङ्ग तथा महँगी होती है। सिंह के

गुरु में सुभिक्ष, उत्तम वर्षा और प्रजा को सुख होता है। कन्या के गुरु में रोग, पीड़ा, सुभिक्ष और अन्नों की उत्पत्ति होती है। तुला के गुरु में खेती का नाश और दूध बहुत होता है। वृश्चिक के गुरु में दुर्भिक्ष तथा राजा, चौर और सर्पों से भय होता है। धनु के गुरु में अच्छी वर्षा और उत्तम खेती होती है और रस महँगा होता है। मकर के बृहस्पति में राजाओं में युद्ध और पशुओं का नाश होता है। कुम्भ के बृहस्पति में दुर्भिक्ष तथा धातु और मूल महँगे होते हैं। मीन के बृहस्पति में दक्षिण देश में दुर्भिक्ष होता है अन्य देशों में नहीं होता।

संक्रान्ति में वर्षा का फल

मार्गकार्तिकसंक्रान्तौ वृष्टिर्वर्षति मध्यमा ।
पौषे माघे नृणां सौख्यं सस्यपूर्णा वसुन्धरा ॥२३॥
चैत्रफाल्गुनवैशाखज्येष्ठानां संक्रमे घनः ।
यदि वर्षति सर्वत्र सुभिक्षं च प्रजासुखम् ॥२४॥
आषाढे संक्रमे वृष्टौ व्याधिश्च श्रावणे सुखम् ।
भाद्रे च बहवो रोगाः सुखं सर्वत्र चाश्विने ॥२५॥
इत्येषामतिसंक्रान्तौ वृष्टिश्चापि शुभाशुभम् ॥२६॥

मार्गशीर्ष और कार्त्तिक की संक्रान्ति के दिन यदि वर्षा हो तो वर्षा ऋतु में मध्यम वर्षा होती है। पौष और माघ की संक्रान्ति के दिन वर्षा हो तो मनुष्यों को सुख तथा पृथ्वी अन्न से पूर्ण होती है। फाल्गुन, चैत्र, वैशाख तथा ज्येष्ठ की संक्रान्ति के दिन वर्षा हो तो सब जगह सुभिक्ष तथा प्रजा को सुख होता है। आषाढ़ की संक्रान्ति के दिन वर्षा हो तो रोग होता है तथा श्रावण की संक्रान्ति के दिन वर्षा हो तो सुख होता है। भाद्रपद की संक्रान्ति को वर्षा हो तो रोग होते हैं तथा आश्विन की संक्रान्ति के दिन वर्षा हो तो सर्वत्र सुख होता है।

वायु से वृष्टि का ज्ञान

चैत्रस्य शुक्लपञ्चम्यां पूर्वे वायुर्धनागमः।
भाद्रे गुणत्रयं मौल्यं रसानां जायते यदा ॥२७॥
ज्येष्ठस्य शुक्लपञ्चम्यां वृष्टिः पश्चिममारुतः।
तदा चतुर्गुणं मौल्यं धान्यानां कार्तिके भवेत्॥२८॥
श्रावणे शुक्लपञ्चम्यां वृष्टिर्वातो दिनद्वयम्।
दक्षिणे पश्चिमे ज्ञेयंदुर्भिक्षं धान्यसंक्षयः ॥२९॥
चित्रास्वातीविशाखासु श्रावणे चैव वर्षति।
सर्वरत्नं परित्यज्य कर्तव्यश्चान्नसंचयः ॥ ३० ॥

चैत्रशुक्ल पञ्चमी को पूर्व की वायु चले तो वर्षा हो तथा भाद्रपद में रसों का तिगुना मूल्य हो। ज्येष्ठशुक्ल पञ्चमी को पश्चिम की वायु चले तो वर्षा हो तथा कार्त्तिक में अन्न का चौगुना मूल्य हो। श्रावणशुक्ल पञ्चमी को दो दिन वर्षा हो तथा पवन चले तो दक्षिण तथा पश्चिम देश में दुर्भिक्ष हो तथा अन्न का क्षय हो। यदि श्रावण में चित्रा, स्वाती और विशाखा इन नक्षत्रों में वर्षा हो तो सब रत्नों को बेचकर अन्न का संचय करना चाहिए। अर्थात् दुर्भिक्ष की सम्भावना रहती है।

वायुपरीक्षा

आषाढे पूर्णिमायां चेदनिलो वाति नैऋते।
अनावृष्टिर्धान्यनाशो जलं कूपे न दृश्यते ॥३१॥
आषाढे पूर्णिमायां तु वायव्ये यदि मारुतः।
धर्मसिद्धिस्तदा लोके धनधान्यं गृहे गृहे ॥३२॥
आषाढे पूर्णिमायां तु ईशान्ये वाति मारुतः।
सुखिनो हि तदा लोकाः गीतवाद्यपरायणाः ॥३३॥
वह्निकोणे वह्निभीतिः पश्चिमे च जलाद्भयम्।
अन्यत्र यदि वायुः स्यात्सुभिक्षं जायते तदा ॥३४॥
सर्वमासे पूर्णिमायां भूमिकम्पो यदा भवेत्।
उल्कातारावज्रपातग्रसितौ शशिसूर्यकौ ॥३५॥

धूम्रकेतुः शक्रचापग्रहणे बहुधा तथा।
तदासौ सर्ववस्तूनां जायते च महर्घता ॥३६॥

आषाढ़ की पूर्णिमा को यदि नैर्ऋत्य की पवन चले तो वर्षा न हो, खेती नष्ट हो जाय और कुओं में भी जल न दिखाई दे। यदि आषाढ़ की पूर्णिमा को वायव्य की पवन चले तो धर्म की सिद्धि हो और घर-घर में धन-धान्य हो। आषाढ़ की पूर्णिमा को यदि ईशान की वायु चले तो सब लोकों में सुख हो और सब लोग गाने-बजाने में प्रसन्न रहें। अग्निकोण की पवन चले तो अग्नि का भय हो। पश्चिम की वायु चले तो जल से भय हो। यदि अन्य ओर की वायु चले तो सुभिक्ष हो। सब महीनों में से किसी पूर्णिमा को भूकम्प हो, उल्कापात हो, तारा टूटें, बिजली गिरे, चन्द्र या सूर्य का ग्रहण हो, धूमकेतु का उदय हो और बार-बार इन्द्र का धनुष दिखाई दे तो सब वस्तुएँ महँगी हों।

आषाढे शुक्लपञ्चम्यां द्वितीयायां च वर्षति।
यदि मेघस्तदा वृष्टिः श्रावणे जायते ध्रुवम् ॥३७॥
तृतीयायां पूर्ववायुः पूर्वे याति च वारिदः।
यदि व्योम्नि तदा भाद्रे वर्षते विपुलं जलम् ॥३८॥

चतुर्थ्यां दक्षिणे वायुर्मेघः पूर्वे च गच्छति।
आश्विने च तदा मासे वृष्टिर्भवति निश्चितम् ॥३९॥

आषाढ़ में शुक्लपक्ष की पञ्चमी या द्वितीया को यदि पानी बरसे तो श्रावण में अवश्य वर्षा होती है। यदि तृतीया को पूर्व की वायु चले और पूर्व को बादल जावें तो भाद्रपद में बहुत जल बरसता है। यदि चतुर्थी को दक्षिण की वायु चले और बादल पूर्व को जावें तो आश्विन में निश्चय वर्षा होती है।

पञ्चम्यामुत्तरे वायुर्दृश्यते च यदा बुधे।
तदा च कार्त्तिके मासे वृष्टिर्भवति भूयसी ॥ ४० ॥
चतुष्टये च दिवसे यदा वर्षति वारिदः।
अतिवृष्ट्यां च दुर्भिक्षं जायते नात्र संशयः ॥ ४१ ॥
दिनद्वयं यदा वाता वान्ति दक्षिणपश्चिमे।
तदा नश्यन्ति धान्यानि दुर्भिक्षं च प्रजायते ॥४२॥
तृतीयायां च पञ्चम्यां वायुः पूर्वोत्तरं यदि।
तदा धान्यानि जायन्ते सर्वं कृतयुगोपमम् ॥ ४३ ॥

यदि आषाढ़शुक्ल पञ्चमी को बुधवार हो और उत्तर की वायु चले तो कार्त्तिक में बहुत वर्षा होती है। यदि

आषाढ़ की २, ३, ४, ५ को वर्षा हो तो अत्यन्त वर्षा से निस्सन्देह दुर्भिक्ष होता है। आषाढ़शुक्ल द्वितीया और तृतीया को दक्षिण और पश्चिम की वायु चले तो अन्न नष्ट हों और दुर्भिक्ष हो। यदि आषाढ़शुक्ल तृतीया और पञ्चमी को पूर्व और उत्तर की वायु चले तो सब अन्न उत्पन्न हों और सतयुग का-सा समय हो जाय।

पौषे मूलाद्भरण्यन्तं चन्द्रचारे न गर्जति।
आर्द्रादितो विशाखान्तं सूर्यऋक्षे न वर्षति॥ ४४॥
यदि तिष्ठति भौमस्य क्षेत्रे कोऽपि ग्रहस्तदा।
षण्मासं तुषधान्यानां जायते च महर्घता॥ ४५॥
शुक्रक्षेत्रे कुजे मासद्वयं नूनं महर्घता।
चन्द्रे च दिननाथे च सर्वरोगः शुभं तदा॥ ४६॥
शनौ राहौ सर्वधान्यं समर्घं राजविग्रहम्।
बुधक्षेत्रे रवौ चन्द्रे विरोधः सर्वभूभुजाम्॥ ४७॥
उत्पत्तिस्तुषधान्यानां पञ्चमासं प्रजायते।
सुभिक्षं तु महावृष्टिः पशूनां तृणसंकुलम्॥ ४८॥

यदि पौष में मूल से लेकर भरणी तक चन्द्र-नक्षत्रों में बादल नहीं गरजते तो आर्द्रा से विशाखा तक सूर्य के नक्षत्रों में वर्षा नहीं होती। जब मंगल के घर (मेष-वृश्चिक) में

कोई ग्रह होता है तो छः महीने तक तुष धान्य महँगे रहते हैं। जब शुक्र के घर (वृष-तुला) में मंगल होता है तो दो महीने तक अवश्य महँगी रहती है। जब शुक्र के घर में सूर्य या चन्द्रमा आते हैं तो सब रोगों की वृद्धि होती है। किन्तु और सब शुभ रहता है। जब शुक्र के घर में शनि या राहु आते हैं तो सब धान्य महँगे होते हैं और राजाओं में लड़ाई होती है। जब बुध के घर में सूर्य या चन्द्रमा आते हैं तब सब राजाओं में विरोध होता है और तुष धान्यों की पाँच महीने तक वृद्धि होती है। सुभिक्ष और अच्छी वर्षा होती है। पशुओं के लिए तृण बहुत होते हैं।

ग्रहविचार

शुक्रक्षेत्रे बुधश्चन्द्रश्चन्द्रक्षेत्रे भृगोः सुतः।
पाखण्डिनां भवेद्वृद्धिर्धान्यानां च महर्घता॥४९॥
बुधक्षेत्रे शनौ चन्द्रे सर्वधान्यमहर्घता।
शुक्रक्षेत्रे गुरौ भौमे कार्पासादिमहर्घता॥५०॥
भौमक्षेत्रे शनी राहुस्ताम्रादीनां महर्घता।
शनिक्षेत्रे शनी राहुः सुभिक्षं चन्द्रभास्करे॥५१॥
पशुनाशौ धान्यवृद्धिर्गुडादीनां महर्घता।
गुरुक्षेत्रे शनौ राहौ स्वल्पवृष्टिस्तृणक्षयः॥५२॥

भौमे राज्ञो विरोधः स्याद् बुधे वृष्टिश्च भूयसी ।
तृणवृद्धिः पशूनां च सौख्यं धान्यं बहूनि च ॥५३॥
भौमक्षेत्रे यदा सन्ति राहुभौमार्कभार्गवाः ।
षण्मासं गुडकार्पासघृतक्षीरमहर्घता ॥५४॥
मन्दक्षेत्रे यदा सन्ति मन्दराहुबुधास्तथा ।
चतुष्पदानां नाशश्च द्विपदानां च जायते ॥५५॥

शुक्र की राशि में बुध या चन्द्रमा हो और चन्द्रमा की राशि में शुक्र हो तो पाखण्डियों की वृद्धि हो और अनाज महँगे हों । बुध की राशि में शनि या चन्द्रमा हो तो सब अन्न महँगे हों । यदि शुक्र की राशि में बृहस्पति या मंगल हो तो कपास आदि महँगे होते हैं । मंगल की राशि में शनि या राहु हो तो ताँबा आदि महँगे होते हैं । शनि की राशि में शनि या राहु हो तो सुभिक्ष होता है । चन्द्रमा या सूर्य की राशि में शनि या राहु हो तो पशुओं का नाश, अनाज की वृद्धि तथा गुड़ आदि की महँगी होती है । जब बृहस्पति के घर में शनि या राहु आते हैं तो वर्षा कम होती है और तृणों का नाश होता है । गुरु के क्षेत्र में जब मंगल आता है तो राजाओं में विरोध होता है और जब बुध आता है तो वर्षा बहुत होती है । तृणों की वृद्धि,

पशुओं को सुख और अन्न बहुत होता है । मंगल की राशि में जब राहु, मंगल, सूर्य या शुक्र होता है, तब छः महीने तक गुड़, कपास, घी और दूध महँगा रहता है । जब शनि की राशि में शनि, राहु या बुध होता है तो चौपायों और मनुष्यों का नाश होता है ।

भौमक्षेत्रे यदा सन्ति शुक्रमन्दनिशाकराः ।
तदा मुक्तापशूनां च शङ्खस्य च महर्घता ॥ ५६ ॥
भौमक्षेत्रे भार्गवश्च धान्यानां च महर्घता ।
शनिक्षेत्रे रवौ चन्द्रे वस्त्राणां च महर्घता ॥ ५७ ॥
शुक्रक्षेत्रे गुरुभौमः प्रजापीडा प्रजायते ।
ग्रहराशिसमायोगे फलमेतत्प्रकीर्तितम् ॥ ५८ ॥

मंगल की राशि में जब शुक्र, शनि या चन्द्रमा होता है तब मोती, पशु और शंख महँगे होते हैं । मंगल की राशि में जब शुक्र आता है तो अन्न की महँगी होती है । शनि की राशि में जब रवि या चन्द्रमा होता है तो वस्त्र महँगे रहते हैं । शुक्र की राशि में जब बृहस्पति या मंगल आता है तो प्रजा को पीड़ा होती है । यह ग्रह और राशियों के योग का फल कहा है ।

चन्द्रोदये कुजक्षेत्रे तुषधान्यस्य वृद्धये ।
चन्द्रोदये भृगुक्षेत्रे स्वल्पवृद्धिः क्रयाणके ॥ ५९ ॥
प्रजापीडा बुधक्षेत्रे सोमशुक्रोदयो भवेत् ।
रविक्षेत्रे तुलावृद्धिः शनिसोमभृगूदये ॥ ६० ॥
चन्द्रक्षेत्रे शुक्रचन्द्रबुधानामुदयो भवेत् ।
षण्मासं स्याच्च दुर्भिक्षमतिवृष्टिश्च जायते ॥ ६१ ॥
उदितौ च बुधक्षेत्रे यदि राहुशनैश्चरौ ।
पशुक्षयः प्रजापीडा धान्यानां च महर्घता ॥ ६२ ॥
शुक्रक्षेत्रे सोमसूर्यसूर्यपुत्रोदयो यदा ।
उदयास्तमहापीडा जायते च महर्घता ॥६३॥

मंगल के क्षेत्र में चन्द्रमा का उदय हो तो तुष धान्यों की वृद्धि होती है। शुक्र के क्षेत्र में चन्द्रमा का उदय हो तो खरीदनेवाले को कम लाभ होता है। बुध के क्षेत्र में चन्द्रमा या शुक्र का उदय हो तो प्रजा को पीड़ा होती है। सूर्य के क्षेत्र में शनि, चन्द्रमा या शुक्र का उदय हो तो तुला वृद्धि होती है। यदि चन्द्रमा के क्षेत्र में शुक्र, चन्द्रमा या बुध का उदय हो तो छः महीने तक दुर्भिक्ष रहता है और वर्षा अधिक होती है। यदि बुध के क्षेत्र में राहु या शनि का उदय हो तो पशुओं की मृत्यु, प्रजा को पीड़ा और अनाज की महँगी होती है। शुक्र के क्षेत्र में चन्द्रमा, सूर्य या शनि का उदय हो तो जब तक ये अस्त न हों तब तक प्रजा को अत्यन्त पीड़ा और महँगी रहती है।

यदोदयः शनिक्षेत्रे भौमभास्करयोर्भवेत् ।
घृतानां च तदा वृद्धिर्गुडानां च महर्घता ॥६४॥
यदासावुदितश्चैव शनिक्षेत्रे शनैश्चरः ।
तदासौ तृणकाष्ठानां लोहानां च महर्घता ॥६५॥

जब शनि के क्षेत्र में मंगल या सूर्य का उदय होता है तब घी की वृद्धि और गुड़ की महँगी होती है। जब शनि के क्षेत्र में शनि का उदय होता है तब तृण, काष्ठ और लोह महँगा होता है।

आर्द्रायां तु यदा भौमः शनिरग्नेस्तथा भवेत् ।
बुधो भाद्रे च दुर्भिक्षं सुभिक्षं भृगुनन्दने ॥६६॥
गुरुर्यदा विशाखायां तदा धान्यमहर्घता ।
मङ्गलं वर्षकालान्तं शनौ सर्वत्र मङ्गलम् ॥६७॥

जब आर्द्रा में मंगल, कृत्तिका में शनि भाद्रपदा में बुध होता है तब दुर्भिक्ष होता है। और इन्हीं नक्षत्रों में जब शुक्र होता है तो सुभिक्ष होता है। जब विशाखा में बृहस्पति होता है तब अनाज महँगा होता है और एक वर्ष तक शुभ रहता है। और शनि होता है तो सर्वत्र मंगल होता है।

सुभिक्षं चानुराधायां यदि कोऽपि ग्रहो भवेत् ।
कल्याणं च सुभिक्षं चाऽश्लेषायां च स्थिते गुरौ॥६८॥

जब अनुराधा नक्षत्र में कोई भी ग्रह होता है तब सुभिक्ष रहता है। जब अश्लेषा में बृहस्पति होता है तब संसार का कल्याण होता है और सुभिक्ष रहता है।

कार्पासा बहवो मन्दे भौमे कटकपीडनम् ।
बुधे तिलाश्च माषाश्च महर्घं वर्षकालतः ॥६९॥

जब अश्लेषा नक्षत्र पर शनि आता है तब कपास बहुत होती है। मंगल आता है तो सेना को पीड़ा होती है। बुध आता है तो तिल और उड़द एक वर्ष तक महँगे रहते हैं।

सूर्ये सर्वाणि धान्यानि महर्घाणि भवन्ति च ।
शुक्रे च बहुला वृष्टिः सस्यवृद्धिश्च जायते ॥७०॥

जब अश्लेषा पर सूर्य आता है तब सब अन्न महँगे हो जाते हैं। शुक्र आता है तब वर्षा बहुत होती है और अन्न अधिक पैदा होता है।

मूले कुलित्थमुद्गानां गुरौ वृद्धिः प्रजायते ।
भौमे मुद्गस्यनाशः स्याद् बुधे च सर्वसंपदः ॥७१॥

पूर्वाषाढागते भौमे पीडा च पशुपक्षिणाम् ।
केतौ महर्घता मन्दे जायते च महर्घता ॥७२॥
उत्तराषाढके जीवे गुडानां च महर्घता ।
भौमे च पशुजातीनां जायते च महर्घता ॥७३॥
अभिजिन्नामनक्षत्रे यदा छायासुतो भवेत् ।
सर्वसस्यानि जायन्ते सुभिक्षं च कुजे तथा ॥७४॥

मूल के बृहस्पति में कुलथी और मूंग की उत्पत्ति अधिक और मूल के मंगल में मूंग की उत्पत्ति कम होती है। जब मूल में बुध होता है तब सब संपत्तियाँ होती हैं। जब पूर्वाषाढ़ में मंगल होता है तब पशु-पक्षियों को पीड़ा होती है। पूर्वाषाढ़ पर केतु या शनैश्चर आता है तो सब वस्तुएँ महँगी होती हैं। उत्तराषाढ़ पर बृहस्पति आता है तो गुड़ महँगा होता है। और मंगल आता है तो पशु महँगे होते हैं। जब अभिजित् नक्षत्र पर शनैश्चर आता है तब सब अन्न पैदा होते हैं और मंगल आता है तो सुभिक्ष होता है।

श्रवणे च यदा जीवस्तदा स्युः सर्वसंपदः ।
बुधे राजसुतत्रासः शनौ भूरिक्षकारकः ॥७५॥
कृत्तिकायां च रोहिण्यां यदा जीवो हि तिष्ठति-
मध्यमानि च सस्यानि तदा वृष्टिश्च मध्यमा॥७६॥

आर्द्रायां मृगशीर्षे च यदा वाचस्पतिः स्थितः ।
दुर्भिक्षंस्यादनावृष्टिः प्रजानां च सदा शिवम् ॥७७॥
फाल्गुनीद्वयहस्तेषु मघायां च यदा गुरुः ।
सुभिक्षं च सुवृष्टिश्च प्रजानां स्यादरोगता ॥७८॥

श्रवण में जब बृहस्पति आता है तब सब संपदाएँ होती हैं। बुध आता है तो राजपुत्रों से भय रहता है और शनि आता है तो ईख बहुत होती है। जब बृहस्पति कृत्तिका अथवा रोहिणी में रहता है तब वर्षा मध्यम होती है और अन्न की उत्पत्ति भी साधारण होती है। और जब आर्द्रा या मृगशिरा में बृहस्पति रहता है तब दुर्भिक्ष होता है, वर्षा नहीं होती, परन्तु प्रजा में आनन्द रहता है। पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त अथवा मघा में जब बृहस्पति होता है तब सुभिक्ष रहता है, वर्षा अच्छी होती है और प्रजा नीरोग रहती है।

चित्रास्वात्योर्यदा जीवस्तदा चित्रपयोधरः ।
विचित्राणि भवन्त्येव सस्यानिचक्वचित्क्वचित् ७९॥
विशाखामैत्रयोर्जीवे धान्यं वर्षा च मध्यमा ।
ज्येष्ठामूले मासयुग्मं वृष्टिर्मासद्वये न च ॥ ८० ॥

जब चित्रा या स्वाती में गुरु रहते हैं तब विचित्र वर्षा होती है। और अन्न भी कहीं-कहीं विचित्र ही उत्पन्न होते हैं। विशाखा और अनुराधा के बृहस्पति में धान्य और वर्षा मध्यम होती है। तथा ज्येष्ठा और मूल के बृहस्पति में दो महीने तक वर्षा नहीं होती।

पूर्वाषाढोत्तरायां च स्थितो यदि बृहस्पतिः ।
तदारोग्यं सुभिक्षं च सुवृष्टिश्च प्रजायते ॥ ८१ ॥
अनावृष्टिश्च दुर्भिक्षं रेवत्यां संस्थिते गुरौ ।
धनिष्ठायां च शुक्रेऽपि पीडा भवति हस्तिनाम् ॥८२॥

इति श्रीकाशीनाथभट्टाचार्यकृतशीघ्रबोधे
प्रश्नफलप्रकरणं समाप्तम् ॥ ३ ॥

पूर्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़ में जब बृहस्पति होते हैं तब आरोग्य, सुभिक्ष और उत्तम वर्षा होती है। जब रेवती नक्षत्र में बृहस्पति होते हैं तब वर्षा नहीं होती और दुर्भिक्ष होता है। इसी प्रकार जब धनिष्ठा नक्षत्र में शुक्र होता है तब हाथियों को पीड़ा होती है।

इति श्रीखूबचन्दशर्मविरचितायां सुबोधिनीभाषाटीकायां
शीघ्रबोधस्य तृतीय प्रकरणं समाप्तम् ।

—:०:—

॥ श्रीः ॥

चौथा प्रकरण

होडाचक्र

अब नक्षत्रों का विचार कहते हैं। एक नक्षत्र के चार चरण होते हैं। जिस नक्षत्र के जिस चरण में बालक उत्पन्न हो उसका नाम उसी चरण के अक्षर पर रखना चाहिए सो कहते हैं।

चू, चे, चो, ला अश्विनी १, ली, लू, ले, लो भरणी २, आ, ई, उ, ए कृत्तिका ३, ओ, वा, बी, बू, रोहिणी ४, बे, बो, का, की मृगशिरा ५, कू, घ, ङ, छ आर्द्रा ६, के, को, हा, ही पुनर्वसु ७, हू, हे, हो डा पुण्य ८, डी, डू, डे, डो अश्लेषा ९, मा, मी, मू, मे मघा १०, मो, टा, टी, टू पूर्वाफाल्गुनी ११, टे, टो, पा, पी उत्तराफाल्गुनी १२, पू, ष, ण, ठ हस्त १३, पे, पो, रा, री चित्रा १४, रू, रे, रो, ता स्वाती १५, ती, तू, ते, तो विशाखा १६, ना, नी, नू, ने अनुराधा १७, नो, या, यी, यू ज्येष्ठा १८, ये, यो, भा, भी मूल १९, भू, धा, फा, ढा पूर्वाषाढा २०, भे, भो, जा, जी

उत्तराषाढा २१, जू, जे, जो, खा अभिजित् २२, खी, खू, खे, खो श्रवण २३, गा, गी, गू, गे धनिष्ठा २४, गो, सा, सी, सू शतभिषा २५, से, सो, दा, दी पूर्वाभाद्रपदा २६, दू, थ, झ, ञ उत्तराभाद्रपदा २७, दे, दो, चा, ची रेवती २८।

लघ्वङ्क राशियाँ

आला मेष १, उवा वृष २, काछा मिथुन ३, डाहा कर्क ४, माटा सिंह ५, पाठा कन्या ६, राता तुला ७, नोया वृश्चिक ८, भाधा धन ९, खागा मकर १०, गोसा कुंभ ११, दोचा मीन १२।

द्वादशभाव

तनुर्धनं सहजं सुहृत्पुत्रशत्रुकलत्रकाः।
मृतिश्च धर्मकर्मायव्ययो द्वादश राशयः॥ १॥

१ तनु, २ धन, ३ सहज, ४ सुहृत्, ५ पुत्र, ६ शत्रु, ७ कलत्र, ८ मृत्यु, ९ धर्म, १० कर्म, ११ आय और १२ व्यय ये बारह राशियों के स्थानी के नाम हैं।

द्वादशभाव चक्र

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तनु	धन	सहज	सुहृत्	पुत्र	शत्रु	स्त्री	मृत्यु	धर्म	कर्म	आय	व्यय

द्वादश राशियाँ

सप्तविंशतिभानां च नवभिर्नवभिः पदैः ।
अश्विनीप्रमुखानां च मेषाद्या राशयः स्मृताः ॥ २ ॥

अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों में प्रत्येक नक्षत्र में चार-चार चरण होते हैं, नब-नब चरणों की मेषादि बारह राशियाँ होती हैं ।

अश्विनी-भरणी-कृत्तिका-पादं मेषः १ । कृत्तिकायास्त्रयः पादा रोहिणीमृगशिरार्द्धं वृषभः २ । मृगशिरार्द्धमार्द्रापुनर्वसुपादत्रयं मिथुनः ३ । पुनर्वसुपादमेक पुष्याश्लेषांतं कर्कः ४ । मघापूर्वाफाल्गुनी उत्तराफाल्गुनी पादमेकं सिंहः ५ । उत्तराफाल्गुन्यास्त्रयः पादा हस्तचित्रार्द्धं कन्या ६ । चित्रार्द्धं स्वाती विशाखायाः पादत्रयं तुला ७ । विशाखायाः पादमेकमनुराधा ज्येष्ठान्तं च वृश्चिकः ८ । मूलं च पूर्वाषाढोत्तराषाढापादमेकं धनुः ९ । उत्तरायास्त्रयः पादा अभिजिच्छ्रवणधनिष्ठार्द्धमकरः १० । धनिष्ठार्द्धं शतभिषापूर्वाभाद्रपदापादास्त्रयः कुम्भः ११ । पूर्वाभाद्रपदापादमेकमुत्तराभाद्रपदारेवत्यन्तं च मीनः १२ ।

ग्रहों की दृष्टि

तृतीये दशमे पंच नवपञ्चमयोर्दश ।
दशपञ्चाष्टमे तुर्ये सप्तमे विंशतिस्तथा ॥ ३ ॥

विश्वास्तु ग्रहदृष्टीनामेषु स्थानेषु उच्यते ।
पञ्चविंशोपकं प्रोक्तं पादमेकं क्रमोच्यते ।
आयव्यये धने षष्ठे लग्ने खेटो न दृश्यते ॥ ४ ॥

अपने स्थान से तीसरे और दशवें पाँच विश्वा ग्रहों की दृष्टि (१ पाद दृष्टि) होती है। नवें और पाँचवें दस विश्वा (२ पाद दृष्टि) होती है । आठवें और चौथे पन्द्रह विश्वा (३ पाद दृष्टि) होती है। सातवें बीस विश्वा (पूर्ण दृष्टि) होती है । ग्यारहवें, बारहवें, दूसरे, छठे और लग्न में ग्रह की दृष्टि नहीं होती ।

तृतीये दशमे मन्दो नवमे पञ्चमे गुरुः ।
विंशतेर्वीक्ष्यते विश्वाश्चतुर्थे चाष्टमे कुजः ॥ ५ ॥

तीसरे और दसवें शनि, नवें और पाँचवें बृहस्पति, चौथे और आठवें मंगल बीस विश्वा दृष्टि से देखता है अर्थात् इन स्थानों में इन ग्रहों की पूर्ण दृष्टि होती है ।

रविवारेण संयुक्ता यदा स्यान्माघज्येष्ठयोः ।
अमावास्या तदा पृथ्वी रुण्डमुण्डा च जायते ॥६॥

जब माघ और ज्येष्ठ की अमावस्या को रविवार होता है तब पृथ्वी रुण्ड-मुण्डों से युक्त हो जाती है ।

दिनमान का आनयन

अयनाख्रिगुणा मासा एकपञ्चाशतो युताः ।
दलिता घटिका ज्ञेयाः पलास्त्रैगुण्यवासराः ॥ ७ ॥

मकर की अयन से वर्तमान दिन तक महीने गिनकर उनको तिगुना करे और उसमें ५१ और जोड़े फिर उसको आधा करने से दिनमान की घड़ी होती हैं। महीनों के अतिरिक्त जितने दिन हों उनको तिगुना करने से पल होते हैं। इसी प्रकार कर्क के अयन से गिनने पर रात्रि होती है। क्योंकि उत्तरायण में दिन बढ़ते हैं और दक्षिणायन में रात्रि बढ़ती है।

तेरह दिन के पक्ष का फल

एकपक्षे यदा यान्ति तिथयश्च त्रयोदश ।
त्रयस्तत्र क्षयं यान्ति वाजिनो मनुजा गजाः ॥८॥

जब एक पक्ष में १३ तिथियाँ होती हैं तब घोड़े, मनुष्य और हाथी इन तीनों का नाश होता है।

आहुति का विचार

सूर्ययुक्ताच्च नक्षत्राद्दिनभं च त्रयं त्रयम् ।
आदित्यश्च बुधः शुक्रः शनिश्चन्द्रः कुजस्तथा ॥९॥

जीवो राहुश्च केतुश्च होमे क्रूरा न शोभनाः ।
आदित्ये तु भवेच्छोको बुधे संपत्तिरुत्तमा ॥१०॥
शुक्रे चैव धनप्राप्तिः शनौ पीडा च जायते ।
चन्द्रे भवति लाभश्च भौमे च बन्धुबन्धनम् ॥११॥
गुरौ परमकल्याणं राहौ हानिश्च सर्वदा ।
केतौ च प्राणसंदेहो वह्निचक्रमुदाहृतम् ॥१२॥

जिस नक्षत्र पर सूर्य हो उससे वर्तमान दिन के नक्षत्र तक गिने। प्रथम ३ नक्षत्र सूर्य के, ३ बुध के, ३ शुक्र के, ३ शनि के, ३ चन्द्र के, ३ मंगल के, ३ बृहस्पति के, ३ राहु के और ३ केतु के होते हैं। होम में क्रूरग्रह के नक्षत्र शुभ नहीं होते। सूर्य के नक्षत्रों में होम करने से शोक, बुध के नक्षत्रों में होम करने से उत्तम संपत्ति, शुक्र के नक्षत्रों में धन की प्राप्ति, शनि के नक्षत्रों में पीड़ा, चन्द्र के नक्षत्रों में लाभ, मंगल के नक्षत्रों में बन्धु का बन्धन, बृहस्पति के नक्षत्रों में कल्याण, राहु के नक्षत्रों में सदा हानि और केतु के ३ नक्षत्रों में होम करने से प्राणों का सन्देह होता है। यह अग्निचक्र है।

अग्निवास का ज्ञान

सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता
शेषे गुणेऽभ्रे भुवि वह्निवासः ।

सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे
प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च ॥ १३ ॥

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से गिनकर जितनी तिथि हों उनमें एक और जोड़े और उसमें वार की संख्या मिलाकर वार का भाग दे। यदि तीन या शून्य बचें तो अग्नि का वास भूमि में होता है। यह होम में सुखदायक होता है। यदि एक शेष बचे तो अग्नि का बास स्वर्ग में रहता है जो प्राण का नाशक है। दो शेष बचें तो अग्नि का बास पाताल में रहता है जो धन का नाशक है।

साठ संवत्सरों के नाम

प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः।
अंगिराः श्रीमुखोभावो युवा धाता तथेश्वरः ॥१४॥
बहुधान्यः प्रमाथी च विक्रमो वृषभस्तथा।
चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवो व्ययः ॥१५॥
ब्रह्मविंशतिरित्येका सृष्टिरत्र प्रजायते।
सर्वजित्सर्वधारी च विरोधी विकृतिस्तथा ॥१६॥
खरो नन्दननामा च विजयश्च जयोऽपरः।
मन्मथो दुर्मुखश्चैव हेमलम्बिविलम्बकौ ॥१७॥

विकारी शार्वरी चाथ प्लवङ्गः शुभकृत्तथा।
शोभनश्च तथा क्रोधी विश्वावसुस्तथापरः ॥ १८ ॥
पराभवाख्यो ह्यपरो विष्णोरित्येकविंशतिः।
प्लवङ्गः कीलकः सौम्यस्तथासाधारणोऽपरः ॥१९॥
विरोधकृत्समाख्यातः परिधावी प्रमोदकृत्।
आनन्दो राक्षसश्चाथ नलश्च पिङ्गलस्तथा ॥ २० ॥
कालः सिद्धार्थिरौद्रौ च दुर्मतिर्दुन्दुभिस्तथा।
अपरे रुधिरोद्गारी रक्ताक्षी क्रोधनस्तथा ॥ २१ ॥
क्षयकृत्परतश्चान्यो रुद्रस्यापि तु विंशतिः।
वत्सरा षष्टिराख्याता नामतुल्यफलप्रदाः ॥ २२ ॥

१ प्रभव, २ विभव, ३ शुक्ल, ४ प्रमोद, ५ प्रजापति, ६ अंगिरा, ७ श्रीमुख, ८ भाव, ९ युवा, १० धाता, ११ ईश्वर, १२ बहुधान्य, १३ प्रमाथी, १४ विक्रम, १५ वृषभ, १६ चित्रभानु, १७ सुभानु, १८ तारण, १९ पार्थिव और २० व्यय। यह ब्रह्मा की विंशति है। इसमें सृष्टि पैदा होती है। १ सर्वजित्, २ सर्वधारी, ३ विरोधी, ४ विकृति, ५ खर, ६ नन्दन, ७ विजय, ८ जय, ९ मन्मथ, १० दुर्मुख, ११ हेमलम्बी, १२ विलम्बक, १३ विकारी, १४ शर्वरी, १५ प्लवङ्ग, १६ शुभकृत्, १७ शोभन, १८ क्रोधी, १९ विश्वावसु,

और २० पराभव यह विष्णु की विंशति हैं। १ प्लवङ्ग, २ कीलक, ३ सौम्य, ४ साधारण, ५ विरोधी, ६ परिधावी, ७ प्रमादी, ८ आनन्द, ९ राक्षस, १० नल, ११ पिंगल, १२ काल, १३ सिद्धार्थ, १४ रौद्र, १५ दुर्मति, १६ दुन्दुभि, १७ रुधिरोद्गारी, १८ रक्ताक्षी, १९ क्रोधन और २० क्षय। यह रुद्र की विंशति है। यह ६० संवत्सर हैं। नामतुल्य फल देने वाले हैं।

राशियों के स्वामी

मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः ।
बुधः कन्यामिथुनयोः पतिः कर्कस्य चन्द्रमाः ॥२३॥
स्वामीज्यो मीनधनुषोः शनिर्मकरकुम्भयोः ।
सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कथितो गणकोत्तमैः ॥
कन्या राहुगृहं प्रोक्तं केतोश्च मिथुनं स्मृतम् ॥२४॥

मेष और वृश्चिक का स्वामी मंगल है। वृष और तुला का स्वामी शुक्र है। कन्या और मिथुन का स्वामी बुध है। कर्क का स्वामी चन्द्रमा है। मीन और धन का स्वामी बृहस्पति है। मकर और कुम्भ का स्वामी शनि है। सिंह का स्वामी सूर्य है। यह ज्योतिषियों ने कहा है। कन्या राहु का घर है और मिथुन केतु का घर है।

नक्षत्रानयन

कार्त्तिकाद्द्विगुणामासा गताभिस्तिथिभिर्युताः ।
सप्तविंशतिभिर्न्यूना दिनताराैकसंयुता ॥ २५ ॥

कार्त्तिक से लेकर जितने महीने बीते हों उनको दुगुना करे और उसमें गत तिथियों को जोड़कर २७ का भाग देने से जो बचे उसे अश्विनी से गिनकर नक्षत्र जाने।

राहोर्नीचं धनुश्चैव केतोस्तस्माच्च सप्तमम् ॥ २६ ॥

राहु धन का नीच है। इससे सातवाँ केतु नीच है। अर्थात् मिथुन का केतु नीच हैं।

अग्रिम वर्ष की संक्रान्ति के वारादि निकालना

वारे रूपं तिथौ रुद्रा घट्यां पञ्चदशैव च ।
एकत्रिंशत्पले दद्यात्सूर्यसंक्रमणं भवेत् ॥ २७ ॥

संक्रान्ति के वार में १ जोड़ने से, तिथि में ११ जोड़ने से, घड़ियों में १५ जोड़ने से, पलों में ३१ जोड़ने से अग्रिम वर्ष की संक्रान्ति के वार, तिथि आदि होते हैं।

शुक्र उदय की दिन संख्या

सार्धाष्टमासे पूर्वस्मिन्नुदितो दृश्यते भृगुः ।
सार्धमासद्वयं सूर्यमण्डले च ततो वसेत् ॥ २८ ॥

उदितः पश्चिमे भागे नवमासं च वीक्ष्यते ।
दशाहं सूर्यमध्ये तु ततश्चास्तमितो भवेत् ॥ २६ ॥
एकग्रामे पुरे वापि दुर्भिक्षे राजविग्रहे ।
तीर्थयात्राविवाहादौ शुक्रदोषो न विद्यते ॥ ३० ॥

साढ़े आठ महीने शुक्र का उदय पूर्व में होता है। फिर ढाई महीने शुक्र सूर्य के साथ रहता है। अर्थात् पूर्व में ढाई महीने अस्त रहता है। जब पश्चिम में शुक्र का उदय होता है तो नव महीने दिखाई देता है, फिर दस दिन सूर्य के साथ अस्त रहता है। एक गाँव और एक नगर की यात्रा में, दुर्भिक्ष में, राजाओं की लड़ाई में, तीर्थयात्रा में और विवाह में शुक्र का सम्मुखादि दोष नहीं होता।

नक्षत्रप्रवेश से वर्षाज्ञान

दशार्द्राद्याः स्त्रियस्तारा विशाखाद्या नपुंसकाः ।
तिस्रस्ततश्च मूलाद्याः पुरुषाश्च चतुर्दश ॥ ३१ ॥
स्त्रीपुंसयोर्महावृष्टिः स्त्रीनपुंसकयोः क्वचित् ।
स्त्रीस्त्रियोः शीतलच्छाया योगः पुरुषयोर्नच ॥३२॥

आर्द्रा आदि दस नक्षत्रों की स्त्री संज्ञा है। विशाखा आदि ३ नक्षत्रों की नपुंसक संज्ञा है। मूल आदि १४

नक्षत्रों की पुरुष संज्ञा है। स्त्री-पुरुष नक्षत्रों के योग में महावृष्टि होती है। स्त्री-नपुंसक में कहीं-कहीं वर्षा होती है। स्त्री-स्त्री योग में शीतल छाया होती है और पुरुष-पुरुष नक्षत्रों के योग में वर्षा नहीं होती।

अन्य वृष्टियोग

उदयास्तगतः शुक्रो बुधश्च वृष्टिकारकः ।
जलराशिस्थिते चन्द्रे पक्षान्ते संक्रमे तथा ॥ ३३ ॥
बुधशुक्रौ समीपस्थौ करोत्येकार्णवां महीम् ।
तयोरन्तर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत् ॥ ३४ ॥
चलत्यङ्गारके वृष्टिस्त्रिधा वृष्टिः शनैश्चरे ।
वारिपूर्णां महीं कृत्वा पश्चात्संचरते गुरुः ॥ ३५ ॥
भानोरग्रे महीपुत्रो जलशोषः प्रजायते ।
भानोः पश्चाद्धरासूनुर्वृष्टिर्भवति भूयसी ॥ ३६ ॥

शुक्र और बुध के उदय तथा अस्त में वर्षा होती है। जल राशि में चन्द्रमा के होने से तथा पक्ष के अन्त में संक्रान्ति होने से वर्षा होती है। बुध और शुक्र समीप में हों तो पृथ्वी जल से पूर्ण होती है। यदि बुध और शुक्र के बीच में सूर्य हो तो समुद्र को भी सुखा देता है। मंगल के

चलने से वर्षा होती है और शनि के चलने से अथवा उदय या अस्त होने से वर्षा होती है। यदि इसके पीछे बृहस्पति चले तो पृथ्वी जल से भर जाती है। सूर्य के आगे मंगल हो तो जल सूख जाता है और सूर्य के पीछे मंगल हो तो बहुत वर्षा होती है।

गृहद्वार का ज्ञान

कर्के कुम्भे च सिंहे च मकरे च दिवाकरः।
पूर्वायां पश्चिमे वापि द्वारं कुर्याच्च वेश्मनः ॥३७॥
मेषे वृषे वृश्चिके च तुले चापि यदा रविः।
गृहद्वारं तदा कुर्यादुत्तरं वापि दक्षिणम् ॥३८॥
धनुर्मिथुनकन्यायां मीने च यदि भानुमान्।
न कर्तव्यं तदा गेहं कृते दुःखमवाप्नुयात् ॥३९॥

कर्क, कुम्भ, सिंह और मकर के सूर्य हों तो पूर्व या पश्चिम में घर का द्वार करना चाहिए। मेष, वृष, वृश्चिक और तुला के सूर्य में उत्तर या दक्षिण में घर का द्वार करना चाहिए। धनु, मिथुन, कन्या और मीन के सूर्य में घर का द्वार न करना चाहिए। क्योंकि इनमें द्वार करने से दुःख मिलता है।

ग्रहणद्वयफल

यद्यैकमासे ग्रहणं जायते शशिसूर्ययोः।
शस्त्रकोपैः क्षयं यान्ति तदा भीतिः परस्परम् ॥४०॥

जब एक महीने में चन्द्रमा और सूर्य दोनों का ग्रहण होता है, तब परस्पर युद्ध से मनुष्यों का नाश होता है और परस्पर भय होता है।

ग्रस्तोदितौ च ग्रस्तास्तौ धान्यभूपालनाशकौ।
सर्वग्रस्तौ चन्द्रसूर्यौ दुर्भिक्षमरणप्रदौ ॥ ४१ ॥

यदि चन्द्रमा या सूर्य ग्रसित उदय हों या ग्रसित अस्त हों तो अन्न और राजा का नाश करते हैं। यदि चन्द्रमा या सूर्य सम्पूर्ण ग्रसित हो जावें तो दुर्भिक्ष और महामारी हो।

राशिपरत्व से देशविशेष में फल

उपरागो यदा मेषे पीड्यन्ते च तदा जनाः।
काम्बोजाश्चकिराताश्चपाञ्चालाश्चकलिङ्गकाः ॥४२॥
वृषे च ग्रहणे पीडा पशवः पथिका जनाः।
महान्तो मनुजाश्चैव ते पीड्यन्ते च सर्वदा ॥४३॥

जब मेष राशि पर ग्रहण होता है तब काम्बोज, किरात, पांचाल और कलिङ्ग देश के मनुष्यों को पीड़ा होती है। एवं वृषराशि पर जब ग्रहण होता है तब पशुओं, यात्रियों तथा बड़े आदमियों को पीड़ा होती है।

रविचन्द्रमसौ ग्रस्तौ मिथुने च वराङ्गनाः।
पीड्यन्ते बाह्लिका मत्स्या यमुनातटवासिनः ॥४४॥
कर्कटे ग्रहणे पीडा मल्लादीनां च जायते।
अन्तरं सर्वराज्ञां च तदा मत्स्यनिवासिनाम् ॥४५॥

जब मिथुन राशि पर चन्द्रमा या सूर्य का ग्रहण होता है तब उत्तम स्त्रियों को तथा बाह्लीक देश, मत्स्य देश और यमुनातट निवासी मनुष्यों को पीड़ा होती है। कर्क राशि पर ग्रहण होने से पहलवानों को अन्तरवेद और मत्स्यदेश के निवासियों को और सब राजाओं को पीड़ा होती है।

सिंहे च ग्रहणे पीडा सर्वेषां वनवासिनाम्।
नृपाणां भूपतुल्यानां मनुजानां च जायते ॥ ४६ ॥
कन्यायां ग्रहणे पीडा त्रिपुराणां च शालिनाम्।
कवीनां लेखकानां च जायते पीडनं तथा ॥ ४७ ॥

सिंह राशि पर ग्रहण होने से सब वनवासियों, राजाओं तथा राजा के तुल्य मनुष्यों को पीड़ा होती है। कन्या राशि पर ग्रहण होने से त्रिपुरनिवासियों, कवियों और लेखकों को पीड़ा होती है और धान्य का नाश होता है।

तुलायामुपरागे च पीडनं बककाकयोः।
कौङ्कणस्थाः पराश्चैव पीड्यन्ते साधवश्च वै ॥४८॥
वृश्चिके ग्रहणे पीडा सर्पजातेश्च जायते।
औदुम्बरस्य भद्रस्य चोलयौधेयकस्य च ॥४९॥

तुला राशि पर ग्रहण होने से बगुलों और कौवों को, कौंकण देश में बसनेवालों और साधुओं को पीड़ा होती है। वृश्चिक राशि पर ग्रहण होने से साँपों को और औदुम्बर, भद्र, चोल और यौधेय देश के निवासियों को पीड़ा होती है।

यदोपरागश्चापे च तदा मत्स्याश्च वाजिनः।
विदेहमत्स्यपाञ्चालाः पीड्यन्ते वैद्यकोविदौ ॥५०॥
मकरे ग्रहणे पीडा नीचानां मन्त्रवादिनाम्।
स्थावराणां जंगमानां चित्रकूटस्थसंक्षयः ॥५१॥

जब धनु राशि पर ग्रहण होता है तब मगर-मछली, घोड़े तथा मैथिल, मत्स्यदेशीय, पंजाबी, वैद्य और पण्डितों को

पीड़ा होती है। और जब मकर राशि पर ग्रहण होता है तब नीच लोगों, मन्त्रवादियों, स्थावरों, जंगमों तथा चित्रकूटस्थों का विनाश होता है।

कुम्भे चैवोपरागे च पश्चिमस्थैस्तथार्बुदैः।
तस्करै रोगिणां मृत्युः पीड्यन्ते बहुधा जनाः ॥५२॥
मीनोपरागे पीड्यन्ते जलद्रव्याणि सागराः।
जलोपजीविनो लोका ये च यत्र प्रतिष्ठिताः ॥५३॥

कुंभ राशि पर ग्रहण होने पर पश्चिमी देशों से, अर्बुद देश से तथा चोरों से मनुष्यों को बहुत पीड़ा होती है। और रोगियों की मृत्यु होती है। इसी प्रकार मीनराशि पर ग्रहण होने से जलीय वस्तुओं और समुद्रीय जीवों एवं जल से जीविका करनेवालों तथा जल के समीप रहनेवालों को पीड़ा होती है।

परिवेष का फल

ग्रहकृत्यांसुवृष्टिश्च नीहारश्च भयंकरः।
विद्युत्पातोऽग्निदाहोऽथ परिवेषस्तु रोगकृत् ॥५४॥

ग्रहकृत धूलि की वर्षा (अर्थात् बिना पवन धूलि बरसने लगे) होना तथा भयंकर गर्द-गुबार छा जाना, दिखाई न पड़ना, बिजली गिरना, दिशाओं में अग्निदाह होना तथा सूर्य के चारों ओर मण्डल होना ये सब रोगकारक हैं।

दिग्दाहफल

दिग्दाहोऽग्निभयं कुर्यान्निर्घातो नृपभीतिदः।
झंझावायुश्चण्डशब्दश्चौरभीतिप्रदायकौ ॥५५॥

दिग्दाह (दिशाओं का रक्त पीतवर्ण होने) से अग्नि का भय होता है। बिना वर्षा के आकाश में शब्द होने से राजभय होता है। भयंकर वेग से प्रचण्ड वायु चले तो चोरों से भय होता है।

ग्रहयुद्धफल

ग्रहयुद्धे राजयुद्धं केतुदृष्टे तथैव च।
ग्रहणान्ते महावृष्टिः सर्वदोषविनाशिनी ॥ ५६ ॥

ग्रहयुद्ध होने से तथा केतु के उदय होने से राजाओं में युद्ध होता है। ग्रहण के पीछे अच्छी वर्षा होने से ग्रहण के सब दोष शान्त हो जाते हैं।

नक्षत्रगत केतु के उदय का फल

अश्विन्यामुदिते केतौ हन्यात्स लङ्कपालकम्।
भरण्यां च किरातेशं कृत्तिकायां कलिङ्गकम् ॥५७॥
रोहिण्यां शूरसेनेशं मृगे काशीनराधिपम्।
आर्द्रायां जलजाधीशं भास्करेशं पुनर्वसौ ॥५८॥

अश्विनी नक्षत्र में केतु का उदय हो तो लङ्का के राजा को, भरणी में केतु का उदय हो तो किरात देश के राजा को, कृत्तिका में केतु का उदय हो तो कलिङ्ग देश के राजा को, रोहिणी में केतु का उदय हो तो शूरसेन देश के राजा को और मृगशिरा में केतु का उदय हो तो काशीनरेश को, आर्द्रा में केतु उदय हो तो पद्मक देश के राजा को और पुनर्वसु में केतु का उदय हो तो भास्कर देश के राजा को पीड़ा होती है।

पुष्ये च मगधाधीशं सार्पस्यः काशिकाधिपम्।
मघायां वंगनाथं च पूर्वायां पाण्डुनायकम् ॥५९॥
उज्जयिन्या नृपं हन्ति उत्तराफाल्गुनीगतः।
गण्डकाधिपतिं हस्ते चित्रायां कुरुभूभुजाम् ॥६०॥

पुष्य में केतु का उदय हो तो मगध-नरेश को, अश्लेषा में काशीराज को, मघा में बङ्गाल के राजा को, पूर्वाफाल्गुनी में पाण्डुदेश के राजा को, उत्तराफाल्गुनी में उज्जयिनी के राजा को, हस्त में गण्डकनरेश को एवं चित्रा में केतूदय हो तो कुरुदेश के राजा को पीड़ा होती है।

स्वात्यां काश्मीरकाम्बोजभूपतीनां विनाशकः।
इक्ष्वाकुकुरुदेशानां विशाखायां विनाशकः ॥६१॥

मैत्रेयोऽखिलभूनाथं सार्वभौमं तथेन्द्रकम्।
आन्ध्रमद्रकनाथं च मूलस्थो हन्तिनिश्चितम् ॥६२॥

स्वाती में केतूदय हो तो काश्मीर और काम्बोज के राजा का विनाश होता है। विशाखा में इक्ष्वाकु और कुरुदेशीय राजा का, अनुराधा में चक्रवर्ती राजा का और ज्येष्ठा में सार्वभौम राजा का तथा मूल में केतु का उदय हो तो आन्ध्र देश और मद्रक देश के राजा का विनाश होता है।

पूर्वाषाढे काशिराजमुत्तराषाढके तथा।
पौण्ड्रेशशैववैदेहान् श्रवणे कैकयेश्वरम् ॥६३॥
वसौ पञ्चनदाधीशं वारुणे सिंहलेश्वरम्।
पूर्वाभाद्रपदे वंगं नैमिषेशं तथोत्तरे ॥ ६४ ॥

पूर्वाषाढ़ में केतु का उदय काशिराज को, उत्तराषाढ़ में पौण्ड्रदेश, शैवदेश और मैथिलदेश के राजा को तथा श्रवण में केकयदेश के राजा को तथा धनिष्ठा में पंजाब के राजा को, शतभिषा में सिंहलद्वीप के राजा को, पूर्वाभाद्रपद में बंगालदेश के राजा को और उत्तराभाद्रपद में केतु का उदय नैमिषारण्यदेश के राजा को पीड़ित करता है।

रेवत्यामुदिते केतौ किराताधिपतेर्वधः।
धूम्राकारः सपुच्छश्च केतुर्विश्वस्य पीडकः ॥६५॥

रेवती नक्षत्र में केतु का उदय हो तो किरातदेश के राजा का नाश करता है। पूँछसहित धूमकेतु का उदय हो तो सम्पूर्ण संसार की पीड़ा होती है।

भानुभौमार्किवारेषु कार्त्तिकेन्दुक्षयो भवेत्।
आयुष्मान्स्वातिसंयुक्तो नृपनाशः पशुक्षयः ॥६६॥

कार्त्तिक की अमावस्या को रविवार, मंगल या शनिवार हो और आयुष्मान् योग तथा स्वातिनक्षत्र हो तो राजाओं का तथा पशुओं का नाश हो।

राशियों की निशाबलादि संज्ञा

धनुर्नक्रं च मेषाद्याश्चत्वारस्तु निशाचराः।
ते विना मिथुनं पञ्च ज्ञेयाः पृष्ठोदया बुधैः ॥६७॥
शीर्षोदयाश्च चत्वारः सिंहाद्याः कुम्भ एव च।
दिवाबलास्तु मीनस्तु बली रात्रौ तथा दिने ॥६८॥

धनु, मकर, मेष, वृष, मिथुन और कर्क ये राशियाँ रात्रि में बलवती है। तथा मिथुनरहित ये पाँचों पृष्ठोदय हैं। कुम्भ, सिंह, कन्या, तुला और वृश्चिक ये दिन में बली हैं तथा शीर्षोदय हैं। मीन रात्रि में और दिन में भी बलवान् है।

प्रश्नाङ्कफल

तद्दक्षं द्विगुणं कृत्वा रामैर्हीनञ्च कारयेत्।
मुनिभिश्च हरेद्भागं शेषाङ्के लभते फलम् ॥६९॥
चन्द्रे वेदे च दुर्भिक्षं सुभिक्षं युग्मबाणयोः।
रामे रसे च मध्ये च शून्ये शून्यं प्रकीर्तितम् ॥७०॥

पृच्छक जिस लग्न में प्रश्न करे उसकी संख्या को द्विगुण करके ३ घटावे और उसमें ७ का भाग दे। जो शेष अंक बचे उसका फल कहे। १ या ४ बचें तो दुर्भिक्ष, २ या ५ बचें तो सुभिक्ष, ३ या ६ बचें तो मध्यम फल और शून्य बचे तो शून्य फल होता है।

अतिचार और वक्र ग्रह का फल

अतिचारगते सौम्ये क्रूरे वक्रत्वमागते।
हाहाभूतं जगत्सर्वं रुण्डमुण्डं च जायते ॥७१॥

सौम्य ग्रह अतिचारी हों और क्रूर ग्रह वक्री हों तो सम्पूर्ण जगत् में हाहाकार मच जाय और पृथ्वी रुण्ड-मुण्डों से पूर्ण हो जाय।

दीक्षाग्रहण का समय

मन्त्रस्वीकरणं चैत्रे बहुदुःखफलप्रदम्।
वैशाखे रत्नलाभश्च ज्येष्ठे च मरणं ध्रुवम् ॥७२॥

आषाढे बन्धुनाशः स्याच्छ्रावणे तु शुभावहः ।
प्रजाहानिर्भाद्रपदे सर्वत्र सुखमाश्विने ॥ ७३ ॥
कार्त्तिके धनवृद्धिः स्यान्मार्गशीर्षे शुभप्रदम् ।
पौषेतज्ज्ञानहानिः स्यान्माघे मेधाविवर्धनम् ॥७४॥
फाल्गुने सुखसौभाग्यं सर्वत्र परिकीर्तितम् ।
दीक्षाकर्मफलं मासेष्वित्येवं च शुभाशुभम् ॥७५॥

चैत्र में मन्त्र की दीक्षा लेने से बहुत दुःख होता है। वैशाख में रत्नों का लाभ, ज्येष्ठ में मृत्यु, आषाढ़ में बन्धुओं का नाश, श्रावण में शुभ, भाद्रपद में प्रजा को हानि, आश्विन में सुख, कार्त्तिक में धन की वृद्धि, मार्गशीर्ष में शुभ, पौष में ज्ञान की हानि, माघ में बुद्धि की वृद्धि और फाल्गुन में मन्त्र की दीक्षा लेने से सर्वत्र सुखसौभाग्य होता है। इस प्रकार प्रत्येक महीने में दीक्षा लेने का शुभाशुभ फल विचारना चाहिए।

ग्रहों के राशिभोग की अवधि

मासं शुक्रबुधादित्याश्चन्द्रः पाददिनद्वयम् ।
भौमस्त्रिपक्षं जीवोऽब्दं सार्धवर्षद्वयं शनिः ।
राहुः केतुः सदा भुङ्क्ते सार्धमेकं तु वत्सरम् ॥७६॥

शुक्र, बुध और सूर्य एक राशि पर एक महीना रहते हैं। चन्द्रमा सवा दो दिन, मंगल डेढ़ महीना, बृहस्पति एक वर्ष, शनि ढाई वर्ष तथा राहु और केतु एक राशि पर डेढ़-डेढ़ वर्ष रहते हैं।

चुल्हीचक्र का विचार

सूर्यर्क्षाद्रसपृष्ठभैः सुखयुतं वेदैः शिरो मृत्युदं ।
बाहौनागसुसौख्यभोगमतुलं गर्भे शरैर्नाशयेत् ।
द्वौ दोर्भुक्तिकरौ कलत्रमरणं ह्यंघ्रौ द्वयं च क्रमा-
च्चुल्लीचक्रविचारणं सुधिषणैः प्रोक्तं हि गर्गादिभिः

इति श्रीकाशीनाथभट्टाचार्यकृतशीघ्रबोधे-
संग्रहे चतुर्थं प्रकरणं समाप्तम् ।

सूर्य के नक्षत्र से, जिस दिन चूल्हा रखना हो उस दिन के नक्षत्र तक, गिने। क्रम से छः नक्षत्र पीठ पर के सुखकारी हैं। चार नक्षत्र शिर पर के मृत्युप्रद हैं, बाहुओं के आठ नक्षत्र अतुल सुख-भोग देते हैं तथा गर्भ के पाँच नक्षत्र नाशकारी हैं। दो नक्षत्र भुजा के भोग देनेवाले हैं। तथा पैरों के दो नक्षत्र स्त्रीनाशक हैं। यह चुल्हीचक्र का विचार गर्ग आदि बुद्धिमानों ने कहा है।

इति श्रीकाशिनाथभट्टाचार्य विरचिते शीघ्रबोधसंग्रहे पटियालाराज्यान्तर्गतबसईग्रामनिवासिखूबचन्दशर्म विरचितायां भाषाटीकायां चतुर्थं प्रकरणं समाप्तम् ।

—:०:—

हमारे अमूल्य प्रकाशन

पुस्तक का नाम	मूल्य
सुख सागर	240/-
योग वशिष्ठ सम्पूर्ण 2 भागों में	475/-
भक्तमाल भाषा अर्थात् भक्तकल्पद्रुम लेखक- श्री प्रताप सिंह	90/-
शिव पुराण भाषा 11 खण्डों में	160/-
भगवद्गीता भाषा सजिल्द	25/-
महाभारत भाषा सचित्र, सजिल्द	180/-
रामायण तृ.कृ. टीका पण्डित लक्ष्मण प्रसाद	
भारतद्वाज सचित्र सजिल्द	146/-
रामायण तृ.कृ. टीका पं0 सूर्य दीन शुक्ल सचित्र, सजिल्द	180/-
विश्राम सागर सटीक, सचित्र, सजिल्द	225/-
नवीन संग्रह	9/-
सत्यनारायण व्रत कथा रेवाखण्डी	9/-
हरितालिका व्रत कथा	3/-
हनुमन्त बावनी	1/-
विवाह पद्धति भाषा टीका	30/-
सुन्दर बिलास	21/-
सुन्दर काण्ड गुटका	3/-
नूतन स्त्री सुबोधिनी	90/-
अष्टावक्र गीता सटीक	66/-
पार्वण श्राद	9/-
दुर्गासप्तशती भाषा टीका सजिल्द	45/-
प्रेम सागर सचित्र सजिल्द	120/-
शतपंच चौपाई	3/-
चित्रकूट माहात्म्य	7/-
चाणक्य नीति दर्पण	15/-
महाभारत सबल सिंह चौहान, दोहा-चौपाई	125/-
मुहूर्तचिन्तामणि सटीक	45/-
नरसिंह पुराण	50/-
व्रज विलास	90/-
विष्णु सहत्रनाम	7/-
आल्हखण्ड सजिल्द, ललिता प्रसाद कृत	120/-
अमृत सागर नागरी सजिल्द	140/-
शीघ्र बोध - भाषा टीका सहित	22/-

मिलने का पता -

तेजकुमार बुक डिपो (प्रा0) लिमिटेड, लखनऊ

पोस्ट बाक्स 85, 1, त्रिलोक नाथ रोड, लखनऊ -1